



कर्नाटक सरकार

समाज विज्ञान
SOCIAL SCIENCE
Textbook

9

नौवीं कक्षा
भाग - II

Hindi Medium
Part - II

Karnataka Text Book Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,
Bengaluru - 560 003.

अनुक्रमणिका



अध्याय. संख्या.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
इतिहास		
17	अहोम राजघराना, मुगल और मराठा	01
18	भक्ति संप्रदाय	20
19	यूरोप - मध्ययुग और आधुनिक युग	28
20	क्रांति और राष्ट्रों के आधिपत्यों का उदय	42
राजनीतिक शास्त्र		
21	निर्वाचन व्यवस्था	54
22	देश की सुरक्षा	64
23	राष्ट्रीय भावैक्य	80
24	अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का एक परिचय	85
समाज शास्त्र		
25	सामाजीकरण तथा पारिवारिक संबंध	91
26	समुदाय	97
भूगोल शास्त्र		
27	कर्नाटक के खनिज संसाधन (संपत्ति)	103
28	कर्नाटक की यातायात (परिवहन) व्यवस्था	107
29	कर्नाटक के कारखाने	114
30	कर्नाटक के प्रमुख पर्यटन केन्द्र	121
अर्थ शास्त्र		
31	धन और ऋण	127
32	श्रम और रोजगार	137
व्यवहार अध्ययन		
33	बाजार प्रबंधन	146

इतिहास

अध्याय 17

अहोम राजघराना, मुगल और मराठा



इस अध्याय में निम्नलिखित विषयों को समझते हैं ।

- अहोम राजघराना तथा उनकी उपलब्धियाँ ।
- मुगल
- साहित्य, कला और वास्तुकला के क्षेत्रों के लिए मुगलों की देन।
- मराठा राज्य का उद्भव तथा शिवाजी के प्रशासन।

अहोम राजघराना :

अहोम मूलतः मंगोल जाति की शान जनजाति का एक गुट था। वे 13 वीं शताब्दी के प्रारंभ में वास्तव में प्रस्तुत मायंमार और थाईलैंड देशों से आकर भारत के वर्तमान असम भाग में बसने लगे। अहोम नाम से ही इस भाग का असम नाम आया है। अहोम वंश के लोगों ने बाहर से आने पर भी बहुत जल्दी भारत की संस्कृति को अपनाकर 1228 में अपने साम्राज्य की स्थापना की।

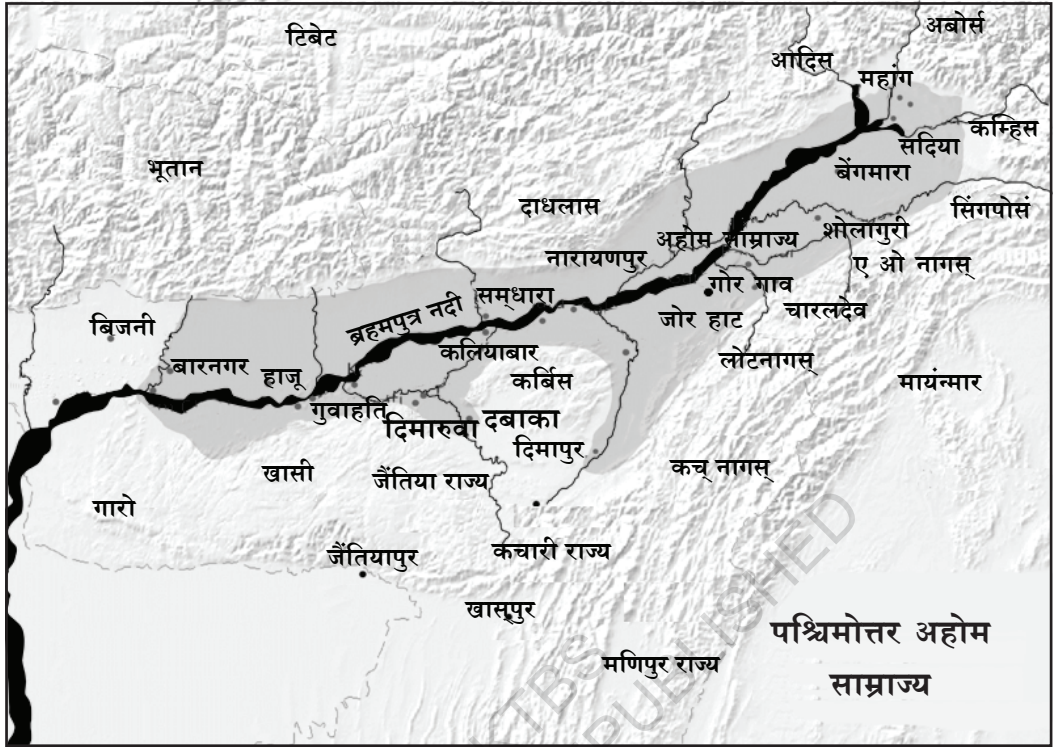
‘सुकपा’ इस वंश का स्थापक था। चिरायडाय इस साम्राज्य की पहली राजधानी थी। उन्होंने खिलजियों, दिल्ली के सुल्तानों, लोदियों और बंगाल के सुल्तानों के हमलों को विफल कर दिया। मुगल सम्राट औरंगजेब ने अहोम साम्राज्य को जीतने के लिए घात लगाई, उसकी सेना ने पहले बंगाल को घेर कर जीत लिया फिर ब्रह्मपुत्र नदी के साथ-साथ आगे बढ़ी और अहोम साम्राज्य तक पहुँच गई। इस भयानक युद्ध के कारण अहोम साम्राज्य को अपने बहुत बड़े भूभाग को खोना पड़ा। अहोम के राजा जयध्वज सिंह को अत्यंत शर्मनाक समझौता करना पड़ा।



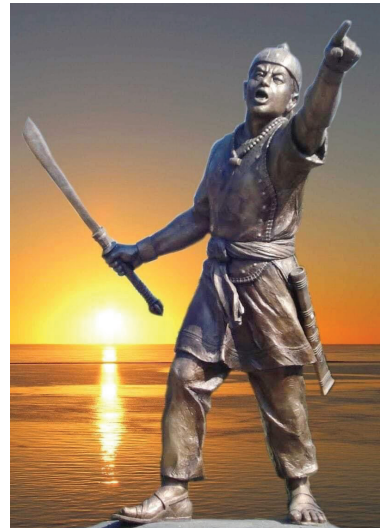
अहोम राजवंश का प्रतीक



सुकपा



जयध्वज की मृत्यु के बाद चक्रध्वज सिंह असम राज्य का राजा बना। लचित नामक व्यक्ति उसका मुख्य सेनानायक रूप में चुना। इस पद का नाम बोर्फुकन था। तब से लचित, 'लचित बोर्फुकन' बना। उसने न केवल अहोम सेना को मज़बूत किया बल्कि हथियारों को भी आधुनिकीकरण किया और मुगलों को भगाने के लिए सबसे पहले इटकुली के किले पर कब्जा कर लिया। उसने किले को घेर लिया और मुगल अधिकारियों और सैनिकों को भगा दिया। इस प्रकार गुवाहाटी अहोम साम्राज्य को वापस मिल गया ।



वीर योद्धा लचित

अलबोय युद्ध :

उसके बाद अलबोय मैदान में मुगल और अहोम सेना के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में अहोम सेना को विजय तो प्राप्त हुई लेकिन उन्हें अपने बहुत से सैनिक खोने पड़े ।

सरायघाट संग्राम :

1670 में चक्रध्वज सिंह की मृत्यु के बाद उदयादित्य सिंह ने अधिकार प्राप्त किया। इसे भी मुगल आक्रमण का सामना करना पड़ा। 1671 ई में सरायघाट में मुगल तथा अहोम सेना का आमना-सामना हुआ। ब्रह्मपुत्र नदी पर हुए इस नौसैनिक युद्ध में अहोम सेना प्रबल मुगल सेना पर विजय प्राप्त की। जिस वर्ष इस युद्ध समाप्त हुई, उसी वर्ष अस्वस्थता के कारण ललित की मृत्यु हुई ।

अंतिम अहोम और मुगल युद्ध :

अहोम-मुगलों का आखरी युद्ध 1682 ई में हुआ था। तब गदाधर सिंह राजा था। मुगल सेना को अत्यंत सफलतापूर्वक हराकर, भगाने वाला गदाधर सिंह, मुगलों के अधीन के समस्त अहोम प्रान्तों को अपने वश में करने के साथ-साथ कामरूप को भी जीता और इसके अलावा मुगलों को ब्रह्मपुत्र के समस्त भूभागों से भगाया। मानस नदी तक अपना साम्राज्य को फैलाया ।

अहोम राजाओं ने कुछ छः स्थानों को अपनी राजधानी के रूप में समय-समय पर समृद्ध बनाया। भारत के पूर्वोत्तर भारत को एकत्रित करके प्रशासन करना इनकी उपलब्धि है। मुगलों को अहोम राजाओं ने दशकों तक प्रबल प्रतिरोध देते हुए 17 छोटे-बड़े युद्धों में हराया। 1228 ई में स्थापित इस साम्राज्य का 598 वर्षों तक दीर्घ प्रशासन किया। 1826 में यह साम्राज्य का अंत हुआ ।

भारत में मुगलों का प्रशासन (सा.श. 1526-1707 ई.)

बाबर :

बाबर ने भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की। वह मूलतः तुर्किस्तान का निवासी था। इसके पिता उमर शेख मिर्जा था। अफगानिस्तान के छोटे से राज्य 'परगना' का बादशाह था । उसके पिता की मृत्यु के बाद बाबर अपनी ग्यारह वर्ष की उम्र में 'परगना' की राजगद्दी पर बैठा।

आपको ज्ञात रहे :

बाबरनामा (तुझक-ई-बाबरी)

बाबर ने अपनी आत्मकथा को तुर्की भाषा में लिखा था। इस ग्रंथ में राजनीतिक संगठनाओं के अलावा विविध प्रदेशों के प्राकृतिक स्वरूप सौंदर्य, वहाँ की प्राणी प्रजाति, उद्यान के बारे में वर्णन किया गया है। बाबर कवि तथा उत्तम चित्रकार था। अब्दुर्हीम खान इसको फारसी भाषा में अनुवाद किया।

इसने राज्य को खोकर खानाबदोश का जीवन व्यतीत करना पड़ा। इस संदर्भ में भारत पर आक्रमण करने के लिए उसको प्रेरणा मिलने से पाँच बार भारत पर आक्रमण किया। दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को 1526 में पानीपत युद्ध में हराया। भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की। इसको प्रथम 'पानीपत युद्ध' कहते हैं। दिल्ली इसकी राजधानी थी। इसने अपने चार वर्ष के प्रशासन काल में मेवाड़ के राणा संग्राम सिंह, राजपूत राजा चांदेरिया के 'मेदिनी राय' तथा इब्राहिम लोदी के भाई 'मुहम्मद लोदी' को हराया था। बाबर ने पानीपत, गोघ्रा तथा कण्व, नामक तीन युद्ध में जीतने के द्वारा उत्तर भारत के विशाल भू-भाग पर मुगल साम्राज्य की स्थापना की थी।

हुमायूँ :

मुगल साम्राज्य के दूसरा सुल्तान हुमायूँ था। यह बाबर का जेष्ठ पुत्र था। हुमायूँ की अधिकारावधि में कई कठिन सवालों का सामना करना पड़ा। उनमें से प्रमुख चुनौती अस्थिर और असंगठित साम्राज्य, अफगानों की परेशानी, गुजरात के बहादुर शाह की शुत्रता, भाइयों का असहकार आदि प्रमुख थे। कालिंजर किले, दौरा, जौनपुर, चुनार किले, मांडसर को अपने वश में कर लिया था। शेरशाह से हारने के कारण हुमायूँ को सिंध प्रांत में आश्रय लेना पड़ा। शेरशाह की मृत्यु के बाद पुनः प्रशासन को संभाला।

शेरशाह :

शेरशाह मूलतः अफगानिस्तान के 'सूर' परिवार से था। सूर वंश का स्थापक शेरशाह, इसका वास्तविक नाम फरीद था। इसका बचपन दुख और कठिनता से भरा था। माता पिता के प्रेम तथा वात्सल्य से वंचित होकर, अपने भविष्य के लिए खानाबदोश का जीवन व्यतीत करता था। दक्षिण बिहार के राजा बाहरखान लोहणी की सेवा में था, अकेला ही शेर को मारने के कारण से फरीद को शेरखान नाम की उपाधि मिली। बाबर भारत में प्रशासन करते समय उसकी सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

ज्ञात रहे :

प्रशासन व्यवस्था को नियंत्रण करने के लिए दीवन- इ- इंसा, दीवान -इ- आरिज, दीवान-इ-रसलत, दीवान-इ-वजरत नामक चार प्रमुख विभाग, तथा दीवान-इ- खाजा, बरीद-इ-ममलिक नामक उपविभाग थे।

हुमायूँ को हराकर शेरशाह ने पंजाब, सिंध, मुल्तान, ग्वालियर, माल्वा, रैसिनदुर्ग, मारवाड़ा तथा कालिंजर को अपने वश में कर लिया। इसका साम्राज्य असम, गुजरात और कश्मीर, को छोड़कर समस्त उत्तर भारत में व्याप्त था।

शेरशाह की प्रशासनिक व्यवस्था :

शेरशाह प्रशासनिक व्यवस्था का प्रमुख था। उसके पास एक कुशल मंत्रिमंडल था। राजा ने नागरिक और सैन्य दोनों क्षेत्रों में अपना अधिकार केंद्रित की थी। इसकी सेना में लगभग 25000 पैदल सिपाही, 15000 अश्व तथा 500 हाथी थे। अश्वसेना अत्यंत प्रबल था।

सेना को कई भागों में बांटा गया (विभाजित किया गया) था। उनके नियंत्रण के लिए फौजदारों को नियुक्त किया गया। सेना संगठन, युद्ध सामग्रियों और सैनिकों के अनुशासन, के विषयों में रुचि थी। सेना की यात्रा के समय में किसानों की फसलों पर होने वाली हानियों को सरकार हर्जाना भरती थी। दिल्ली, रोहतास, कनौज और पाट्ना में नये किलो का निर्माण किया।

साम्राज्य की भूमि को उसकी उपजाऊपन के आधार पर उत्तम, मध्यम और बंजर आदि भागों में विभाजित किया गया था। किसान लोग अपने उपजाऊ के पैदावार के एक तिहाई भाग को भू राजस्व के रूप में सरकार को देना था।

शेरशाह निष्पक्षपात न्यायदान के लिए प्रसिद्ध था। इसलिए उसको 'न्याय निष्ठ सुल्तान' के नाम की उपाधि थी। सब अंतिम अपीलें का फैसला खुद बादशाह करते थे। हर बुधवार के साँझ न्याय प्रदान के लिए दरबार चलाता था।

शेरशाह ने 'दाम' और रूपया नामक सिक्कों को जारी की। इसकी चाँदी के रूपये के सिक्कों का वजन 180 रत्ती था। जिसे सभी मुगल शासकों ने जारी रखा था।

जानकारी के लिए

चार प्रमुख राज्य मार्ग

1. सोनारगाँव से आरंभ होकर आगरा, दिल्ली और लाहौर के द्वारा सिंधू नदी के तट तक इस मार्ग को सड़क-इ-अंजम् कहते थे।
2. आगरा से बराहनपुर
3. आगरा से चित्तौड़ की ओर
4. लाहौर से मुल्तान तक के राजमार्ग को दोनों ओर छाया देने वाले पेड़ों को तथा यात्रियों की सहायता के लिए 1700 विश्राम गृह (सराया) बनाया।

अकबर :

मुगल बादशाहों में प्रसिद्ध बादशाह अकबर था। इसका जन्म सिंध प्रांत के अमरकोट में हुआ। हुमायूँ इसके पिता थे। अकबर जब सिंहासन पर बैठे थे, तब उनकी आयु सिर्फ 14 वर्ष था इसलिए उसके संरक्षक बैरमखान ने शाही प्रतिनिधि के रूप में शासन किया। हुमायूँ की मृत्यु के बाद बंगाल के बादशाह मोहम्मद शाह के सेनानायक हेमू ने दिल्ली और आगरा को वश में कर लिया था। इसलिए 1556 में हेमू और मुगलों के बीच पानीपत में भयंकर युद्ध हुआ, जिसे 'द्वितीय पानीपत युद्ध' कहते हैं। इस युद्ध में अकबर को विजय प्राप्त हुआ। इस अवसर पर अकबर की सहायता के लिए उसके राजप्रतिनिधि तथा प्रधानमंत्री बैरम खान थे। अपनी बृहद सेना के बल पर



अकबर

मालवा, जयपुर, गोंडवाना, चित्तौड़, रणथंभौर, कलंजर, गुजरात, बंगाल, राज्यों पर विजय प्राप्त की। हल्दीघाटी युद्ध मध्यकालीन भारत के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। चित्तौड़ का राजा राणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद उसका बेटा राणा प्रताप राजा बना, मेवाड़ का अधिकांश भाग राणा प्रताप सिंह के अधीन में ही रहा। अकबर अपने सेनानायक मानसिंह और असफ खान के नेतृत्व में बलिष्ठ सेना को राणा प्रताप के विरुद्ध लड़ाई के लिए भेजा। दोनों सेना के बीच हल्दीघाटी में युद्ध हुआ। मुगल सेना को इस युद्ध में विजय प्राप्त हुई। कालांतर में बचे हुए राज्य जैसे काश्मीर, सिंध, उड़ीसा, बलूचिस्तान, अहमदनगर, कंधहार आदि अकबर के वश हुए। इस प्रकार अकबर ने पहली बार मध्यकालीन भारत में मुगलों को एक शाही शक्ति के रूप में विकसित होने के लिए एक ठोस नींव डाला।

दीन- ए- इलाही :

अकबर बचपन में ही अपनी माँ, शिक्षकों और सूफियों से प्रभावित होकर, सर्वधर्म के समन्वय नीति को अपनाया। 1582 में 'दीन-ए -इलाही' नामक नये पंथ की स्थापना की। इबादत खाना में हिंदू, जैन, पारसी, इसाई, धर्म के बीच चर्चा के फलस्वरूप इस नये पंथ का उदय हुआ। यह सबके साथ शांति (सल-इ-कुल) जैसे तत्वों पर आधारित था। इस नए पंथ में सब धर्मों के उत्कृष्ट अंश सम्मिलित थे। अब्दुल फजल इस पंथ का वरिष्ठ पुरोहित था।

अकबर का हिंदू दृष्टिकोण :

अकबर ने हिंदुओं के प्रति सहिष्णुता का दृष्टिकोण अपनाया। उसने अपनी राजपूत पत्नियों को महल में ही पूजा की अनुमति दी। इसने हिंदुओं पर से जेसिया नामक कर हटा दिया। अकबर ने हिंदू मंदिरों के निर्माण और मरम्मत में मदद की। उन्होंने हिंदू धर्म ग्रंथों का फारसी में अनुवाद किया। उन्होंने योग्य हिंदुओं को उच्च पद देकर सम्मानित किया। राजा तोडरमल एक प्रसिद्ध वित्त मंत्री थे।



भगवान दास, मानसिंह, तोडरमल और रायसिंह राज्यपाल थे। बारह प्रांतीय वित्त मंत्रियों में से आठ हिंदू थे। अकबर ने अपने दरबार में रक्षाबंधन, दीपावली, शिवरात्रि आदि त्योहार मनाने का आदेश दिया।

अकबर की प्रशासनिक पद्धति :

प्रशासन की सहायता के लिए अकबर अपने राज्य को केंद्र सरकार, प्रांतीय सरकार, परगना के रूप में विभक्त किया था। 'मन्सबदारी पद्धति' अकबर के प्रशासन पद्धति की विशेषता थी। अकबर विशाल साम्राज्य के चक्रवर्ती, सेना का सेनानायक,

ज्ञात रहे :

अकबर के राज्य में कुल पंद्रह सुभे थे। प्रत्येक सुभा में सिपहसालार (राज्यपाल), दीवान बख्शी, सदर, काजी, कोटवाल और वाकिया नवीस शामिल थे। प्रत्येक जिले में फौजदार, अमल गुजार, बतिकची होते थे और परगने का प्रशासन शिकादार, अमिल, पोतदार, कानूंगो देखते थे।

कार्यकारिणी का मुखिया और न्यायांग का वरिष्ठ था। अकबर की सरकार में प्रशासन की सहायता देने के लिए वकील, दीवान, मीरबक्शी तथा मुख्य सदर नामक चार मंत्री थे। साम्राज्य को कई प्रांतों में विभाजन किया। उनको 'सुबा' कहा जाता था। इस प्रकार कुल 15 सुबा थे। हर सुबा में सिपाहसालार (राज्यपाल), दीवान, बक्शी, सदर, खाजी, कोतवाल और वकिया नवीस थे। प्रत्येक जिले में फौजदार, अमल गुरजर बतिक्वि थे। परगण के प्रशासन को शिकदार, अमील, पोतदार, कानूंगो, देख करते थे। अकबर अपनी सेना में अनेक दर्जा बनाये। उनको 'मन्सब' से उनके मुखिया को मन्सबदार के नाम से जाना जाता था। मुगल सेना में अश्व सेना, थल सेना, फिरंगी दल और गज दल थे। घोड़ों के लिए मुद्रा डालने का 'दाग महली' नामक प्रत्येक विभाग था।

राजस्व की व्यवस्था :

यह अकबर के प्रशासन का प्रमुख उपलब्धियों में एक है। जुब्ती पद्धति (रैतवारी पद्धति) को जारी किया। भूमि को नापने के लिए लोहे की कुलाबों के बांस के नापने के डंडे का उपयोग करते थे। भूमि को कृषि के आधार पर उनको पोलज, परौती, चचर और बंजर के नामों से विभाजित किया जाता था। बंजर भूमि को छोड़कर शेष भूमि को उनकी उपजाऊपन के आधार पर उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ नाम से विभक्त किया जाता था। प्रत्येक किसान को पट्टा दिया जाता था।

अकबर काल में पुलिस व्यवस्था (कोतवाल) सुसंगठित और समर्थ थे। जिले में फौजदार, परगण में राजस्व अधिकारी की सहायता करते थे। जिला के राजमार्गों की सुरक्षा की व्यवस्था करना उनका कर्तव्य था। परागण में पुलिस थाने थे। इस प्रकार पहली बार मध्यकालीन इतिहास में अकबर अत्यंत समर्थ प्रशासन पद्धति को जारी किया। अकबर कला और वास्तुशिल्प के लिए भी प्रोत्साहन दिया था। फतेहपुर सिक्री में प्रमुख स्मारक दौलतखान, ख्वाजाबाग, दफ्तर खाना, इबादत खाना, मक्तब खाना, जोधाबाई राजमहल, पंचमहल, बीरबल का घर, कबूतर खाना, आदि।

ज्ञात रहे :

अकबर के आस्थान में नवरत्न थे,
1) अब्दुल रहीम 2) अबुल फज़ल
3) बीरबल 4) फैज़ी, 5) हमीद
हुमन 6) राजा मानसिंह 7) शेख
मुबारक 8) तानसेन 9) तोदरमल

अकबर के बाद उसका बड़ा बेटा जहाँगीर मुगल साम्राज्य में उत्तम प्रशासन किया था। इसके बाद उसका बेटा शाहजहाँ गद्दी पर बैठा।



फतेहपुर सिक्री का पंच महल

शाहजहाँ :

मुगल साम्राज्य में अधिकार ग्रहण करने के बाद अमूल्य रत्न से मयूर सिंहासन का निर्माण किया। इसका पुत्र औरंगजेब को दखन के राज्य प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया। इसने 1636 में पुर्तगालियों को हराकर अहमदनगर को अपने वश में लिया। दखन भाग में भू नापन और मूल्यांकन पद्धति को जारी रखा। बाद के राजनीतिक विकास में औरंगजेब मुगलों का सुल्तान हुआ। शाहजहाँ के काल में भारत और पश्चिम एशिया, यूरोप देशों के बीच में व्यापार का विकास हुआ। शाहजहाँ अपनी प्रिय पत्नी मुमताज बेगम के लिए आगरा में ताजमहल का निर्माण किया। दिल्ली का लाल किला तथा वहाँ की इमारतें शाहजहाँ की अत्यद्भुत देन हैं। इसलिए इस काल को मुगलों की कला और वास्तुशिल्प का स्वर्ण युग कहते हैं।



ताजमहल

ताजमहल : ताजमहल को मुगल बादशाह शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज बेगम की याद के लिए वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा के पास यमुना नदी के किनारे निर्मित किया। 1632 में इसका निर्माण कार्य प्रारंभ होकर करीब 1653 के समय तक पूर्ण होने की सूचना मिलती है। इसका निर्माण श्वेत संगमरमर पत्थर से किया गया है। ताजमहल दुनिया के प्रमुख स्मारकों में से एक है। इसलिए इसे यूनेस्को की विश्वपरंपरा की सूची में सम्मिलित किया गया है।

औरंगजेब :

यह बचपन में उत्तम सैनिक प्रशिक्षण पाकर समर्थ योद्धा बना। अपने पिता शाहजहाँ को बंदी बनाकर अधिकार ग्रहण करने के स्मरणार्थ अलमगीर नामक उपाधि प्राप्त करके पद ग्रहण किया। औरंगजेब कुरान के तत्व - नियमों को जारी किया। जनता को कुरान के नियमों को पालन कराने के लिए निरीक्षण हेतु मुहतासिब को प्रमुख शहरों में नियुक्त किया। साम्राज्य में सती पद्धति, संगीत कार्यक्रम, जुआ खेलना, मद्यपान, गांजा उगाना, निषेध किया।

औरंगजेब के कुप्रशासन के प्रति उत्तर भारत में जाट, सतनामियों, बुंदेलों तथा सिखों ने लड़ाई शुरू की। सिखों के नौवें गुरु तेज बहादुर को गिरफ्तार करके प्रताड़ित करते हुए हत्या की। भारत के प्रबल शक्ति राजपूतों से शत्रुता के कारण मुगलों के प्रशासन का अंत हुआ। मराठा राज्य के अस्तित्व पर सहन न करते हुए, इसने शिवाजी से निरंतर लड़ाई की। शिवाजी के बाद संभाजी को गिरफ्तार करके यातना देकर मार डाला। दक्षिण भारत के राज्यों के विजयपुर (बिजापुर) आदिलशाही, गोलकुंड के निजाम शाहियों के साथ युद्ध करके उनको अपने राज्य में विलीन कर लिया।

मुगलों की देन :

प्रशासन: मुगलों के प्रशासन की व्यवस्था वंश पारंपरिक था। निरंकुश प्रभुत्व भी अस्तित्व में था। स्वयं को सम्राट मानकर बादशाह नामक उपाधि अपनायी। प्रशासन में सलाह और सूचना देने के लिए मंत्री तथा अधिकारी थे। फारसी भाषा प्रशासन की भाषा थी। सक्षम प्रशासन चलाने के लिए साम्राज्य को प्रांत, जिले तथा नगरों में विभाजित किया गया था। उनके निरीक्षण करने के लिए प्रशासनाधिकारी थे। सुल्तान न्यायांग के वरिष्ठ थे।

सेनानायकों को, मंत्रियों को, नियुक्त करना और पद से हटाने का सब अधिकार बादशाह के पास था। मन्सबदारों की नियुक्ति, जागीरों को देना, कानूनों का निर्माण, बादशाह का प्रमुख कर्तव्य था। वकील, दीवान, मीरबक्शी और मुख्य सदर, केंद्र सरकार में प्रमुख मंत्री थे। प्रांतीय प्रशासन को राज्यपाल, दीवान, बक्षी, वकीया नवीस, कोतवाल, फौजदार, अमल गुजार और बतिक्चि नामक अधिकारी चलाते थे।

राजस्व व्यवस्था :

कृषि मुगल साम्राज्य के अधिकांश प्रजाओं का प्रमुख उद्योग था। भूमि के उपजाऊ के आधार पर भू राजस्व को संग्रह किया जाता था। कृषि भूमि को समग्र रूप से मापन करके राजस्व को निश्चय किया जाता था।

सामाजिक और अर्थ व्यवस्था :

वर्तमान समाज में राजा, मंत्रियों, अधिकारियों, नौकरो को गौरव का स्थान था। औरंगजेब के अतिरिक्त अन्य सभी संगीत कार्यक्रम, मनोरंजना, मध्यपान, जुआ खेलों में समय काटते थे।

राजा तोदरमल वह भू मापन तथा वर्गीकरण करने की उत्तम पद्धति को महत्व दिया। सिंचाई, कृषि की प्रगति के लिए सहायता करती थीं। उद्योगों की स्थापना हुई और विदेशों के साथ व्यापारिक संबंध मज़बूत हुए।

ज्ञात रहे :

लाहौर, आगरा, फतेहपुर सीक्री और अहमदाबाद में सरकार के कारखाने थे। वर्तमान में प्रसिद्ध रुई के कपड़ों के कारखानों के प्रमुख केंद्र- बनारस, पटना, ढाका, शाहबाजपुर, सोनार, लाहौर, फतेहपुर सीक्री, आगरा में प्रमुख कारखाने थे। अकबर के काल में शाल और दरी बुनने का विकास हुआ। कश्मीर के शाल भी प्रसिद्ध हैं। मुगलों के काल में भारत ने एशिया तथा यूरोप के कई देशों के साथ वाणिज्य संबंध बनाये रखा। कच्चा रेशम, लोहे, घोड़े, सुगंधित द्रव्य, स्वर्ण और रजत आयात वस्तुएँ थीं। सूती कपड़े, काली मिर्च, अफीम, नमक और ऊनी वस्त्रों को प्रमुख रूप से निर्यात किया जाता था।

साहित्य :

मुगलों के काल में फारसी, अरबी, तुर्की, हिंदी, संस्कृत भाषाओं में कृतियों की रचना हुई। बाबर और जहाँगीर विद्वान थे। अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' और 'तुझक-इ-जहाँगीर' की रचना की। अकबर के दरबार में अब्दुल फजल नामक विद्वान ने 'आईन-अकबरी' और 'अकबरनामा' को फारसी भाषा में लिखा था। बदायूनी ने रामायण, फैज़ी 'लीलावती' नामक गणित ग्रंथ, राजा तोदरमल ने 'भगवत पुराण' का फारसी भाषा में भाषांतर किया था। तुलसीदास का 'रामचरितमानस', सूरदास का 'सूरसागर' उत्कृष्ट कृतियाँ थीं।

कला और वास्तुशिल्प :

मुगलों के काल में कला और वास्तुशिल्प के लिए अमूल्य योगदान देने वाले अकबर और शाहजहाँ, द्वारा बनाये गए भव्य स्मारक फतेहपुर सिक्री, आगरा, और दिल्ली में स्थित हैं। ये मुगलों की राजधानियाँ थी। शाहजहाँ ने आगरा में अकबरी महल, ताज महल, जहाँगीर महल, और किलों का निर्माण कराया। लाहौर तथा अहमदाबाद में आगरा जैसे प्रतिष्ठित किलों का निर्माण कराया।

शाहजहाँ ने लाल किला बनाकर, उसमें दीवान-ई-खास, रंग महल, मुमताज महल, मोती मस्जिद, नक्कर खाना, खास महल, आदि इमारतों का निर्माण कराया। इसके अतिरिक्त दिल्ली में देश का अत्यंत बड़ा जामिया मस्जिद भी शाहजहाँ काल में दिल्ली में निर्मित हुआ था।



लाल किला

चित्रकला :

हुमायूँ के काल में मुगलों की चित्रकला प्रारंभ हुई। पर्शिया के मीर सैयद अली तथा अब्दुस समद की सहायता से चित्रकला की हस्तप्रति की रचना हुई। अकबर के दरबार में कुल सत्रह चित्रकार थे। इनमें तेरह चित्रकार हिंदू थे। इनमें प्रसिद्ध दसवंत, बसवान, लाल, मुकुंद, आदि थे। जहाँगीर के दरबार में उस्ताद मन्सूर और अब्दुल हसन नामक चित्रकार थे। इन्होंने अधिक मात्रा में मुगल बादशाहों, रानियों के बृहदाकार के चित्रों की रचना की।

मराठा :

17 वीं शताब्दी में दक्खन भाग में मराठा साम्राज्य का उदय होना एक प्रमुख विकास था। यह साम्राज्य आज के उत्तर भाग में फैला हुआ था। 17 वीं शताब्दी में महाराष्ट्र, अहमदाबाद के निजामशाही तथा विजयनगर के आदिलशाही के अधीन था। इन सुल्तानों ने स्थानीय मराठों को अपनी सेना में नियुक्त किया। देशपांडे और देशमुख राजस्व के संग्रहकार थे। उनमें शाहजी भोंसले, विजयनगर (बिजापुर) के संस्थान के अधीन प्रशासक थे। इन्होंने सुल्तानों से कुछ जागीर प्राप्त की थी।

शिवाजी :

मराठा राज्य की स्थापना भारत के इतिहास में नया अध्याय था। राष्ट्रप्रेम, देश की एकता को जागृत कराना, और विदेशियों से देश की रक्षा करने के लिए मराठों ने मुगलों के साथ संघर्ष किया। मराठों में शिवाजी श्रेष्ठ राजा था। राज्य के विस्तार के साथ-साथ उत्तम प्रशासन देने में शिवाजी सफल हुआ। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संतों के उपदेशों से हिंदू धर्म की रक्षा और मराठा राज्य की स्थापना के लिए अधिक जोर दिया गया।

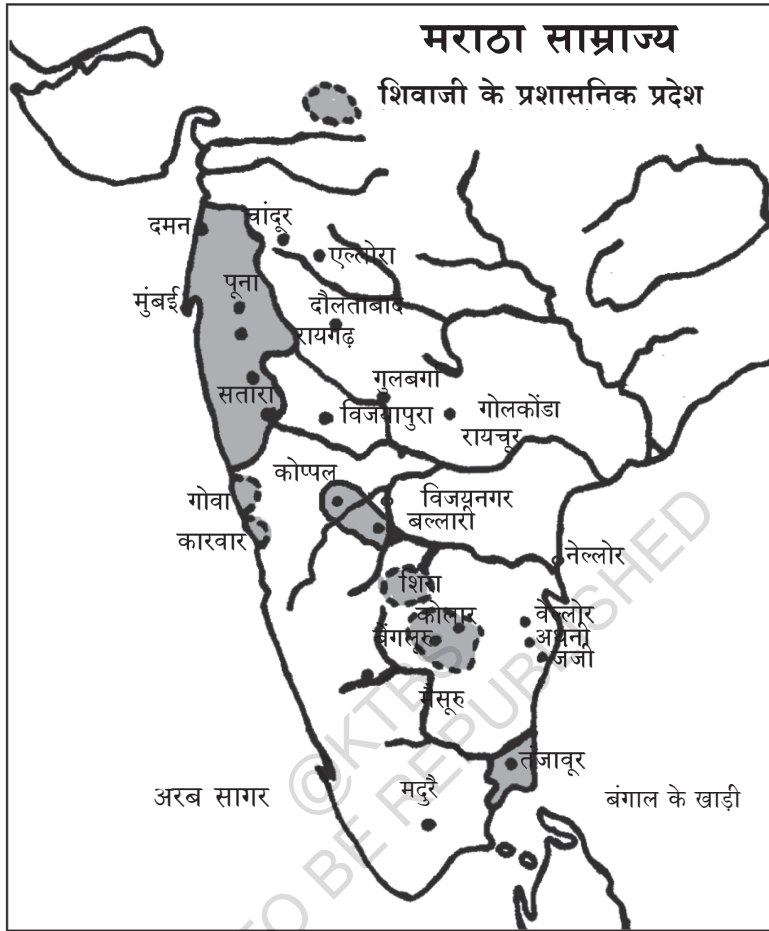


शिवाजी

शिवाजी ने पुणे जिले के शिवनेरी में जन्म लिया। इसके पिता शाहजी भोंसले विजयपुर (बिजापुर) सुल्तान की सेवा में थे। जीजाबाई धर्म पारायण महिला थी। पुत्र में धर्मिकश्रद्धा, धर्मिकास्था, जीवन के प्रति निष्ठा तथा उच्च आदर्शों का पोषण करने में सहायता की। दादाजी कोंडदेव शिवाजी के गुरु बनकर,

गेरिल्ला युद्ध : पहाड़ों, वनों, में गुप्त रूप से बैठकर अचानक शत्रुओं पर हमला करने की युद्ध कला।

शस्त्रास्त्र तथा शास्त्र का प्रशिक्षण दिया। शिवाजी व्यायाम, तलवारबाजी, घुड़सवारी, आदि क्षात्र कलाओं में निपुण था। शिवाजी ने बचपन में स्वतंत्र राज्य का निर्माण करने का सपना देखा था, इसलिए पुणे को केंद्र स्थान बनाकर राज्य विस्तार के कार्य में लगे। इस दिशा में शिवाजी अपने स्थानीय आदिवासी मावली के युवकों की सेना का संगठन करके, उनको गेरिल्ला युद्ध तंत्र में सैनिक प्रशिक्षण दिया। शिवाजी विजयपुर (बिजापुर) के सुल्तान से तोरणगढ़, पुरंदर गढ़, चकनगढ़, सिंह गढ़, जवली किले, आदि को वश में कर लिया। तोरण किला के पास होसदुर्ग को 'रायगढ़' नाम रखा। प्रतापगढ़ नामक एक नये किले का निर्माण किया। इस तरह शिवाजी विजयपुर (बिजापुर) सुल्तानों के विरुद्ध संघर्ष करने से उसके पिताजी को सुल्तान ने गिरफ्तार किया। फिर से शिवाजी के संघर्ष न करने के आश्वासन पर शाहजी को वहाँ से रिहा किया गया।



मुगल तथा शिवाजी के संबंध :

शिवाजी कई वर्षों तक मुगल बादशाह औरंगजेब के साथ संघर्ष किया। दक्षिण भारत में शिया राज्यों को हराने के साथ-साथ मराठा राज्य को पूर्ण रूप से हराने का संकल्प किया। इसके लिए शाइस्ता खाँ और जय सिंह को नियुक्त किया। जयसिंह ने शिवाजी को हराकर पुरंदर में समझौता किया। उसके अनुसार शिवाजी ने अपने 23 किले तथा वार्षिक 16 लाख रुपए की आमदनी वाले प्रदेश सौंप दिये। मुगलों के साथ निष्ठा का व्यवहार करने का वचन देते हुए, अपने पुत्र संभाजी के नेतृत्व में 5000 अश्वसेना के साथ दिल्ली भेजा। बीजापुर के आदिलशाही तथा गोलकुंडा के कुतुब शाही सुल्तान के साथ शिवाजी

हाथ न मिलाने पाये, इस उद्देश्य से उसको आगरा आने के लिए जयसिंह ने आमंत्रित किया, औरंगजेब ने अपने दरबार में शिवाजी को उचित गौरव न देते हुए अपमानित किया, इसके प्रतिरोध करने पर शिवाजी और उसके पुत्र संभाजी को आगरा के कारागृह में बंदी बनाकर रखा गया। कुछ दिनों बाद शिवाजी अपने पुत्र के साथ मिठाई की टोकरी में बैठकर बंदीगृह से फरार होकर रायगढ़ पहुँचे। आगे अपनी सेना को सबल करते हुए खोये हुये कई किलों को फिर से वश में लिया। शिवाजी मुगलों के प्रदेशों से चौत (भू राजस्व एक चौथाई) और अपने राज्य में सरदेशमुखी (भू राजस्व 1/10) को संग्रह किया। 1674 में रायगढ़ में शिवाजी की राज्याभिषेक विधि पूरी हुई। वहाँ शिवाजी को छत्रपति नामक उपाधि से सम्मानित किया गया था।

शिवाजी का प्रशासन :

शिवाजी अपने विशाल राज्य में उत्तम प्रशासन के लिए संगठित किया। साम्राज्य को कई प्रांतों में विभाजन किया। उनको स्वराज्य और मुगलों के राज्य कहा जाता था। मराठी प्रशासन की भाषा थी। केंद्र सरकार के मुखिया राजा थे प्रशासन में सहायता देने के लिए अष्टप्रधान नामक मंत्रियों के साथ ही सहायता के लिए अन्य अधिकारी वर्ग थे। प्रांत, जिला, ग्राम, प्रशासन के घटक थे।

भू राजस्व पद्धति : शिवाजी की भू राजस्व पद्धति किसानों के लिए सुविधाजनक रैतवारी पद्धति थी। जागीरदारी राजस्व पद्धति को रद्द कर दिया। राजस्व को धन या वस्तुओं के रूप में देने के लिए आदेश दिया गया था। चौत तथा सरदेशमुखी नामक भू राजस्व पद्धतियाँ थीं।

न्याय व्यवस्था : शिवाजी के प्रशासन में पारंपरिक न्याय की व्यवस्था अस्तित्व में थीं। गाँवों में ग्राम पंचायत न्याय प्रदान करते थे। ब्राह्मण, न्यायाधीश स्मृति के आधार पर निर्णय लेते थे।

सेना : मराठा सेना में पैदल सेना, गजदल अश्वसेना तथा फिरंगीदल (तोपखाना) के विभाग थे। राजगढ़, तोरण गढ़, प्रतापगढ़, और सिंहगढ़ में प्रमुख किले थे। हवलदार किले का नियंत्रक था। सेना में कई छोटे घटक थे। गेरिल्ला युद्ध तंत्र में शिवाजी के सिपाहियों को विशेष प्रशिक्षण प्राप्त था।

शिवाजी के उत्तराधिकारी : शिवाजी की मृत्यु के बाद संभाजी अपनी शक्ति से मराठा राज्य के उत्तराधिकारी बने। संभाजी द्वारा राज्य का संरक्षण तो हो नहीं पाया, पर औरंगजेब के आक्रमण के दौरान युद्ध में मारा गया। इसकी पत्नी और छोटे बेटे शाहु को कैद कर लिया गया। इस स्थिति में राजाराम (सांभाजी का छोटा भाई) ने राजप्रतिनिधि के रूप में प्रशासन की बागडोर संभाला। राजाराम ने पुनः मुगलों से युद्ध करके गुजरात, मालवा, खानदेश, बेरार और कुछ किलों को अपने वश में कर लिया। 1700 में राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी ताराबाई मोहिते ने अपने दस वर्षीय पुत्र शिवाजी (द्वितीय) को राज सिंहासन पर बैठाया और खुद प्रशासन चलाने लगी। इसने 1700-1708 ई० के बीच राज प्रतिनिधि के तौर पर कार्य किया। इसने भी औरंगजेब की सेना से युद्ध किया था। युद्ध के प्रारंभ में औरंगजेब की सेना जीत की ओर अग्रसर थी, किंतु युद्ध के अंतिम समय में मराठों ने युद्ध जीतकर, खोए हुए किलों पर फिर से अपना अधिकार कर लिया। औरंगजेब के उत्तराधिकारी बहादुरशाह (प्रथम) ने सांभाजी के पुत्र शाहु को कारागृह से रिहा कर दिया और उसे दक्षिण में स्थित मुगलों के सुभाओं से चौत और सरदेशमुखी संग्रह करने की अनुमति भी दी। यह विषय ताराबाई और शाहु के बीच में आंतरिक कलह का कारण बना। ताराबाई पराजित हो गई, लेकिन शाहु असमर्थ था। इसलिए अपने प्रशासन को पेशवा (प्रधानमन्त्री) को सौंप दिया। इस प्रकार मराठा राज्य में पेशवाओं का प्रशासन शुरु हुआ।

पेशवा :

बालाजी विश्वनाथ : बालाजी विश्वनाथ, शाहु के सेनापति होने के साथ-साथ प्रसिद्ध मराठा नेता थे। वह निष्ठावान और सक्षमता से कार्य निष्पादन के लिए, मराठों ने बालाजी विश्वनाथ को ही पेशवा के रूप में नियुक्त किया। इसने शाहु और उसकी माता को मुगलों के कैद से छुड़ाने में बड़ी भूमिका निभायी थी। मुगल सुल्तान सय्यद भ्राताओं से मित्रता अर्जित कर, बालाजी विश्वनाथ ने शिवाजी के अधीन जो प्रदेश थे। उन पर मुगलों का कब्जा हो चुका था। ऐसे प्रदेशों से भू राजस्व संग्रह करने का अधिकार पाया। मराठा संघ के श्रेष्ठ नेतागण जैसे भोंसले, गायकवाड़, होल्कर, सिंधिया और पेशवाओं को एकत्रित करके मराठों की कीर्ति स्थापित की।

बाजीराव (प्रथम) : बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद उनका जेष्ठ पुत्र बाजीराव (प्रथम) पेशवाओं की गद्दी पर नियुक्त हुआ। केवल उन्नीस वर्ष की उम्र में ही वह अत्यंत शूरवीर था। मराठा राज्य को उत्तर भारत में विस्तृत करने की दृष्टि से उसने गुजरात और मालवा के प्रदेशों पर कब्जा करके, जीते हुए प्रदेशों से चौत और सरदेशमुखी संग्रह करने का अधिकार प्राप्त किया। इसने कर्नाटक के चित्रदुर्ग और श्रीरंगपट्टण पर भी आक्रमण किया था। बाजीराव मुगल साम्राट के विरुद्ध जब युद्ध की घोषणा की तब निजाम-उल-मुल्क मुगलों की सहायता करने के उद्देश्य से अपनी सेना के साथ दिल्ली के ओर जाते समय भोपाल के युद्ध में मराठों से पराजित हुआ। इससे नर्मदा, चंबल नदी के बीच की विशाल भूमि और पचास लाख रुपये युद्ध हर्जाने के रूप में बाजीराव को प्राप्त हुआ। पुर्तगालियों से सालसेट, बेसिन और सिद्धियों से जंजिरा वश में कर लिया। पूना को अपना प्रशासन केंद्र बनाया। इसी समय पर मराठा संघ के ग्वालियर के सिंधिया, इंदौर के होल्कर, नागपुर के भोंसले, बरोदा के गायकवाड़ ने एक दूसरे से स्वतंत्र होने का संकल्प किया। प्रथम बाजीराव ने न केवल क्षमता से प्रशासन चलाया बल्कि मराठा राज्य की कीर्ति को पुनः स्थापित करने में सफल भी हुए। इसलिए इसे 'दूसरा शिवाजी' नाम से भी जाना जाता है।

बालाजी बाजीराव : इसने अपनी बीस वर्ष की उम्र में ही अधिकार प्राप्त करने के कारण से प्रशासन में मार्गदर्शन के लिए सलाहकार के रूप में उसके रिश्तेदार सदाशिव भाऊ को नियुक्त किया गया था। यह मराठों की कीर्ति बढ़ाने के लिए प्रेरणा दी। बालाजी बाजीराव ने राज्य की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कई कदम उठाये। बुंदेलखंड पर अपना सार्वभौमत्व स्थापित करने के लिए 1742 में होल्कर और सिंधिया की सेनाओं के साथ सफर किया। अफगानिस्तान से अहमदशाह अब्दाली ने मुगल प्रदेशों पर आक्रमण करके लाहौर, मुल्तान, कश्मीर पर कब्जा कर लिया। उस समय मुगल बादशाह सफदरजंग आंतरिक और बाहरी आक्रमणों के संबंध में बादशाह ने मराठों से समझौता कर लिया। अपेक्षा के अनुसार अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर हमला किया। बालाजी बाजीराव सेना सहित पानीपत के मैदान में दुश्मनों के साथ लड़ते हुए हार गये।

माधव राव (प्रथम) : यह बालाजी बाजीराव के दूसरा पुत्र था, अपने पिता की मृत्यु के बाद पेशवा की राजगद्दी पर बैठा। माधवराव ने अप्राप्त होने के कारण अपने चाचा को

राजप्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया। पानीपत के तीसरे युद्ध में बुरी तरह से हार जाने के बाद विस्मित रीति से उन्नति करके, दक्षिण और उत्तर भारत में प्रबलशक्ति के रूप में उभरकर आये। पानीपत युद्ध की हार का लाभ उठाने के लिए जब निजाम ने प्रयत्न करने का निश्चय किया, तब उसे अहमदनगर के निकट युद्ध में हराया। इसने मैसूर के हैदर अली को भी पराजित किया था। दूसरी बार मैसूर पर आक्रमण करके, श्री रंगपट्टण पर भी विजय प्राप्त की। जो प्रदेश पहले शिवाजी के कब्जे थे, उन प्रदेशों को हैदर अली से माधव राव ने अपने वश में लिया। इसके साथ-साथ माधव राव ने युद्ध के हर्जाने के रूप में अपार धन संपत्ति प्राप्त की। उत्तर भारत में राजपूत, जाट और रोहिलों को भी युद्ध में हराया। राजभ्रष्ट होकर भटकनेवाले मुगल बादशाह शाह आलम (द्वितीय) को दिल्ली के सिंहासन पर बैठाने में माधव राव (प्रथम) ने सहायता की। इस प्रकार मराठों की कीर्ति पुनः स्थापित हुई। तीसरे आंग्लो मराठा युद्ध में अंग्रेजों ने मराठों को बुरी तरह से हराया। इस हार के बाद मराठों का प्रशासन समाप्त हुआ।

अभ्यास :

I. रिक्त स्थानों में उचित शब्दों से भरिए :

- 1) अहोम साम्राज्य का संस्थापक _____ हैं।
- 2) मुगल साम्राज्य की स्थापना _____ ने की।
- 3) मुगलों के प्रसिद्ध सुल्तान _____ थे।
- 4) आगरा में ताजमहल को _____ ने बनवाया।
- 5) दीन-ए-इलाही नामक नये पंथ की स्थापना करने वाले मुगल सुल्तान _____ थे।
- 6) शिवाजी की माता _____ थीं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

- 7) अहोम राजघराने की प्रमुख उपलब्धियों को संक्षेप में लिखिए।
- 8) बाबर की सैनिक उपलब्धियों के बारे में लिखिए।

- 9) शेरशाह की प्रशासनिक व्यवस्था के साथ प्रस्तुत प्रशासनिक व्यवस्था की तुलना कीजिए।
- 10) अकबर द्वारा जीते गए प्रदेशों के नाम लिखिए।
- 11) शाहजहाँ काल को कला और वास्तुकला का स्वर्णयुग कहा गया है। क्यों?
- 12) शिवाजी की प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में विवरण दीजिए।
- 13) बाजीराव प्रथम की उपलब्धियों के बारे में विवरण दीजिए।

III. गतिविधियाँ :

- 1) भारत के मानचित्र में अकबर द्वारा जीते गए क्षेत्रों को पहचानिए।
- 2) शिवाजी के मन में देशभक्ति की भावना के विकास में जीजाबाई किस प्रकार सहायक थीं। इसके बारे में निबंध लिखिए।
- 3) भारत के मानचित्र में अहोम राजधानी के प्रदेशों को पहचानिए।

IV. परियोजना कार्य :

- 1) अपने स्थानीय प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में विवरण दीजिए।

अध्याय 18

भक्ति संप्रदाय



इस अध्याय में निम्नलिखित अंशों की जानकारी प्राप्त करेंगे-

- भारत और कर्नाटक में भक्ति संप्रदाय का विकास।
- प्रमुख भक्ति कवियों की उपलब्धियों का परिचय।
- भक्ति संप्रदाय का प्रभाव।

भक्ति आंदोलन का विकास मध्यकालीन भारत की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। इस युग के धार्मिक सुधारकों तथा दार्शनिकों ने उदार भक्ति पंथ का प्रतिपादन किया। भक्ति का अर्थ ईश्वर में पवित्र विश्वास रखना था। ईश्वर में भक्ति तथा शरणागति पर बल दिया। लोगों में भ्रातृत्व की भावना के विकास करने का प्रयास किया और सर्वधर्म समानता के तथ्य का प्रतिपादन किया गया। वे राम, कृष्ण और अल्लाह के रूप में कई नामों से पहचानकर भगवान की आराधना करते थे। उन्होंने मुक्ति पाने के लिए भक्ति मार्ग का सुझाव दिया। पवित्र मन से भगवान के शरण में आना ही भक्तिमार्ग का मूल तथ्य है। भक्तिमार्ग के साथ-साथ इस्लाम धर्म में सूफी संप्रदाय का भी विकास हुआ।

रमानंद (1360 - 1470) :

रमानंद का जन्म प्रयाग के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे रामानुज के तथ्य के अनुयायी थे। उन्होंने भक्ति और प्रेम के आधार पर वैष्णव धर्म का प्रस्थान प्रारंभ किया। उत्तर भारत के कुछ भागों पर यात्रा करके राम और सीता के पूजा-पाठ को लोकप्रिय किया। वाराणसी ही उनके कार्यस्थल का केंद्र स्थान था। उन्होंने जात-पात का विरोध करते हुए सभी जाति के अपने पंथ में शामिल कर लिया। उनमें से कबीरदास ने अत्यधिक ख्याति पायी।



रमानंद

ज्ञात रहे :

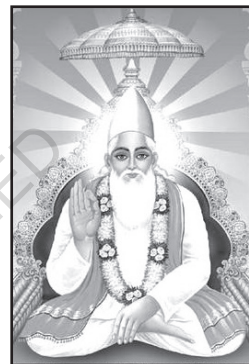
रमानंद ने लोगों को विशेष संदेश दिया।

जाति के भ्रम से बाहर निकलो, जाति पर सवाल मत करो।

हरि को याद रखो, हरि में लीन हो जाओ।

संत कबीर (1440 - 1510) :

इस समय उत्तर भारत में कबीर प्रसिद्ध संत थे। कबीर का पालन पोषण वाराणसी के जुलास नामक एक मुस्लिम बुनकर परिवार में हुआ। कबीर रमानंद के शिष्य थे। इनका अधिकांश समय वाराणसी में बीता। अपने नये तथ्य के बारे में उपदेश दिया। वे व्यवस्था का विरोध करते थे। वे ही बहुमूर्ति पूजा के खिलाफ थे। वे मानते थे कि भगवान एक है। व्यक्ति चाहे हिंदू हों या मुसलमान, सब के लिए भगवान एक हैं। उन्होंने उद्धोषण की कि भगवान् अलग-अलग नहीं हो सकते हैं। इन दोनों धर्मों के लोगों में सौहार्दता और सहिष्णुता के विकास करने का प्रयत्न किया था।

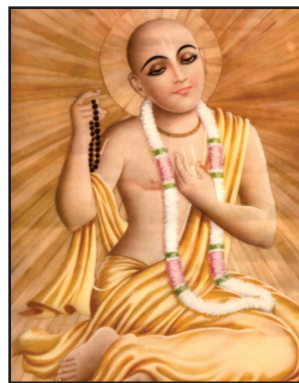


कबीर

कबीर ने लोगों की सामान्य भाषा हिंदी में साहित्य रचना की। और उनकी कविताओं को 'दोहे' कहा गया। वर्तमान समय में हिंदू-मुसलमान उत्तर-भारत में कबीर के दोहों का पठन करते हैं। कबीर के अनुयायियों को कबीर - पंथी नाम से जानते हैं। अर्थात् कबीर के अनुचर और कबीर भारत के एक प्रमुख धार्मिक और समाज सुधारक थे।

चैतन्य (1486 - 1535) :

भक्ति आंदोलन के प्रसिद्ध संतों में से चैतन्य भी एक हैं। उनका जन्म बंगाल के नाडी में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। व्यक्ति के मन में श्रद्धा हो तो जात-पात का भेद स्वयं ही दूर हो जाता है। भक्ति से मनुष्य का चरित्र परिशुद्ध हो जाता है। इस प्रकार चैतन्य ने लोगों को उपदेश दिया। भगवान कृष्ण की आराधना को लोकप्रिय किया। भगवान कृष्ण के बारे में अनेक भक्ति गीतों की रचना की। उन्होंने लोगों की जाति व्यवस्था का विरोध किया और भाईचारे की

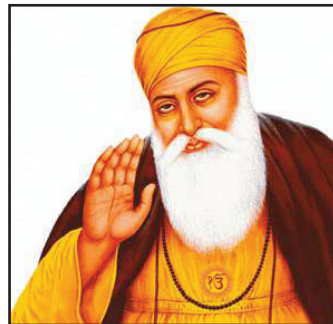


चैतन्य

भावना को बढ़ाने की कोशिश की। आध्यात्मिक चिंतन से संबंधित उपदेशों को 'चैतन्य चरितामृत' नामक ग्रंथ में संग्रहीत किया गया है।

गुरुनानक (1469 - 1539) :

इस काल के अन्य भक्ति पंथ के प्रतिपादक गुरुनानक। उनका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के 'तलवंडी' नाम गाँव में हुआ था। बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्तिवाले थे। उन्होंने 'ईश्वर एक है' उपदेश देने के अतिरिक्त मूर्ति पूजा का विरोध भी किया। सत्कार्य, परिशुद्ध जीवन और नीतिगत जीवन को अत्यधिक महत्व दिया। उन्होंने जाति, लिंग और भेदभाव के बिना सामुदायिक भोजन को महत्व दिया। 'लंगर' नामक एक भोजनालय शुरू किया। उनके हिंदू और मुस्लिम दोनों शिष्य थे। उनके शिष्यों को 'सिक्ख' कहा जाता है। उनके उपदेशों को 'गुरु ग्रंथसाहिब' में संग्रहीत किया गया है। यह सिक्ख धर्म का पवित्र ग्रंथ है। सिक्खों के मंदर को 'गुरुद्वारा' कहा जाता है।



गुरुनानक

श्रीमंत शंकरदेव और माधव देव :

असम के सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास में शंकरदेव की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन्होंने अतीत के संस्कृति और संगीत परंपरा को नवाचार रूप देकर प्रसिद्ध हुआ है। शंकरदेव का भागवत संस्कृत, असम और ब्रजावाली भाषाओं में हैं। असम में शंकरदेव द्वारा आरंभिक भक्ति आंदोलन ने भारत के अन्य भागों में



शंकरदेव



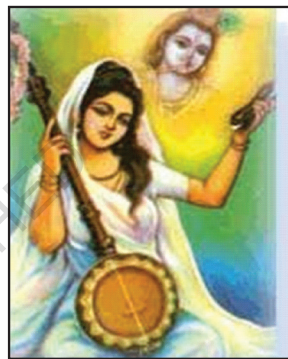
माधव देव

प्रभाव डाला। उन्होंने जो भक्ति आंदोलन शुरू किया उसे एकता आंदोलन-वैष्णव आंदोलन कहा जाता है। कृष्ण में हमें शुद्ध भक्ति होनी चाहिए। एक अच्छा भजन गाने और सुनने से हम भक्ति कर सकते हैं। भगवान का सेवक होने के लिए अच्छी इच्छा की आवश्यकता होती है। अन्य वैष्णवों की तरह, यह पंथ कृष्ण के साथ राधा की पूजा नहीं करता है।

श्रीमंत शंकरदेव ने अपने संप्रदाय में सरनिया की प्रथा की शुरुआत की। उन्होंने उस समय की जाति व्यवस्था के विरुद्ध एक महान सामाजिक क्रांति को प्रारंभ किया उनके संप्रदाय में सभी धर्म और सभी जाति के लोग शामिल थे। जो लोग इस संप्रदाय से संबंधित हैं, - नियमवद्ध धार्मिक दायरे में उन्हें एकेश्वरवाद, पूजा और भक्ति के सख्त धार्मिक ढाँचे का पालन करने के लिए कहा जाता है। उनके शिष्य, माधव देव, वे शाक्त समूह के थे, उनके प्रभाव से प्रभावित थे। इनके प्रभाव से एक सरण भक्ति को मानकर प्रवेश करते हैं। बहुमुखी प्रतिभा युक्त माधव देवरु भक्ति आंदोलन में प्रसिद्ध हुए।

मीराबाई (1498 - 1569) :

भक्ति पंथ में प्रसिद्ध मीराबाई मेवाड़ की राजकुमारी थी। भोग विलास के जीवन को त्यागकर कृष्ण की परम भक्त बनी और कृष्ण की भक्ति से संबंधित कीर्तनों की रचना की। यही कीर्तन आगे चलकर 'भजन' के नाम से लोकप्रिय बना। समस्त भारत में आज भी इन भजनों को गाया जाता है।



मीराबाई

महाराष्ट्र भीमा नदी के किनारे स्थित पंडरापुर में विठोबा का मंदिर भक्ति पंथ का केंद्रीय स्थान था। ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और रामदास नए पंथ के संतों में विख्यात हुए थे।

पुरंदरदास (1484 - 1564) :

दासरेंदरे पुरंदरदासरय्या - ऐसे अपने गुरु व्यासराय से प्रशंसा पानेवाले पुरंदरदास ने उच्चतम वैष्णव भक्ति, हरि संकीर्तन के माध्यम से कन्नड़ साहित्य, कर्नाटक संगीत को मौखिक योगदान दिया और कर्नाटक संगीत के पितामह के रूप में जाने जाते हैं।



पुरंदरदास

पुरंदरदास ने अपने संकीर्तन में मुख्य रूप से वैष्णव भक्ति परम्य-प्रपक्ति के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों, पाखंडी भक्ति के व्यंग्य, जीवन दर्शन को व्यक्त करते हैं। उन्होंने जाति-पाति की निंदा की, याग यज्ञ को तिरस्कार किया तथा अंधविश्वासों को अस्वीकार किया। उन्होंने दिखावटी भक्ति को अस्वीकार करते हुए आंतरिक खोज और आत्मनिरीक्षण को महत्व दिया। उन्होंने कहा कि आंतरिक शुद्धि के बिना बाहरी शुद्धि व्यर्थ है। उन्होंने प्रश्न किया कि मन को धोए बिना मल को धोने से क्या लाभ है। उन्होंने पानी में बैठकर ध्यान करनेवाले पाखंडियों की तुलना बकपक्षी से की और स्पष्ट किया कि मन में दृढ़ भक्ति के बिना तन को पानी में डुबोना व्यर्थ है।

“जीना है और जय पाना है, मनुष्य जन्म महान है, इसे हानि मत पहुँचाओ मूर्खों” जैसे जीवन सिद्धांतों को देकर, सबके मन में उसे बोकर उसका पालन किया। पुरंदरदास का प्रत्येक संकीर्तन मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए मानव जाति के लिए ज्ञान का स्रोत है। उनके ये सभी ज्ञान के भंडार कन्नड का पुरंदरोपनिषत्त बना और ‘दास याने पुरंदरदास’ इस प्रख्याति के लिए कारण भी बना ।

कनकदास (1509 - 1609) :

बाड़ा और बंकापुर के एक स्थानीय नेता, कनक बचपन से ही एक प्रवीण योद्धा थे। एक जानकारी के अनुसार कनक एक बार युद्ध में गंभीर रूप से घायल होने के बाद अधिकार तथा जीवन की अनिश्चितता के बारे में निराश होकर, सांसारिक सुखों को त्याग कर, दास मार्ग को अपनाकर कनकदास बने ।



कनकदास

एक भक्ति संत के रूप में कनकदास ने उस समय के समाज में ऊँच-नीच की धारणा को मिटाने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने पाखंडी भक्ति का अनादर्श किया। उन्होंने अपने उपदेशों से लोगों को समझाया कि सच्ची भक्ति से भगवान के सानिध्य को पा सकते हैं। उन्होंने भक्ति-मार्ग की सरलता को दिखाई है। मुख्य रूप से ईश्वर-प्राप्ति के लिए अच्छी जाति में जन्म लेने के दावा करनेवाले पुरोहित वर्ग को अपने कीर्तन के माध्यम से तोड़ दिया ।

कनकदास एक भक्ति कवि थे जिन्होंने असंख्य कीर्तनों के साथ-साथ कई साहित्यिक कृतियों की रचना की जिनमें ‘मोहनतरंगिणी’, ‘नलचरित्र’, ‘रामधन्य चारित’ और ‘हरिभक्तिसार’ महत्वपूर्ण है ।

शिशुनाला शरीफ (1819 - 1889) :

हजूम-इमाम - इनके माता-पिता । शरीफ का जन्म 1819 में वर्तमान हावेरी जिले के शिगाँव तालुक के शिशुनाला में हुआ था। काजी के सलाह पर पिता इमाम साहब ने बच्चे का नाम मुहम्मद शरीफ रखा ।



शिशुनाला शरीफ

‘शरीफ’ एक पारसी शब्द है जिसका अर्थ है महान आदर्शों था अच्छे नैतिक चरित्रवाला व्यक्ति, जिसका दूसरों द्वारा सम्मान किया जाता है, नाम के अनुरूप शरीफ बने ।

शिशुनाला शरीफ बचपन से ही इस्लाम, वीरशैव और वैदिक सिद्धांतों से प्रभावित थे। त्रिकाल ज्ञानी गोविंद भट्ट उनके गुरु थे। स्थानीय चंद्रशेखर मंदिर में बच्चों के लिए एक स्कूल खोलकर, शरीफ ने व्यापक धार्मिक भावना बढ़ाने के कारण बने।

शरीफ संघजीवी होकर, शिशुनाला क्षेत्र में लगनेवाले मेलों, त्योहारों, खुले मैदानी मनोरंजन कार्यक्रम, मुहर्रम उत्सवों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे और लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाते थे। मुहर्रम पृष्ठभूमि के ऐतिहासिक तथ्यों का अनुसरण करते हुए रिवायत का संचालन करके रिवायत साहित्य के प्रणेता बने।

सूफी संत: सूफी संत पर्शिया से भारत आकर विविध भागों में रहने लगे। उन्हें 'पीर' (गुरु) नाम से जाना जाता था। 'सूफ' नामक सादा ऊन का कुर्ता पहननेवाले मुस्लिम संत को 'सूफी' कहा गया। प्रेम और भक्ति से परमात्मा अथवा 'अलाह' को प्राप्त किया जा सकता है, इस बात पर बल देते हुए कहा। सभी वर्गों के लोगों को आदर की दृष्टि से देखते हुए जीने के महत्व पर बल दिया। भक्ति से संबंधित नृत्य और संगीत हमें ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं; ऐसा सूफियों का विश्वास था। सूफी संतों ने उर्दू एवं हिंदी भाषा में भक्ति के महत्व को लोकप्रिय बनाने के लिए अनेक कृतियों की रचना की। कुतुबन नामक सूफी कवि ने 'मृगावती' और मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' नामक काव्य की रचना की थी। इनमें सूफी-सिद्धांतों के महत्व का पर वर्णन किया गया है।

कुछ सूफी संतों

मोइन-उद-दीन चिश्ति, बाबा फरीद, निजाम उद-दीन औलिया, मल्लिक मुहम्मद, ख्वाजाबंदे नवाज आदि।

भारत के अनेक भागों पर हिंदू और इस्लाम धर्म के बीच का अंतर कम करने के लिए अनेक सुधारकों ने प्रयत्न किया।

भक्ति आंदोलन के परिणाम :

हिंदू प्रथाओं में सुधार और हिंदू व मुसलमानों में मधुर संबंध स्थापित करना भक्तिवाद के दो मुख्य उद्देश्य थे। हिंदू समाज में व्याप्त अनेक दोषों को सुधारकों ने सुधार किया। भारत की प्रादेशिक भाषाओं का विकास हुआ। धर्मसुधारकों की देशी भाषाओं की रचनाएँ उनके विकास के लिए सहायक थीं। यह भारतीय संस्कृति के विकास के कारण बना।

ज्ञात रहे :

भक्तिवाद में संतों ने अपनी भाषाओं में ही कीर्तन और भजनों की रचना की थी। भक्तिवाद से भारतीय भाषाओं में देशी साहित्य का विकास हुआ। हिंदी भाषा में सूरदास ने 'सूर-सागर', तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' की रचना की थी। मराठी में अभंग जैसे कीर्तनों के साथ ज्ञानदेव की ज्ञानेश्वरी काव्यों की रचना हुई।

अभ्यास :

I. रिक्त स्थान में उचित शब्द भरिए :

1. भक्ति का अर्थ है ईश्वर में शुद्ध _____ रखना।
2. रमानंद के सबसे प्रसिद्ध शिष्य का नाम _____ था।
3. कबीर के अनुयायियों को _____ कहकर पुकारा जाता है।
4. चैतन्य के आध्यात्मिक चिंतनों का संग्रह _____ है।
5. 'रामध्यान चरित्र' के रचयिता _____।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

6. राम-सीता की पूजा को किसने लोकप्रिय किया? उनकी सेवाएँ क्या-क्या हैं?
7. सिक्ख कौन थे? उनके पवित्र ग्रंथ का नाम लिखिए।
8. असम की सांस्कृतिक तथा धार्मिक इतिहास में श्रीमंत शंकरदेव की भूमिका कैसे महत्वपूर्ण है, बताइए?
9. पुरंदरदास की भक्ति के बारे में बताए गए बिंदुओं को स्पष्ट करें।
10. भक्ति आंदोलन के परिणाम क्या थे?

III. गतिविधियाँ :

1. भक्ति सुधारकों के जीवन चरित्र को जानिये।
2. अपने अध्यापक से धर्म-सुधारकों की पूर्ण जानकारी प्राप्त कीजिए।

IV. परियोजना कार्य:

1. भक्तिवाद के सुधारकों में से किसी एक के बारे में परियोजना तैयार कीजिए।
2. समूहों में छात्रों को बाँटकर विभाजित कर भक्ति मार्ग के प्रत्येक सुधारक के लिए योजनाएँ बनाएँ ।
3. कनकदास और पुरंदरदास के कीर्तनों में छिपे हुए मूल्यों के बारे में अपने शिक्षक की सहायता से चर्चा कीजिए।
4. कनकदास और पुरंदरदास के कीर्तनों का अभ्यास कीजिए।

@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय 19

यूरोप - मध्ययुग और आधुनिक युग



इस अध्याय में हम निम्नलिखित अंशों को जानेंगे।

- मध्यकालीन सामंती व्यवस्था ।
- पुनर्जागरण के कारण और परिणाम ।
- भौगोलिक खोज और परिणाम ।
- धर्म सुधार के कारण और परिणाम ।
- औद्योगिक क्रांति और परिणाम ।

मध्या कालीन यूरोप

पाँचवी से पंद्रहवी शताब्दी तक की अवधि को यूरोपीय मध्य युग के रूप में जाना जाता है, जो रोमन साम्राज्य के पतन के साथ शुरू हुआ और 1453 ई. में कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन के साथ समाप्त हुआ । रोमन साम्राज्य के पतन के बाद यूरोप में पाई जाने वाली व्यवस्था ही सामंतवादी थी। यह प्रणाली एक भूमि स्वामित्व प्रणाली थी, जिसका गठन राजनीतिक और आर्थिक दोनों रूप से हुआ था। यह निश्चित सेवाओं को प्राप्त करने के लिए उत्पन्न एक प्रणाली थी। यह शक्तिशाली और कमज़ोरों के बीच एक समझौता था। जो ज़मीन का स्वामित्व प्राप्त कर शक्तिशाली बना वही रईस था, उसी ज़मीन का भू-स्वामित्व देकर खेती करने वाला अशक्त व्यक्ति काश्तकार कहलाता था। मध्य युग के सभी यूरोपीय वर्गों और संघ-संस्थाओं में इस प्रणाली और प्रकार का प्रारूप अस्तित्व में आया। इस प्रणाली का परिणाम उच्च अभिजात वर्ग का उदय हुआ। ज़मींदार-काश्तकारों और रईसों के बीच विवाद शुरू हो गए। इस संकट से सामंती संधियाँ टूट गईं।

15वीं शताब्दी तक कई घटनाओं के कारण इस व्यवस्था का पतन हो गया था। इंग्लैंड, फ्रांस और स्पेन के शक्तिशाली सम्राट घरानों से सामंतवाद व्यवस्था का पतन हो गया था। प्रांतीय भाषा का विकास, राष्ट्रीय भावना, प्रभुओं के अभिजात वर्ग की महत्वाकांक्षा, इसके विनाश का कारण बनी। 16वीं शताब्दी तक यूरोप नए युग में प्रवेश कर चुका था। यूरोप का आधुनिक युग तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल की विजय के साथ एक प्रमुख घटना बन गयी। जिससे व्यापार गतिविधि, पुनर्जागरण, भौगोलिक खोज, धार्मिक सुधार आंदोलन और औद्योगिक क्रांति में वृद्धि हुई।

आधुनिक यूरोप पुनर्जागरण (The Renaissance) :

आधुनिक यूरोप की शुरुआत पुनर्जागरण से हुई। पुनर्जागरण शब्द का अर्थ है पुनर्जागृति। यह यूरोप के मध्य युग के अंत में हुए सभी बौद्धिक परिवर्तनों को कुल मिलाकर सूचित करनेवाला शब्द कहा जाता है। 14 वीं और 15 वीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप की कला, वास्तुशिल्प, धर्म, दर्शनशास्त्र, विज्ञान और राजनैतिक विचारों के विकास को सूचित करता है। ज्ञान पुनर्जागरण आंदोलन पहले इटली देश में प्रारंभ हुआ। इसके बाद यह आंदोलन यूरोप के अन्य क्षेत्रों में भी फैल गया। इसलिए इटली को 'पुनर्जागरण' का जन्मस्थान कहा गया है।

पुनर्जागरण के कारण :

1453 में कॉन्स्टेंटिनोपल का पतन, सामंतवाद का पतन, जर्मनी के गुटेनबर्ग के प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार और भौगोलिक खोज महत्वपूर्ण थे। यूरोपीय राजकुमारों, रईसों, व्यापारियों और पादरियों ने विद्वानों, कलाकारों, वैज्ञानिकों और दार्शनिकों को पोषित करना और अन्य कारक तत्वों ने पुनर्जागरण में योगदान दिया।

पुनर्जागरण के लक्षण :

- 1) पुनर्जागरण काल के लोगों का दृष्टिकोण मध्ययुग से बिल्कुल भिन्न था। संसार और मानव के बारे में लोगों का अभिप्राय बदल गया। इसे मानवतावाद की संज्ञा दी गई। मानवतावादियों ने उत्कृष्ट साहित्य के क्षेत्र में अपनी रुचि बढ़ाई। मानव जीवन से सम्बंधित नीति और अनुशासन पर बल देने का प्रयत्न किया।
- 2) पुनर्जागरण काल के लेखकों से लेकर अंग्रेजी, इटली तथा जर्मन भाषा में साहित्यों की समृद्धि हुई।
- 3) आर्थिक और सामाजिक जीवन में परिवर्तन हुए। खेतीबड़ी करनेवालों का जीवन वाणिज्य और औद्योगिक क्रियाकलापों में बदलाव हुआ। सामाजिक सम्बन्धों में भी मूलभूत परिवर्तन हुए।
- 4) पुनर्जागरण का मुख्य लक्षण यह था कि श्रेष्ठ संस्कृति के बारे में अपनी रुचि के आधार पर जानकारी प्राप्त करके जो स्वयं को श्रेष्ठ लगे, उसका अनुकरण करने की प्रवृत्ति लोगों में थी। इसे 'श्रेष्ठानुकरण' नाम से पुकारा जाता है।
- 5) ग्रीस और रोम के विद्वान इटली में आकर रहने लगे थे।

पुनर्जागरण का साहित्य :

आधुनिक यूरोप का आरंभ पुनर्जागरण के साथ हुआ। इटली अनेक दिग्गज साहित्यकारों का केन्द्र स्थान था। फ्रांस, इंग्लैण्ड, जर्मनी और स्पेन देश ने साहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान दिया था। इस काल में साहित्य का सारांश धार्मिक न होकर सांसारिक जीवन निर्वाह करने के बारे में था। मानव का शरीर और अंग सौष्ठव जैसे विषयों पर साहित्य लिखे जाते थे। लैटिन भाषा के स्थान पर यूरोप की प्रादेशिक भाषाओं में साहित्य लिखे जाने लगे थे।

पेट्रार्क (1304 - 1374) :

पेट्रार्क को 'पुनर्जागरण का जनक' नाम से जाना जाता है। इसने लगभग 200 लैटिन और ग्रीक हस्तप्रतियों का संग्रह किया था। पेट्रार्क के प्रसिद्ध काव्य का नाम 'अफ्रीका' था। इसकी रचना लैटिन भाषा में की गई थी। पेट्रार्क अनेक गीतों और सॉनेट की रचना के लिए प्रख्यात था। मनुष्य जो अपने जीवनकाल में सुख-दुख भोगता है, इस विषय पर पेट्रार्क ने अपनी गहरी सोच को कविताओं में व्यक्त किया था।



पेट्रार्क

'बोकाषियो ने इटालियन भाषा में 'डेकामेरा' नामक सौ कहानियों का संग्रह लिखा था। दांते ने 'डिवाइन कॉमेडी' की रचना की थी। चासर ने अंग्रेजी भाषा में 'कैंटरबरी टेल्स' नामक कहानियों के संग्रह को प्रकाशित किया था। स्पेन के सरवेंटिस ने दाँन किहोत्ते नामक ग्रंथ लिखा था। इंग्लैंड के थामस मोर ने 'युटोपिया' नामक पुस्तक लिखी थी। इंग्लैंड के शेक्सपियर महान कवि और लेखक, नाटककार भी थे। इन्होंने अनेक प्रसिद्ध सुखांत और दुःखांत नाटकों की रचना की थी। नए ज्ञान को सीखने के लिए लंदन में सेंट पॉल स्कूल की स्थापना की गयी थी।

पुनर्जागरण काल में कला (वास्तुशिल्प और शिल्पकला) :

इस काल की कला अत्यंत सरल एवम् स्वाभाविक भी थी। पौराणिक पात्र, देवपुत्र, ईसामसीह और उनके शिष्यों को मानव सहज भावनाओं के साथ चित्रकारों ने तैयार किया था।

16वीं शताब्दी में इटली में अनेक कलाकार थे। माइकल एंजेलो, राफेल, लियानार्डो-द-विंची, टिटियन प्रमुख कलाकार थे। माइकल एंजेलो के एडम तथा 'अंतिम निर्णय' लियानार्डो-द-विंची का 'लास्ट सप्पर' और 'मोनालिसा' राफेल द्वारा चित्रित 'सिस्टाइन मडोना' और टिटियन द्वारा चित्रित 'असंश्लिष्ट ऑफ दी वर्जिन' प्रमुख वर्णचित्र थे।

पुनर्जागरण काल में विज्ञान : (आधुनिक विज्ञान का जन्म)

पुनर्जागरण काल से ही आधुनिक विज्ञान का जन्म हुआ। विज्ञान ने धार्मिक विश्वासों को किनारे कर नए अनुसंधानों को प्रकट किया। 'मानव के बारे में समझने में रुचि' इस काल के नए आविष्कारों का शुरुवात थी। मध्यकाल में जनसामान्य बिना कोई प्रश्न किये सब कुछ मान लेते थे। आवश्यकता और प्रश्न करने



पुनर्जागरण काल

की प्रवृत्ति बढ़ने से वैज्ञानिक अनुसंधान भी बढ़ने लगे। फ्रांसिस बेकन के अनुसार प्राचीन काल के वैज्ञानिक स्पष्टीकरण वर्तमान काल के अनुसंधान का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते हैं। डेस्कार्टिस को संदेह के मार्ग को एक देन है, इसके अनुसार किसी विचार को स्वीकार करने से पहले यदि संदेह हो तो हमें प्रश्न करना चाहिए, इस बात पर बल दिया गया था। ग्रीस देश के टाल्मी ने माना था कि भूमि के चारों ओर ग्रह परिभ्रमण करते हैं। इस बात को झुठलाते हुए पोलैंड के कोपरनिकस ने कहा कि - 'सूर्य केन्द्र में स्थित है' और उसके चारों ओर भूमि सहित अन्य ग्रह परिभ्रमण करते हैं।

केप्लर :

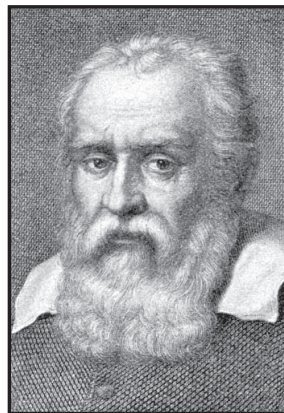
केप्लर जर्मनी का एक वैज्ञानिक था। इसने बताया था कि ग्रह सूर्य के चारों ओर गोलाकार रूप में परिभ्रमण करते हैं।



केप्लर

गेलिलियो :

गेलिलियो ने दूरदर्शक (**Telescop**) का आविष्कार किया था। इसने कोपरनिकस की परिकल्पना को सही माना था। चर्च के दबाव पर उसने अपने कथन को वापस लिया।



गेलिलियो

न्यूटन :

न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का परिपालन किया था। न्यूटन ने यह भी कहा था कि सभी आकाशकायों का चलन गुरुत्वाकर्षण के नियंत्रण में शामिल हैं। रसायनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, शरीर विज्ञान के बारे में शौक से अध्ययन व अनुसंधान किया जाने लगा। एंडियो वसालियस ने शरीर की शस्त्र-चिकित्सा कर माँस पेशियों, मस्तिष्क, पाचन-तंत्र, (जननेन्द्रिय) इन सब आंतरिक अंगों की प्रभावशाली तरीके से चिकित्सा को प्रतिपादित कर शरीर शास्त्र पर वैज्ञानिक ग्रंथ भी लिखा था।



न्यूटन

पुनर्जागरण के परिणाम:

पुनर्जागरण के दौरान लौकिक जीवन शैली का विकास हुआ। दुनिया की वैज्ञानिक दृष्टि बढ़ी। तारों की गति का ज्ञान बढ़ा, समुद्र मार्ग की खोज और भूअन्वेषण संभव हुआ। औद्योगिक क्रांति वैज्ञानिक खोजों और प्रौद्योगिकी से संभव हुई। अंधे श्रद्धा की निंदा की गई। नई-नई विचारधाराओं को प्रोत्साहित किया गया। नई दृष्टि ने कैथोलिक चर्च या धार्मिक सुधार आंदोलन को जन्म दिया।

भौगोलिक खोजें:

16वीं शताब्दी को भौगोलिक खोजों का युग कहा गया है। मध्य युग के अंत तक, यूरोपीय लोगों को भूगोल का कम ज्ञान था। बाद के घटनाक्रमों में, यूरोपीय लोगों ने दुनिया के कई हिस्सों के लिए समुद्री मार्ग की खोज की। नए महाद्वीप उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया उभरे हैं।

ज्ञात कीजिए :

अमेरिगो वेस्पुसी ने अमेजान नदी के मुख भाग का पता लगाया। उसे लगा कि यह कोई एक नया महाद्वीप है। तब इसे अमेरिका नाम दिया गया था।



दिशासूची

नाविक अपने गंतव्य की दूरी, दिशा एवम् मार्ग का पता लगाने के लिए इस साधन का इस्तेमाल करते थे।



अस्ट्रोलोब

यह सूर्य और ग्रह, अनेक नक्षत्र, भूमि से कितनी दूर हैं और काल की जानकारी देनेवाला साधन है।

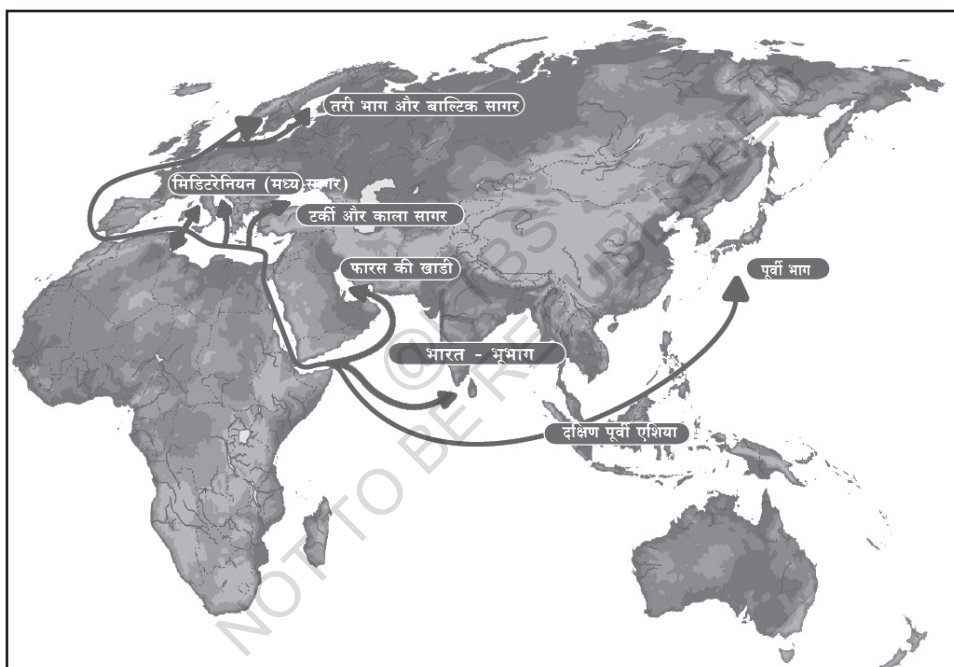
भौगोलिक खोजों के तत्व :

- 1) 1453 ई तुर्कों ने कांस्टांटिनोपल नगर पर कब्जा करने के फलस्वरूप पूर्वी देशों और पश्चिमी देशों के बीच व्यापार के दरवाजे खुल गए। परिणाम स्वरूप भारत से आयात किये जानेवाला मसाले पदार्थों से तुर्कों को अत्यधिक लाभ होने लगा। इसलिए यूरोपवासियों को भारत तक पहुँचने के लिए नए समुद्री मार्ग की खोज करना अत्यंत अनिवार्य हो गया।
- 2) स्पेन और पुर्तगाल देश, अरब समुद्री व्यापारियों से वाणिज्य क्षेत्र में प्रतियोगिता की भावना लिए हुए थे।
- 3) ईसाई मिशनरियाँ अपने धर्म का प्रचार करने के लिए नए देशों की खोज में लगी थी।
- 4) पूर्वी देशों की तरफ समुद्री यात्रा करने का जोखिम यूरोपवासियों ने उठाया था और उनमें एक रोमांचक एवम् कुतूहल की भावना जागृत होने लगी।

- 5) नाविकों को दिशा निर्देश दर्शानेवाले कंपास, एस्ट्रोलोब उपकरण मानचित्र और नक्शा नाविकों को समुद्री यात्रा करने के लिए सहायक बने ।
- 6) यूरोप के लोगो ने लाभ प्राप्त करने की दृष्टि से चीना को अत्यंत समृद्धशाली देश समझा।

भौगोलिक अनुसंधान :

मध्ययुग के बाद में नए स्थानों की खोज में स्पेन और पुर्तगाल देश प्रमुख थे। नाविक हेनरी द्वारा बेजेगये अनेक नाविकों ने दीर्घकाल समुद्री यात्रा करके अफ्रीका के पश्चिमी तट से लेकर दक्षिणी छोर तक का मार्ग खोज निकाला।



विश्व का मानचित्र (नया समुद्री मार्ग)

बार्थोलोम्या डयाज़ नामक नाविक ने अफ्रीका के दक्षिणी छोर पर पहुँचकर उस क्षेत्र को 'केप ऑफ गुड़ होप' नाम दिया। 1498 ई० में वास्को-डगामा ने केप ऑफ गुड़ होप पहुँचकर आगे हिन्द महासागर को पार करके भारत के कालिकट (वर्तमान केरल का एक स्थान) पहुँचा था। समुद्री मार्ग से भारत में पहुँचने का यूरोपवासियों का सपना पूरा हो गया।

जिनेवा नगर का नाविक क्रिस्टोफर कोलंबस स्पेन के राजा की सहायता से 1492 ई. में अटलांटिक महासागर को पर करके वेस्ट इंडीज़ (केरेबियंस) बहामा द्वीप पर पहुँचा।

कब्राल एक पुर्तगाली नाविक था। इसने 1500 ई0 में ब्राजील देश पहुँचा तो बलभोवा ने पनामा जलसंधि के निकट एक पहाड़ पर चढ़कर पश्चिम में विशाल महासागर को देखा। जिसे आज प्रशांत महासागर नाम से जाना जाता है। फर्डिनांड मैगेलन भी पुर्तगाली नाविक था। इसने कुल पाँच महीने में पृथ्वी का पूरा एक चक्कर लगाया था। सन् 1520 में उसने दक्षिणी अमेरिका का पता लगाया वहाँ से हिंदमहासागर से होते हुए फिलीपींस पहुँचा। उसका एक जहाज वर्तमान के इंडोनेशिया द्वीप के मध्य से होकर गुजरा और पृथ्वी की प्रथम परिक्रमा की। और केप ऑफ गुड होप मार्ग से होते हुए स्पेन पहुँचा।

भौगोलिक अनुसंधान के परिणाम:

- 1) नव विकसित क्षेत्रों में उपनिवेशीकरण और साम्राज्य निर्माण के लिए यूरोपीय देशों के बीच प्रतिस्पर्धा शुरू हुई। अमेरिका, अफ्रीका और एशिया में वाणिज्य के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ी। विजित देशों पर वाणिज्य के एकाधिकार को सक्षम बनाया।
- 2) उपनिवेशों के कच्चे माल की वजह से यूरोपीय कंपनियाँ अमीर बन गईं।
- 3) यूरोप में पूँजीवाद का विकास हुआ और औद्योगिक क्रांति शुरू हुई।
- 4) ईसाई मिशनरियों ने ईसाई धर्म को बढ़ावा देने के लिए दुनिया में हर जगह यात्रा की।
- 5) उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विकास ने मूल निवासियों और विदेशियों के बीच शत्रुता को जन्म दिया।
- 6) उत्तरी अमेरिका के आर्थिक विकास के लिए अफ्रीकी दासों का उपयोग जब से आरंभ हुआ तब से दास व्यापार अस्तित्व में आया ।

धार्मिक सुधार :

16वीं शताब्दी में यूरोप में रोमन कैथोलिक चर्च के अधिकार एवं एकाधिकार को चुनौती देते शुरू हुई आंदोलन धार्मिक सुधार के लिए कारण बने। इस आंदोलन का शुरू-आत मार्टिन-लूथर ने जर्मन में की ।

धार्मिक सुधार आंदोलन के कारण :-

- 1) ईसाई सन्यासी और पोप का भोग-विलास जीवन और राजनीति में रुचि।
- 2) क्षमा के नाम पर चर्च द्वारा भ्रष्टाचार।
- 3) महल और चर्च के बीच सत्ता के लिए संघर्ष।
- 4) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय।
- 5) मूल हिब्रू भाषा से बाइबल का अनुवाद अनेक भाषाओं में की जाने लगी तो चर्च ने इसका विरोध किया।
- 6) नई राष्ट्रीय प्रभुत्व का उदय और यह समझ कि राष्ट्रवाद धार्मिक भक्ति से बड़ा है।

मार्टिन लूथर (1483 - 1546) :

मार्टिन लूथर द्वारा आरंभ किया गया आंदोलन 'धार्मिक सुधार' नाम से विख्यात हुआ। मार्टिन लूथर ने कैथोलिक चर्च के उपदेशों एवम् शिक्षाओं को स्वीकार करने से इंकार किया और उन्हें अमान्य माना। 1517 में चर्च के द्वारा पापक्षमा नामक पत्रों के बेचे जाने के विरुद्ध मार्टिन लूथर ने अपनी आवाज़ उठाई थी। जनता द्वारा किये गए पाप के लिए निर्धारित दण्ड को कम करने का अधिकार पोप को भगवान से मिला है। ईसा मसीह और पादरियों के द्वारा किए गए अच्छे कार्यों के लिए उन्हें ऐसा अधिकार मिला है, ऐसा अभिप्राय कैथोलिक चर्च के पादरियों में था। मार्टिन लूथर के अनुसार पापों की क्षमा के लिए व्यक्ति को स्वयं अच्छे कार्य करना चाहिए। किंतु कई संदर्भों में ऐसा न करके चर्च में धन जमा करने का काम कर क्षमा याचना करते थे। मार्टिन लूथर ने चर्चों द्वारा क्षमायाचना की बिक्री का तीव्र विरोध किया। मार्टिन लूथर के अनुयायियों को 'प्रोटेस्टेंट' नाम से जाना जाता है। उस समय जर्मनी में आधी से ज़्यादा जनसंख्या प्रोटेस्टेंट समुदायवालों की थी।



मार्टिन लूथर

धार्मिक सुधार ने यूरोप में कुछ अलग ही मार्ग अपनाया और धार्मिक वातावरण कलुषित हो गया। सारे यूरोप में लोगों को अपने भिन्न विश्वास के नाम पर प्राण त्यागने पड़े। कुछ लोगों के अधिकार को छीन लिया गया। रोमन कैथोलिक जिन क्षेत्रों में बहुतायत संख्या में

निवास करते थे; वहाँ में धार्मिक सुधारों के लिए सरकार की तरफ से जो सहायता मिलती थी, उन क्षेत्रों में प्रोटेस्टेंट लोग कैथोलिक ईसाइयों को यातनाएँ देते थे। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के बीच में तीस वर्ष तक परस्पर द्वेष और संघर्ष चलता रहा था ।

धार्मिक सुधार के परिणाम :

- 1) धार्मिक सुधार के परिणाम स्वरूप ईसाइयों को धार्मिक एकता भंग हो गई। इसाई धर्म मुख्य रूप से तीन भागों में बंट गया। वे हैं - कैथोलिक चर्च, रूढ़िवादी चर्च और प्रोटेस्टेंट चर्च ।
- 2) यूरोप के अनेक देशों के राजा चर्च के नियंत्रण से स्वतंत्र हो गए।
- 3) धर्मसुधार से राष्ट्रीय प्रभुत्वों का अधिकार को स्थिर किया।
- 4) चर्च की संपत्ति पर वहाँ की सरकारों का अधिकार हो गया था। चर्च की संपत्ति का इस्तेमाल आर्थिक प्रगति के लिए सुनिश्चित किया गया।
- 5) यूरोप के राजाओं ने धार्मिक सहिष्णुता की भावना को अपनाया ।
- 6) प्रादेशिक भाषाएँ सामने आई और देश की भाषाओं में विपुल साहित्य का सृजन हुआ ।
- 7) कैथोलिक चर्च के अंतर्गत ही अनेक सुधार हुए जो आगे चलकर 'प्रतिसुधार' आंदोलन के नाम से शुरू हुआ।

प्रतिसुधार आंदोलन :

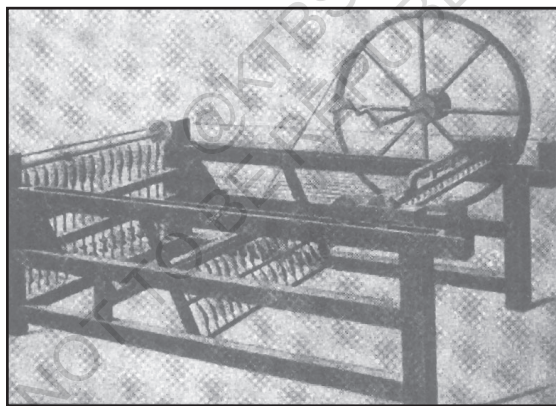
प्रोटेस्टेंट पंथ बड़ी तेज़ी से लोगों पर प्रभाव डालते हुए सर्वत्र फैल गया। इससे कैथोलिक पंथ के संरक्षक जागृत होकर अपने पंथ के अस्तित्व को बचाने के उद्देश्य से कैथोलिक पंथ में आवश्यक सुधार करने की बात को महसूस कर रहे थे। इस घटना ने रोमन चर्च के अस्तित्व की रक्षा पर आघात किया। चर्च की रक्षा के लिए कोई न कोई सुधार करना ही पड़ा। प्रोटेस्टेंट वालों के वाद और तर्क से सामान्य लोग प्रभावित हुए। ऐसे आवश्यक सुधार ने ही प्रतिसुधार आंदोलन को जन्म दिया। प्रोटेस्टेंट पंथ की उन्नति को रोककर रोमन चर्च को हुए नुकसान को सुधारना ही इस आंदोलन का उद्देश्य था। इसलिए गिरजाघरों में आंतरिक सुधार करके सब समस्याओं का निवारण करने का प्रयत्न चला। अधिकारों के दुरुपयोग को रोका गया। चर्च की प्रशासन व्यवस्था में सुधार किया गया।

इस प्रति सुधार आंदोलन का नेता एक स्पैनिश धनवान, इग्नेशियस लयोला था। इसने 1540 ई0 में जीसस सोसाइटी की स्थापना की थी। इनका प्रमुख उद्देश्य रोमन कैथोलिक चर्च के अधिकारों और खोये हुए वर्चस्व को पुनः स्थापित करना था। इस संघ के अनुयायियों को अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण देकर समाज की सेवा के लिए अपने जीवन को समर्पण करना ही इन का उद्देश्य था।

चर्च के नियमों का उल्लंघन करनेवालों के विरुद्ध अनुशासनिक कार्यवाही और दण्ड देने की बात 'इंकविजिशन' नामक धार्मिक पूछपाछ की पद्धति 1542 ई. से जारी में आयी थी। इस पद्धति ने कैथोलिक से प्रोटेस्टेंट पंथ में शामिल होने की सारी गुंजाइशों को समाप्त कर दिया।

औद्योगिक क्रांति :

18वीं सदी के यूरोप में मशीनीकृत उद्योगों के कारण उत्पादन में भारी वृद्धि हुई, जिसे 'औद्योगिक क्रांति' कहा जाता है, जो सबसे पहले इंग्लैंड में शुरू हुई थी।



स्पिनिंगजैन्नी नामक यंत्र

औद्योगिक क्रांति के कारण :

- 1) पुनर्जागरण के प्रभाव से संभव हुई, वैज्ञानिक खोजों से मशीनों का निर्माण संभव हुआ ।
- 2) उपनिवेशों की स्थापना से व्यापार में वृद्धि हुई और निर्मित वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई ।
- 3) उपनिवेशों ने कम दूरों पर भारी मात्रा में कच्चे माल की आपूर्ति की ।

4) औद्योगिक श्रमिक वर्ग का उदय ।

5) पूंजी निवेश में वृद्धि ।

6) इंग्लैंड में राजनीतिक स्थिरता ।

1760 ई. से पहले इंग्लैंड कृषि-प्रधान देश था।

कृषि के अलावा ऊनी कपड़े और सूती कपड़ों का उद्योग देश में विकसित था। इंग्लैंड के बाजारों में तैयार वस्तुओं की माँग बढ़ गयी। लेकिन माँग के अनुरूप उत्पादन नहीं होता था। कुशल कर्मि कच्चे माल पर अधिक पूंजी लगाकर उत्पादन विधान मे

तेज़ी नहीं ला सके। इसलिए कुछ पूंजीपति कुशल कारीगरों को काम पर नियुक्त करके उन्हें कच्चेमाल की आपूर्ति करवा कर कारखाने के आकारवाले बड़े-बड़े गोदमों में काम करवाते थे। यही प्रणाली आगे चलकर कारखाना पद्धति नाम से प्रसिद्ध हुई। कारखानों के मालिकों के द्वारा तैयार वस्तुओं को बेचकर अधिक लाभ कमाते थे। लेकिन कुशल कारीगर और मज़दूर गरीब के गरीब रह गए।

चर्चा कीजिए:

पूर्व की औद्योगिक क्रांति आज के ।
आर्थिक विकास में पूरक है। इस पर
चर्चा कीजिए।

1760 ई. से लेकर 1830 ई. के बीच में इंग्लैंड में वस्त्रोद्योग के क्षेत्र में काफी बड़ा बदलाव हुआ।

ज्ञात रहें :

1764 ई. में जेम्स हारग्रीव्स ने 'स्पिन्निंग जेन्नी' नामक सूत-कताई के यंत्र का आविष्कार किया। कुछ वर्षों के बाद रिचर्ड आर्कराइट ने स्पिन्निंग जेन्नी यंत्र में बेहतर सुधार किया और 1769 ई. में उसने जल चालित चौखटे का आविष्कार किया ।

1779 ई. में सेम्यूअल कैपटन ने 'म्यूल' यंत्र का आविष्कार किया। जॉन.के.ने एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने वाले नाल (लूम) का आविष्कार किया। 1785 ई. में एडमंड कार्टराइट ने बुनाईयंत्र (पावर लूम) का आविष्कार किया। इस आविष्कार से अधिक वस्त्रों को कम समय में उत्पादन करना संभव हो पाया ।

1793 ई0 में एली. विट्नी ने 'कॉटन जिन' नामक यंत्र का आविष्कार किया था। इन सब आविष्कारों से धागा बनाने, रुई से बीज अलग करने के साथ-साथ उत्पादन तेज़ी से होने लगा।

वाष्प के इंजन का आविष्कार औद्योगिक क्रांति के दौरान एक और मील का पत्थर था। 1705 ई. में थॉमस म्याकोमस ने स्टीम इंजन का आविष्कार किया था। 1774 ई. में जेम्सवाट ने इस वाष्प के इंजन को बेहतर बनाया। 1801 ई. में रिचर्ड ट्रेवेथिक ने जेम्सवाट के इंजन को ट्रेन से जोड़ दिया और उसे सड़क पर दौड़ने योग्य बनाया। उसके बाद ट्रेवेथिक ने पटरियों पर चलनेवाली स्वयंचलित वाष्प इंजन का आविष्कार किया। जॉर्ज स्टीफनसन ने 1815 ई. में सामान ढोनेवाली रेल गाड़ी का आविष्कार किया। इंग्लैंड के स्वाकटन और डार्लिंगटन नगरों के बीच में यात्रियों को ले जानेवाली रेलगाड़ी का आविष्कार किया। लीवरपुल और मैनचेस्टर के बीच में औद्योगिक उत्पाद को पहुँचाने के लिए रेलमार्ग का निर्माण किया गया।

1801 ई. में विलियम सिमिंगटन नामक अमरीकी विद्वान ने जेम्स वाट के इंजन को नाव से जोड़कर चलने योग्य बनाया। राबर्ट फुल्टन नामक अमरीकी निवासी ने ऐसे ही वाष्प जहाज (स्टीम बोट) का आविष्कार किया।

प्रभाव: उद्यमों में कई बदलावों के परिणाम स्वरूप मशीनों की माँग में वृद्धि हुई। औद्योगिक क्रांति से आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में कई बदलाव हुए। नए उद्योग सामने आए। उत्पादन की लागत कम हो गई और जीवन यापन की आवश्यक वस्तुएँ सस्ती हो गई। बड़े उद्यमों से प्रतिस्पर्धा किए बिना गृह उद्योग नष्ट हो गए। अमीर, अमीर होता गया और गरीब, गरीब। लोगों को गाँवों से शहरों की ओर पलायन करना पड़ा। जैसे-जैसे समाज में पूँजीपति वर्ग का उदय हुआ, मालिकों और श्रमिकों के बीच संबंध बिगड़ते गए और वर्ग संघर्ष शुरू हो गया।

अभ्यास :

I. रिक्त स्थान में उपयुक्त शब्द भरिए :

1. पुनर्जागरण का अर्थ _____ है।
2. पुनर्जागरण का जनक _____ को माना जाता है।
3. मार्टिन लूथर के अनुयायियों का नाम _____ था।
4. प्रति सुधार आंदोलन के नायक का नाम _____ था।
5. औद्योगिक क्रांति सबसे पहले _____ में शुरू हुई।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

6. धार्मिक सुधार आंदोलन के क्या परिणाम थे ?
7. भौगोलिक खोजों को निर्धारित करनेवाले कौन-कौन से कारक-तत्व थे ?
8. लियोनार्डो-द-विंची के मुख्य वर्ण चित्र कौन-कौन से हैं ?
9. पुनर्जागरण काल में साहित्य के विकास के बारे में उदाहरण सहित विवरण लिखिए।
10. औद्योगिक क्रांति के परिणामों के बारे में लिखिए।

III. गतिविधियाँ :

1. अपने अध्यापक से पुनर्जागरण काल के वैज्ञानिकों के बारे में जानकारी हासिल कीजिए।
2. औद्योगिक क्रांति के दौरान आविष्कार किए गए यंत्रों के चित्र संग्रह कीजिए।

IV. परियोजना कार्य :

1. पुनर्जागरण काल के कलाकारों (चित्रकारों) द्वारा बनाये गए चित्रों को संग्रह कीजिए।
2. पुनर्जागरण काल के वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान किए गए विषयों की सूची तैयार कीजिए।
3. अपने विद्यालय के चित्रकला शिक्षक से वर्तमान प्रसिद्ध चित्रकारों की जीवनी के बारे में जानिए और संग्रह कीजिए।
4. यूरोप के वैज्ञानिकों के प्राचीन तथा भारतीय मध्यकालीन वैज्ञानिकों के नाम और आविष्कारों की सूची तैयार कीजिए।

क्रांति और राष्ट्रों के आधिपत्यों का उदय



इस अध्याय में निम्नलिखित अंशों की जानकारी मिलती है -

- राष्ट्रीय प्रभुत्व का उदय और विकास ।
- अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम के कारण और परिणाम ।
- फ्रांस की महाक्रांति के कारण ।
- इटली और जर्मनी का एकीकरण ।

आधुनिक युग की प्रारंभिक स्थिति को दर्शानेवाला मुख्य अंश राष्ट्रीय प्रभुत्व का उगम है। सामान्यतः 15, 16 और 17 वीं शताब्दी में स्थित इन राज्यों की रचना तर्कसंगत नहीं थी। राज्य चक्राधिपत्य से लेकर नगर-राज्यों तक विविधता थी। राज्यों में जो लोग निवास करते थे : वे विविध जाति, वर्ण और पीढ़ी से संबंधित थे। इतना ही नहीं वे अलग-अलग भाषा बोलते थे और उनकी राष्ट्रीयता भी अलग थी। लोगों की संस्कृति भी भिन्न-भिन्न थी।

सामान्तरवाद के अवनति के बाद सामंतों की राजनीतिक शक्ति भी कम हो गई। यूरोप के अनेक राजाओं ने सामंतों पर अपना कड़ा नियंत्रण रखा था। लेकिन कुछ समय बाद राजा जो सामंतों पर अवलंबित थे उन्होंने आत्मनिर्भर होकर सब अधिकार अपने पास रखे। अनेक राजा प्रशासन को भगवान से प्राप्त अधिकार (Divine Right) मानते थे और उन्होंने महसूस किया कि प्रजा को उत्तर देना कोई जरूरी नहीं है।

मध्यम वर्ग के लोगों ने अपने हित की दृष्टि से राजा को समर्थन दिया। उन्होंने राष्ट्रीय प्रभुत्वों के उदय और विकास में अपना योगदान दिया। लोगों में अपने देश के प्रति राष्ट्रीयता की भावना अथवा अत्यधिक देशप्रेम को भावना थी। इस भावना के साथ ही कुछ अच्छे और कुछ बुरे प्रभाव भी पड़े। इन राष्ट्रों ने सामन्तवाद के काल का अराजकता को दूर किया। राष्ट्र प्रभुत्वों ने एक ही तरह की संस्कृति का पालन करनेवाले लोगों को एक ही राजा के शासन के अधीन लोगों को संघटित किया। राष्ट्र-राष्ट्रों के बीच संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धा शुरू हुई।

अमेरिका और एशिया महाद्वीप में व्यापार और उपनिवेशों पर नियंत्रण रखने के लिए संघर्ष तथा युद्ध होने लगे।

**उत्तर अमरीका में
13 अंग्रेजों के उपनिवेश**

- 1) न्यू हैम्पशैर
- 2) न्यूयार्क
- 3) पेन्सिलवेनिया
- 4) मसाचुसेट्स
- 5) रोड्स आयलैंड
- 6) कनेक्टिकट
- 7) न्यूजेर्सी
- 8) दिलावेर
- 9) मैरीलैण्ड
- 10) वर्जीनिया
- 11) उत्तर केरोलिना
- 12) दक्षिण केरोलिना
- 13) जॉर्जिया

अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम

उत्तर अमेरिका महाद्वीप की खोज के बाद यूरोप के अनेक देशों ने अमरीका में उपनिवेशों की स्थापना करना प्रारंभ कर दिया। उत्तर अमरीका में फ्रांस, स्पेन, हॉलैण्ड और इंग्लैंड ने उपनिवेशों की स्थापना की थी। उत्तर अमरीका के पूर्वी तटीय क्षेत्र जो कि अटलांटिक महासागर से जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र में इंग्लैण्ड ने तेरह उपनिवेशों को स्थापना की थी। इन्हें “नए अंग्रेजी उपनिवेश नाम से जाना जाता था। उत्तर अमरीका में उपनिवेश” को स्थापना के विषय में फ्रांस और इंग्लैंड में परस्पर प्रतिस्पर्धा की भावना थी। 13 उपनिवेशों के लोगों में स्वतंत्र होने को प्रबल इच्छा होने के कारण उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध दंगे करने लगे।

कारण : उपनिवेशों के बारे में मातृदेश की धारण और उपनिवेशों के लोगों में स्वतंत्र होने की इच्छा, सप्तवार्षिक युद्धों के परिणाम, नौसंचालन अधिनियम, थामस फैज, जॉन एडम्स, सैम्युवेल एडम्स, जॉन एडवर्ड, कोक, बेंजमिन फ्रेंकलिन, आदि लेखकों के प्रभाव, क्यूबेक अधिनियम, टाउनशेंड कर (Tax) और बोस्टन चाय पार्टी आदि कारणों से अमरीका में क्रांति हुई थी।

ज्ञात रहे:

सप्तवार्षिक युद्ध (1756 - 63) : फ्रांस और इंग्लैण्ड के बीच में हुआ था। नौसंचालन अधिनियम 1760 ई में लागू हुआ था। इंग्लैण्ड के उपनिवेश समुद्र व्यापार में इंग्लैण्ड को एकाधिकार का मौका मिला था। 1764 में लागू आये मोलासिस अधिनियम अमरीका के शराब उत्पादकों को मोलसिस आपूर्ति करने में सहायक हुआ। 1774 के क्विबेक अधिनियम उपनिवेशों के असमाधान का कारण बना। 1765 ई. में स्टांप कर देना जारी में आया था। 1767 ई में चाय पत्ती, कागज़, काँच आदि वस्तुओं पर कर डालना संभव हो पाया।

बोस्टन चाय पार्टी (1773) : विरोध होने के बावजूद भी ब्रिटेन ने चाय पत्ती से भरे जहाज को बोस्टन बंदरगाह भिजवाया। इससे उपनिवेशों में रहनेवाले लोगों को गुस्सा आया। रेड इण्डियन्स की वेशभूषा में 50 लोगों के समूह ने जहाज में जाकर चायपत्तियों से भरे 340 बक्सों को समुद्र के पानी में फेंक दिया।

स्वतंत्रता की घोषणा : परिस्थिति पर विचार विमर्श करने के लिए 1774 ई० में अमरीका के 13 इंग्लिश उपनिवेशों के प्रतिनिधि फिलिडेल्फिया नगर के एक सभा में आये थे। उपनिवेश में लंबे समय से रहनेवाले निवासियों ने अपने देश को स्वतंत्र करने के लिए संकल्प किया। देशवासियों ने स्वतंत्रता के लिए शस्त्रास्त्र का इस्तेमाल करने की बात भी कही थी। ब्रिटेन के राजा ने उनके इस कार्रवाही को दंगा घोषित किया।

ब्रिटेन के राजा ने अमरीका में अपनी सैनिक टुकड़ियों को भेजा। उपनिवेशों की सेना को अंग्रेजों के साथ युद्ध करने के अलावा दूसरा कोई मार्ग नहीं था। इस प्रकार अप्रैल 19, 1775 ई में 'लेक्सिंगटन' में उपनिवेशों की सैन्य टुकड़ी ने अंग्रेजों पर हमला कर दिया। इस प्रकार अमरीका का स्वतंत्रता संग्राम प्रारंभ हो गया था। फिलिडेल्फिया सभा ने तब जॉर्ज वाशिंगटन की उपनिवेशों की सेना का महा सेनाधिपति नियुक्त किया।

जॉर्ज वाशिंगटन : जॉर्ज वाशिंगटन वर्जीनिया राज्य का बागवानी का मालिक था। इन्होंने फ्रेंचों के विरुद्ध चले सप्त वार्षिक युद्ध में प्रमुख भूमिका निभायी थी। महा सेनाधिपति को हैसियत से कीर्ति अर्जित की थी। इसने अशिक्षित और अव्यवस्थित उपनिवेशों के सैनिकों में आत्मविश्वास और उत्साह को भावना को भरा था। सैनिकों को अंग्रेजी सेना के विरुद्ध हिम्मत से लड़ने के लिए प्रेरित किया था। 1776, 4 जुलाई के दिन फिलिडेल्फिया को राष्ट्रीय सभा ने 'स्वतंत्रता की घोषणा' कर दी। इस दौरान बताया गया कि सभी 13 उपनिवेश ब्रिटेन के चंगुल से आज़ाद हैं। ब्रिटेन से राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ लिए गए हैं। 13 उपनिवेशों के पूरी तरह से स्वतंत्र होने की घोषणा की गई।



जॉर्ज वाशिंगटन

युद्ध : इंग्लैण्ड और उपनिवेशों के बीच में पाँच वर्ष तक युद्ध हुआ। युद्ध के प्रारंभ में इंग्लैण्ड का पलड़ा भारी था। जॉर्ज वाशिंगटन की अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। लेकिन 'सारटोगा' युद्ध में इंग्लैण्ड की सेना हार गई। फ्रांसीसी सेना की सहायता से जॉर्ज

वाशिंगटन ने “यार्क टाऊन” युद्ध में इंग्लैण्ड की सेना को पूरी तरह से हरा दिया। ब्रिटिश सेना के जनरल कार्नवालिस ने अपनी सेना सहित उपनिवेशों की सेना के सामने घुटने टेक दिए। 1783 ई० में पेरिस के समझौते में 13 उपनिवेशों को स्वतंत्रता की मान्यता दी। 4 जुलाई के दिन स्वतंत्रता की घोषणा के कारण अमरीकियों को वह दिन महत्वपूर्ण बन गया। आज भी 4 जुलाई के दिन अमरीकी लोग हर साल स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं।

1787 ई. में फिलिडेल्फिया में स्वतंत्रता प्राप्त करनेवाले सभी तेरह उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने सभा बुलाकर जॉर्ज वाशिंगटन को संयुक्त राज्य अमरीका का राष्ट्रपति चुना। उन्होंने एक संविधान की रचना की थी। यही विश्व का पहला लिखित संविधान था।

अमरीका के स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम : इससे फ्रांस महाक्रांति को प्रेरणा मिली। उपनिवेशों के पक्ष में आकर संघर्ष करनेवाले अनेक फ्रांसिसियों को फ्रांस की महाक्रांति में नेता बनने का मौका मिला। अमरीका में ही अनेक स्पेन और पुर्तगाल के उपनिवेश थे। इन उपनिवेश के लोगों ने भी अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और वे स्वतंत्र हो गए। एक नये नाम के साथ यानि संयुक्त राज्य अमरीका का उदय हुआ।

फ्रांस की महाक्रांति :

फ्रांस की क्रांति का मुख्य उद्देश्य देश से निरंकुश राज शासन हटाकर लोकतंत्र की स्थापना करना था। फ्रांसीसी लोग चाहते थे कि देश में समानता और जनतंत्र के आधार पर नई सामाजिक और राजनीतिक प्रणाली अस्तित्व में आये। फ्रांस को क्रांति से विश्व के अनेक देशी राजनीतिक आंदोलन पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। फ्रांस की क्रांति के निम्नलिखित कारण थे -

सामाजिक कारण: फ्रांसिसी समाज में असमानता हर क्षेत्र में व्याप्त थी। वह असमानता असहनीय एवं अमानवीय थी। इस असमानता का दर्द जनता के हृदय में आक्रोश बनकर एक क्रांति के रूप में उभरा। क्रांति होने से पहले फ्रांसिसी समाज में तीन वर्ग थे। पहले वर्ग में पादरी थे। दूसरे वर्ग में धनवान लोग थे। तीसरे वर्ग में शेष जनसामान्य लोग थे।

ज्ञात रहे

एक इतिहासकार के अनुसार फ्रांस की क्रांति घटने के साथ ही यूरोप का इतिहास- एक राष्ट्र, एक घटना और एक व्यक्ति से प्रभावित रही। वह देश फ्रांस था। वह घटना ‘फ्रांस की क्रांति’ थी। वह व्यक्ति ही ‘नेपोलियन’ था।

पहले दो वर्ग के लोग जिनकी संख्या सबसे कम थी, वे सभी सुविधाएँ प्राप्त करते थे। इनकी संख्या भी कम थी। इन्हें किसी भी प्रकार का कर नहीं देना पड़ता था तथा ये लोग विलासी जीवन व्यतीत करते थे।

तीसरे वर्ग के लोग सुविधाओं से वंचित थे। इस वर्ग में बुद्धिजीवी, किसान, मजदूर और नौकरीपेशेवर शामिल थे। इनकी आमदनी बहुत कम थी पर इन्हें अधिक कर चुकाना पड़ता था। इनका जीवन शोचनीय था। इन्हें आदर-सम्मान से नहीं देखा जाता था। इन्हें राजनीतिक हक भी नहीं थे। इन्हें अपमान जनक जीवन व्यतीत करना पड़ता था। इन्हें धार्मिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि तीसरे वर्ग के लोग दुखी एवं असंतुष्ट जीवन व्यतीत कर रहे थे। जनसामान्य ऐसी खराब व्यवस्था को हटाने के लिए सही समय का इंतजार कर रहे थे।

आर्थिक कारण : फ्रांस कृषि प्रधान देश था। कृषि पद्धति में विकास होने पर भी कृषि पिछड़ी हुई थी। भूमि से उत्पत्ति बहुत कम थी। किसानों की स्थिति दयनीय थी। हर साल अकाल सामान्य बात थी। इससे भोजन पाने के लिए दंगे भी होते थे। उद्योग वृत्ति संघों के अधीन थे। उद्योगों में आंतरिक समस्याएँ और अधिकारियों द्वारा बार-बार हस्तक्षेप से औद्योगिक प्रगति कुंठित हो गई थी। फलस्वरूप उत्पादन बहुत कम था।

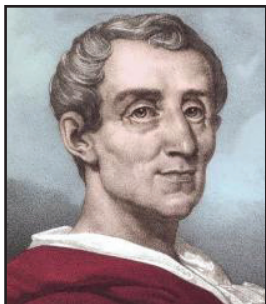
राजनीतिक कारण : फ्रांस में बूरबन राजघराने के लोग शासन करते थे। 16 वाँ लूई राजमहल में शाही परिवार के सदस्यों व दरबारियों के साथ रहता था। वह विलासी जीवन बिताता था और मुक्तहस्त खर्च करता था। सरकारी राजकाज के काम में लूई राजा दिलचस्पी नहीं लेता था। उसकी पत्नी (रानी) का नाम मेरी अंटायिनेट था। वह आस्ट्रिया की राजकुमारी थी। लूई की पत्नी अपने सुख-संतोष, त्योहार, भोग-विलास के लिए अनावश्यक खर्च करती थी। लोगों की परेशानियों से रानी को कुछ लेना देना नहीं था। रानी राजकाज के काम में हस्तक्षेप करती थी। वह विदेशी मूल की थी। जनसामान्य को लगता था कि रानी को उनके प्रति कोई स्नेह नहीं है। इस कारण लोग उनसे नफरत करते थे। राजा उसे अपने नियंत्रण में नहीं ले सका। धीरे-धीरे परिस्थिति काफी गंभीर हो गई और इसके परिणाम स्वरूप क्रांति देश में फैल गई।

फ्रांसिसी दार्शनिकों का प्रभाव : प्रसिद्ध दर्शनशास्त्री और विद्वान-मान्टेस्क्यू, रुसो और वाल्टर ने अपनी क्रांतिकारी लेखनों से क्रांतिकारियों को उत्तेजित किया।

मान्टेस्क्यू : मान्टेस्क्यू ने अपनी 'स्पिरिट ऑफ लॉ (Spirit of laws)' नामक कृति में राजाओं को भगवान से प्राप्त अधिकार (Divine Right of Kings) को निराधार बताकर टीका-टिप्पणी की। मान्टेस्क्यू ने संवैधानिक राज प्रभुत्व के लिए अपना समर्थन जताया।

रुसो : रुसो ने अपनी रचना 'सामाजिक समझौता' (Social contract) में कहा है कि - "मानव स्वतंत्र रूप से जन्म लेता है लेकिन वह हर जगह जंजीरों से जकड़ा हुआ है।"

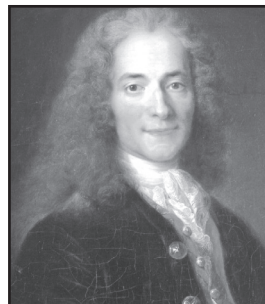
वाल्टेयर: वाल्टेर ने फ्रांस में व्याप्त कुप्रथाओं और अंधविश्वासों का खंडन किया। साथ ही उसने रोमन कैथोलिक चर्च का भी खंडन किया।



मान्टेस्क्यू



रूसो



वाल्टेयर

अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम के प्रभाव : अमरीका के स्वतंत्रता संग्राम ने भी फ्रांसिसियों पर गहरा प्रभाव डाला। अमरीका में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करनेवाले अनेक फ्रांसिसी सैनिक अपनी मातृभूमि फ्रांस में लौट आये थे। उन्होंने क्रांतिकारियों में आवश्यक बल और उत्साह की भावना भर कर क्रांति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

इन सब घटनाओं के कारण फ्रांसिसी राजा सोलहवें लुई को मजबूर होकर 'स्टेट्स जनरल' नामक फ्रांस की कार्यपालिका सभा बुलानी पड़ी। ये सभा पिछले 175 वर्ष के बाद बुलायी गई थी। तीसरे वर्ग के सदस्यों ने स्वयं को राष्ट्रीय सभा का सदस्य घोषित किया। शेष दो वर्ग के सदस्यों को अपने संघ में शामिल होने के लिए आह्वानित किया।

14 जुलाई 1789 ई में तीसरे वर्ग के सदस्यों ने 'बैस्टाइल' नामक राज्य के कारागृह पर आक्रमण करके कैदियों को स्वतंत्र कर, निरंकुश राज प्रभुत्व शासन प्रणाली का अंत कर दिया। धीरे-धीरे यह क्रांति विश्व के अनेक देशों में फैलने लगी। अब राजा सिर्फ नाम मात्र के राजा रह गये थे। राष्ट्रीय सभा ही सभी कानूनों की रचना करके और आदेशों को जारी करती थी। 27 अगस्त 1789 ई. में मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा को अंगीकृत किया गया। राजतंत्र व्यवस्था को हटाकर देश में गणराज्य की स्थापना की गयी।

फलस्वरूप फ्रांस में हिंसा होने लगी। तीव्र गति से सुधार की चाहत रखनेवाला 'जैकोबियन्स' नामक एक समूह सत्ता में आया। इसका नायक रोबिस्पियर था। संदेहास्पद लोगों की हत्या करने के लिए आविष्कृत गिलोटिन यंत्र द्वारा उनकी बलि ली गई।

फ्रांस की क्रांति के परिणाम :

फ्रांस की क्रांति से प्रमुख घटनाओं की शुरुवात हुई। सामंतवाद पद्धति का अंत हो गया। पादरी और धनवानों के पास जो विशेष अधिकार थे, वे सब रद्द हो गए। साहूकारों के पास जो भूमि थी उसे सरकार ने ले लिया। चर्च अब राज्यों के अधीन हो गए थे। देशभर में एक ही तरह की प्रशासन व्यवस्था जारी थी। लोगों को स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के सिद्धांतों को लागू करने का आश्वासन दिया गया।

एकीकरण आंदोलन :

इटली का एकीकरण :

प्राचीन काल में रोमन साम्राज्य का वैभव बुलंदियों पर था। इटली देश में एक ही भाषा बोलने के बावजूद भी देश की एकता टूट गयी थी। रोमन कैथोलिक धर्म इटली में सार्वभौमिक बन गया। देश में एक ही राष्ट्रीय राजतंत्र प्राप्ति की योग्यता के बावजूद भी इटली का एकीकरण नहीं हो पाया था।



उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में इटली अनेक छोटे-छोटे प्रदेशों में बंटा था। उनमें लोम्बार्डी वेनिशिया, सिसिली नेपल्स (दो सिसिलियों का राज्य) पोप का राज्य, टस्कनी, पार्म और मोडेना प्रमुख थे। फिड्मंट राज्य में सार्डिनिया, फिड्मंट और जिनेवा थे।

1815 ई से लेकर 1848 के बीच में इटली देश के अनेक राज्यों में दंगे होने लगे थे। इन सब दंगों का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र की स्वतंत्रता और एकीकरण था। जोसफ मैजिनी, कौंट केवूर और गैरी बाल्डी इटली के एकीकरण के शिल्पी थे।

मैजिनी प्रसिद्ध क्रांतिकारी दार्शनिक और लेखक था। इसने अपने ग्रंथ 'इटली', 'आस्ट्रिया, पैपसी' में अपने लेखन से युवकों को उत्तेजित किया था। इसने राष्ट्र के एकीकरण और स्वतंत्रता आदि क्रांतिकारी विचारों से उत्तेजित करके तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था के विरुद्ध दंगे करने के लिए प्रेरित किया। 'युवा इटली' (Young Italy) नामक राजनीतिक दल की स्थापना मैजिनी ने की थी। राष्ट्र की स्वतंत्रता और इटली का एकीकरण इसका उद्देश्य था।



मैजिनी

गैरीबाल्डी एक योद्धा और स्वतंत्रता सेनानी था। इसने 'युवा इटली' दल में भर्ती होकर अनेक बार उसकी क्रांति का नेतृत्व किया था। तत्पश्चात "लाल कुर्तीदल" को व्यवस्थित कर सार्डिनिया राज्य के साथ मिलकर आस्ट्रिया के विरुद्ध संघर्ष किया। सन् 1860 में दो सिसिली राज्य पर अपने "लाल कुर्ता" सैन्य दल की सहायता से आक्रमण करके इटली देश का एकीकरण करने शीघ्रगति से काम किया। और प्रजातांत्रिक व्यवस्था में सुधार लाने की माँग की।



गैरीबाल्डी

इटली देश के एकीकरण के दौरान सार्डिनिया का मुख्यमंत्री कौंट केवूर प्रभावशाली व्यक्ति था। वह स्वयं एक पत्रकार और संपादक था। इटली देश के साहित्य के पुनर्जागरण के लिए रिसार्जिमेंटों नामक पत्रिका का आरम्भ किया था। अपने प्रभावी लेखन से लोगों का मन और राजाओं को प्रभावित किया।

कौंट केवूर ने इटली से आस्ट्रिया को दूर करके सार्डिनिया को इटली का सबसे बड़ा और अत्यंत शक्तिशाली राज्य बनाने का निश्चय किया। सार्डिनिया का प्रधानमंत्री पद स्वीकार

करते ही तुरंत अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए काम करना शुरू कर दिया। राज्य में कौंट केवूर ने अनेक सुधारों को जारी करके इटली देश को अत्यंत प्रगतिशील राज्य बना दिया।

कौंट केवूर ने फ्रांस के साथ रहस्यमय तरीके से समझौता किया। आस्ट्रिया को युद्ध के लिए उकसाकर, फ्रांस के साथ मिलकर आस्ट्रिया को हराया। आस्ट्रिया को लाम्बार्डी से दूर करके, सार्डिनिया और लाम्बार्डी को अपने राज्य में मिला लिया। टस्कनी, मोडेना, पार्म और उत्तरी पोप के राज्यों में क्रांतियाँ होने के बाद वे राज्य सार्डिनिया के साथ एकीकृत हो गए।



कौंट केवूर

कौंट केवूर ने रहस्यमय तरीके से सिसिली पर आक्रमण करने के लिए गैरीबाल्डी को प्रोत्साहित किया। सन् 1861 में विक्टर इमैन्युएल को इटली का राजा घोषित किया गया। इटली को आस्ट्रिया से वेनेशिया मिला। अब केवल रोम इटली देश से बाहर था। सन् 1870 में फ्रांस और प्रश्या के बीच युद्ध आरंभ होने पर फ्रांस को अपनी सेना को रोम से वापस बुलाने के लिए बाध्य किया गया। विक्टर इमैन्युएल ने अपनी सेना के साथ रोम पर आक्रमण किया। रोम को इटली देश में मिलाकर, रोम को ही इटली की राजधानी बनाया। इस प्रकार इटली का एकीकरण पूर्ण हो गया।

जर्मनी का एकीकरण :

उन्नीसवीं शताब्दी के शुरुआत में जर्मनी अनेक स्वतंत्र राज्यों में बंटा हुआ था। उन राज्यों में वुटेमबर्ग सबसे बड़ा और अत्यंत शक्तिशाली राज्य था। बवेरिया, बेडन और हेक्स आदि प्रमुख राज्य थे। शेष राज्य बहुत छोटे थे। वे परस्पर लड़ाइयाँ करते थे। छोटे राज्य राजनीतिक दृष्टि से बलहीन और आर्थिक रूप से पिछड़े थे। ऐसी परिस्थिति में लोग असंतुष्ट थे। वे देश में सुधार के लिए बेचैन थे।

फ्रांस की महाक्रांति ने जर्मनी के लोगों की राष्ट्रीय चेतना को जगाया। इससे राज्य के लोगों ने राष्ट्रीय एकता और सामाजिक व आर्थिक सुधारों के लिए आग्रह किया। आस्ट्रिया देश के नेतृत्व में जर्मन राज्यों का एक संघटन बनाया गया। लेकिन राज्यों में शासन कर रहे नेता अपनी स्वतंत्रता को और मौजूदा राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था के संरक्षण के लिए प्रयत्न कर रहे थे।

जर्मन देश भक्तों और राष्ट्रवादियों ने प्रजातांत्रिक संघटनों के लिए और जर्मनी के एकीकरण के लिए आंदोलन प्रारंभ किया। लेकिन राजशासन के विरुद्ध हो रहे आंदोलन को दबा दिया गया और क्रांतिकारी देश छोड़कर भाग गए। प्रश्या ने इन गतिविधियों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, साथ ही आर्थिक प्रगति और औद्योगिकरण का विकास हुआ।

बिस्मार्क : जर्मनी के एकीकरण के प्रधान शिल्पी, प्रश्या राज्य के मुख्यमंत्री ऑटोवान बिस्मार्क थे।

वे सरकारी नौकर तो थे ही साथ ही जर्मनी के विधानमंडल डयट के सदस्य भी थे। बिस्मार्क ने विदेशों में राजदूत की हैसियत से अपने देश का प्रारंभ किया था। वे अच्छे राजनीतिक निपुण भी थे। बिस्मार्क ने विदेशों में राजदूत की हैसियत से अपने पेशे का प्रारंभ किया था। वे अच्छे राजनीति-निपुण भी थे। अपने पिछले अनुभव के कारण बिस्मार्क में परिज्ञान था। इसी दौरान वे आस्ट्रिया देश के नेतृत्व में जर्मन राज्यों का संघटन के लिए काम कर रहे थे। वे यहाँ की दुर्बलता के बारे में अच्छी तरह जानते थे। वे आस्ट्रिया फ्रांस और रूस में राजदूत के तौर पर काम करके वहाँ की दुर्बलता और शक्ति को अच्छी तरह जानते थे। जर्मनी का एकीकरण करने के लिए मात्र प्रश्या की ही क्षमता से बिस्मार्क परिचित था। बिस्मार्क अपेक्षा करता था कि प्रश्या के राजतंत्र के नेतृत्व में एकीकरण हो। इस उद्देश्य की सफलता के लिए बिस्मार्क का मकसद (उद्देश्य) दो प्रकार का था। पहला मकसद यह था कि आस्ट्रिया को जर्मन राज्य के संघ से बाहर रखना दूसरा मकसद यह था कि जर्मनी में मिलकर अपनी पहचान खोने की बजाय जर्मनी को ही प्रश्या जैसा बनाना। वे चाहते थे कि प्रश्या की संस्कृति, रीति-रिवाज, प्रशासनिक व्यवस्था और सैन्य बल को पूरे जर्मनी तक विस्तार किया जाये।



बिस्मार्क

बिस्मार्क का विचार था कि जर्मनी की समस्या का परिहार करने के लिए 'लहू और लोहा' की नीति अपनाया जाये। इसका अर्थ है कि युद्ध के लिए तैयार हुआ जाये। इसलिए उन्होंने एक शक्तिशाली सेना का गठन किया। उनका अगला उद्देश्य आस्ट्रिया को जर्मन राज्य के संघ से दूर करना था।

बिस्मार्क, शेल्सविग और होल्स्टीन नामक दो छोटे राज्यों को अपने देश में मिलाना चाहता था। जो राज्य डेन्मार्क के अधीन थे। इसलिए उसने आस्ट्रिया के साथ मिलकर डेन्मार्क से युद्ध करके उन राज्यों पर अपना कब्जा कर लिया।

बिस्मार्क ने इटली के साथ समझौता किया, इस समझौते के अनुसार जर्मनी का आस्ट्रिया के साथ युद्ध हो तो इटली अपना समर्थन और सहायता उसे अवश्य दे। सुसज्जित जर्मनी के सेना ने आस्ट्रिया को हरा दिया और 1866 में “उत्तर जर्मन राज्यों का संघ” की स्थापना की। प्रश्या के राजा को वंशपारंपरिक तौर पर इस राज्य संघ का प्रमुख बनाया गया।

आस्ट्रिया को जर्मनी से अलग करने के बावजूद भी जर्मनी का एकीकरण अब भी पूर्ण नहीं हुआ था। फ्रांस से जुड़े हुए दक्षिण में स्थित 16 जर्मन राज्य ; राज्य संघ से अलग हो गए। जर्मनी को दुर्बल राष्ट्र बनाना ही फ्रांस के राजा नेपोलियन (तृतीय) की आकांक्षा थी। जर्मनी का एकीकरण पूर्ण होना है तो फ्रांस के साथ युद्ध अनिवार्य है ऐसा बिस्मार्क का विचार था। फलस्वरूप बिस्मार्क युद्ध की तैयारी में जुट गया। युद्ध नेपोलियन द्वारा प्रश्या पर चढ़ाई किये जाने पर तब दक्षिण जर्मन राज्यों ने उसे हरा दिया। और बिस्मार्क ने शेष राज्यों को जर्मन संघ में मिला लिया। जर्मनी का एकीकरण पूरा हो गया था। प्रश्या के विलियम (प्रथम) को जर्मन सम्राट की उपाधि से सम्मानित किया गया। प्रश्या को अल्सेस और लोरेन प्रांत, फ्रांस से मिले। इस प्रकार जर्मनी एकीकृत राष्ट्र के रूप में उभर कर आया।

अभ्यास :

I. रिक्त स्थानों में उपयुक्त पद भरिए :

1. इंग्लैंड के अटलांटिक किनारे स्थापित 13 उपनिवेशों को _____ नाम से जाना जाता है।
2. सन् 1774 में तेरह उपनिवेश के प्रतिनिधि _____ नगर की सभा में आये थे ।
3. संयुक्त अमेरीका संस्थान के पहले अध्यक्ष _____
4. “स्पिरिट ऑफ लास्” का रचनाकार _____ था।
5. ‘युवा इटली’ नामक दल की स्थापना इटली में _____ ने की थी।
6. ‘लहू और लोहा’ नीति का प्रतिपादन _____ ने किया था।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

7. अमरीका के स्वतंत्रता संग्राम के कारण लिखिए।
8. अमरीका के स्वतंत्रता संग्राम के महत्व के बारे में लिखिए।
9. फ्रांस की क्रांति के लिए आर्थिक तथ्य किस प्रकार कारण बने ?
10. इटली के एकीकरण के दौरान गैरीबाल्डी की क्या भूमिका रही ?
11. जर्मनी के एकीकरण का शिल्पकार किसे माना जाता है? उनके बारे में टिप्पणी लिखिए।

III. गतिविधियाँ :

1. फ्रांस की क्रांति के दौरान भाग लेनेवाले दार्शनिकों एवम् विद्वानों के बारे में अपने अध्यापकों से चर्चा कीजिए।
2. इटली के एकीकरण के लिए जो कारण जिम्मेदार हैं उनके बारे में अपने अध्यापक के साथ समूह में चर्चा कीजिए।

IV. परियोजना कार्य :

1. फ्रांस की क्रांति में भाग लेनेवाले दार्शनिकों के बारे में जानकारी एवं चित्र का इस्तेमाल करते हुए परियोजना तैयार कीजिए।
2. इटली के एकीकरण में भाग लेने वाले क्रांतिकारियों के बारे में परियोजना तैयार कीजिए।

राजनीतिक शास्त्र

अध्याय - 21

निर्वाचन व्यवस्था



इस अध्याय में निम्न लिखित जानकारी प्राप्त होगी :

- भारत निर्वाचन आयोग।
- निर्वाचन व्यवस्था की प्रक्रिया।
- राजनैतिक पक्ष (दल)।
- समिश्र सरकार।
- माध्यम और प्रजा प्रभुत्व।

भारत विश्व का बड़ा प्रजातन्त्रात्मक राष्ट्र है। प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था की सफलता के लिए निष्पक्षपात, निर्भय चुनाव का होना अनिवार्य है। चुनाव की देख-रेख निर्देशन तथा नियंत्रण के बारे में हमारे संविधान के (15 वें) भाग में 324 से 329 तक की विधि (अधिनियम) में स्वतंत्र चुनाव आयोग व्यवस्था के बारे में बताया गया है। (ECI - Election Commission of India) यह चुनाव आयोग अखिल भारत की संस्था है। अर्थात् यह केंद्र तथा राज्य चुनाव की जिम्मेदारी लेता है। 243 K तथा 243 ZA अधिनियम के अनुसार, राज्य निर्वाचन आयोग स्थानीय संस्थाओं का चुनाव करता है।

निर्वाचन आयोग की रचना: (Structure of Election Commission)

सांविधान के 324 वें अधिनियम में चुनाव आयोग रचना के बारे में बताया गया है। भारत का चुनाव आयोग जनवरी 1950, 25 तारीख को स्थापित हुआ। प्रारंभ में एक प्रमुख चुनाव आयुक्त मात्र को लिया गया। सन् 1989 में संविधान के 61 में परिष्करण के अनुसार सार्वत्रिक वयस्क मतदान के लिए निम्नतम आयु 21 वर्ष थी, आज 18 वर्ष की गयी है। इससे निर्वाचन आयोग का कार्य क्षेत्र बढ गया। इससे प्रमुख चुनाव आयुक्त के साथ साथ अन्य दो चुनाव आयुक्त की नियुक्ति की गई। सन् 1990 में दो चुनाव आयुक्त को निकाल दिया गया। सन् 1993 से चुनाव आयोग एक प्रमुख चुनाव आयुक्त तथा अन्य दो चुनाव आयुक्त से निर्मित है। तीनों चुनाव आयुक्तों को समान अधिकार प्राप्त होते हैं। चुनाव आयुक्तों में भिन्न मत उत्पन्न होनेपर बहुमत द्वारा निर्णय लिया जाता है।

राष्ट्राध्यक्ष चुनाव आयुक्तों को नियुक्त करते हैं। इनकी अधिकार अवधि 6 वर्ष अथवा उनके 65 वीं आयु तक होती है। इनमें से जो पहले हो, उसे लागू करते हैं। ये किसी भी समय राष्ट्रपति को त्यागपत्र दे सकते हैं। संसद असमर्थता तथा बुरे व्यवहार के आधार पर इन्हें पदच्युत करने का अधिकार रखता है।

चुनाव आयोग राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यसभा, लोकसभा, विधान परिषद तथा विधान सभा के चुनावों को आयोजित करता है। चुनाव की तारीख निश्चित होने के कारण परिणाम प्रकट करने तक की अवधि सम्पूर्ण अवधि कहलाती है। इस अवधि को आदर्श 'नीति संहिता अवधि' (MCC - Model Code of Conduct) कहा जाता है। चुनाव के लिए चुनाव आयोग के अपने ही कर्मचारी नहीं होते। चुनाव आयोग राष्ट्राध्यक्ष की अनुमति प्राप्त कर राज्य सरकार के कर्मचारियों को अपने चुनाव कर्मचारियों के रूप में नियुक्त करता है। पंचायत तथा राजनीतिक संस्थाओं के चुनाव को राज चुनाव आयोग आयोजित करता है।

चुनाव/निर्वाचन क्षेत्र : (Electoral Constituencies)

निर्वाचन के उद्देश्य से राज्य और देश में छोटे- छोटे निर्वाचन विभाग बनाकर उन्हें निर्वाचन क्षेत्र कहा जाता है। ये निर्वाचन क्षेत्र आबादी के आधार पर विभाजित किये जाते हैं। चुनाव क्षेत्रों में प्रमुख रूप से दो प्रकार हैं। पहला लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र दूसरा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से चयनित अभ्यर्थी लोकसभा के सदस्य या एम.पी (Member of Parliament) कहलाते हैं। विधान सभा के चयनित राज्य विधान सभा सदस्य या एम.एल.ए (Member of Legislative Assembly) कहलाते हैं। इन दोनों निर्वाचन क्षेत्रों में नियमानुसार अनुसूचित जाति, अनुसूचित वर्ग के लिए आरक्षण स्थान होते हैं। संविधान के 106वें परिष्करण अधिनियम (नारीशक्ति वंदना अधिनियम) लागू होने के बाद लोकसभा और राज्यसभा में 33% स्थान महिलाओं के लिए आरक्षित करना आवश्यक है। इन्हें आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र कहा जाता है।

मतदारों की सूची (Voters List) : मतदान करने वालों के नाम तथा उनका विवरण निर्वाचक सूची के अंतर्गत मिलता है। मतदारों की सूची को निर्वाचन आयोग से पूर्व ही तैयार कर लेता है। मतदाताओं की सूची प्रति 5 वर्ष में परिष्कृत की जाती है। इस प्रकार परिष्करण के दौरान उनका नाम भी शामिल किया जाता है, जो 18 वर्ष के हो चुके हों।

भारत चुनाव आयोग
ELECTION COMMISSION OF INDIA
भारतीय निर्वाचन आयोग
Electors Photo Identity Card

नाम: [Blank]
Date of Birth: 09-12-2019
Address: [Blank]
Assembly Constituency No. and Name: [Blank]
Part No. and Name: [Blank]

Note 1: Mere possession of this card is no guarantee that you are elector in the current electoral roll. Please check your name in the current electoral roll before every election.
Note 2: Date of Birth mentioned in this card shall not be treated as a proof of age D.O.B for any purpose other than registration in electoral roll.

ELECTION COMMISSION OF INDIA

मतदाताओं का चित्रयुक्त पहचान पत्र (EPIC)

जिनका देहांत होता है उनका नाम इस सूची से निकाल दिये जाते हैं। इस प्रकार यह सूची मतदाताओं की पहचान में अधिकारियों की सहायता करती है। वर्तमान में मतदाता सूची में नाम शामिल करने के लिए चार पात्रता दिनांक निर्धारित हैं, 1 जनवरी, 1 अप्रैल, 1 जुलाई, 1 अक्टूबर।

मतदाताओं का छवि चित्र युक्त पहचान पत्र (EPIC-Electors Photo Identity Card) निर्वाचन आयोग द्वारा जारी किया जाता है। इससे मतदान में होने वाले चोरी को रोका जा सकता है। पहचान पत्र मतदाता को पहचानने में मदद करता है। मतदाता को मतदान के समय यह परिचय पत्र या अन्य प्रमाण पत्र दिखाना पड़ता है। इस पत्र के न रहने पर पैन कार्ड आधारकार्ड अथवा मोटर गाड़ी चलाने का लाइसेन्स अथवा निर्वाचन आयोग के द्वारा बताये गये पहचान से संबंधित पत्र दिखाना होता है।

चुनाव प्रक्रिया : (Election Process)

अधिसूचना (Election Notification) : भारत निर्वाचन आयोग से दिए गए अधिसूचना द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया प्रारंभ होती है। निर्वाचन आयोग मतदान का दिनांक (तारीख). समय, अन्य पूर्ण विवरण रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्रों के द्वारा सूचित करता है। सरकार के गेजेट में भी प्रकटित किया जाता है।

प्रत्याशी (अभ्यर्थी) का नामांकन (Nomination of the Candidates) : हमारे देश में प्रतिनिधित्व लोकतंत्र होने के कारण हर नागरिक को मतदान में भाग लेने का और चुनाव का हक रहता है। निर्वाचन में स्पर्धा करने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति कुछ अर्हताओं को पूरा करना पड़ता है। प्रत्याशी को निश्चित समय के भीतर संबंधित अधिकारी के सामने नामांकन करना पड़ता है। नामांकन आवेदन पत्र के साथ सुरक्षित जमा राशि (Fixed Deposits) देनी होती है।

राजनीतिक पक्ष अपने पक्ष की प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचन की स्पर्धा में भाग लेने के लिए प्रत्याशी चुनता है। उसे पक्ष का अधिकृत अनुज्ञापत्र दिया जाता है। उसे पक्ष का अधिकृतपत्र कहा जाता है। पक्ष का अधिकृतपत्र पानेवाले प्रत्याशी को अपने पक्ष के चिह्न तथा समर्थन के साथ चुनाव प्रचार के शिबिरों में भाग लेकर मत-याचन करने की सुविधा है। कभी-कभी प्रत्याशी अधिक मतपाने में प्रत्याशी का पक्ष तथा पक्ष का अधिकृतपत्र प्रधान भूमिका निभाते हैं। किसी पक्ष के अधिकृत प्रत्याशी न होने पर उसे स्वतंत्र प्रत्याशी

मानकर उन्हें निर्वाचन आयोग विविध चिह्न देता है। उसे पक्ष के अधिकृत अनुज्ञा पत्र (टिकेट) को प्रत्याशी पक्ष के उस चिह्न द्वारा निर्वाचन में भाग ले सकता है। कभी कभी व्यक्ति से बढ़कर पक्ष (पार्टी) का चिह्न ही प्रत्याशी की जीत में प्रमुख भूमिका निभाता है। उसे स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में घोषणा कर चुनाव / निर्वाचन आयोग विविध चिह्न प्रदान करता है।

नामांकन पत्रों की जाँच (Scrutiny of Nomination): आवेदन पत्र स्वीकार करने के अंतिम दिनांक के बाद नियुक्त अधिकारी प्रत्याशी को नामांकन पत्र और उसके साथ संलग्न सभी दस्तावेज की जाँच करके अर्हता प्राप्त प्रत्याशियों के नाम प्रकट करता है।

नामांकन पत्र वापस लेना (Withdrawal of Nomination): योग्य प्रत्याशियों की सूची प्रकट करने के बाद प्रत्याशी चाहे तो नामांकन वापस लेने के लिए एक निर्दिष्ट दिनांक प्रकटित किया जाता है। योग्य प्रत्याशी नामांकन पत्र वापस ले लिया तो वह चुनाव नहीं लड़ सकता।

निर्वाचन प्रचार : निर्वाचन क्षेत्र में प्रत्याशियों की अंतिम अधिसूचना के बाद निर्वाचन (चुनाव) का प्रचार कार्य शुरू होता है। बाह्य प्रचार कार्य मतदान के दिन से 48 घंटे पहले ही समाप्त होता है। प्रचार के समय विविध राजनीतिक पक्ष अपने प्रत्याशियों को जिताने का प्रयास करते हैं। अगर उनका पक्ष या प्रत्याशी विजयी हो जाये तो लोगों को कौन-कौनसी सुविधाओं की पूर्ति वे करेंगे, इसका भरोसा देते हैं। इस प्रकार का भरोसा या आश्वासन को 'निर्वाचन प्रणाली' (Election Manifesto) कहा जाता है। इस अवधि में सर्वाजनिक समावेश, घरों में जाकर मतों की याचना, ध्वज, निशान, कपड़ों के तोरण, भित्तिपत्रिका, करपत्र, नारे, घोषणा इत्यादि की भरमार देखने मिलती है। हर प्रत्याशी को निर्वाचन आयोग की आदर्श 'नीति संहिता' का पालन करना पड़ता है।

मतदान का दिन (Polling Day) : मतदान के दिन का तात्पर्य है मत चलाने के लिए तय किया हुआ निश्चित दिन। उस दिन मतदाता मतकेंद्र जाकर मतदान देते हैं। मतकेंद्र का अर्थ होता है मतदान की निश्चित जगह, वहाँ प्रशिक्षित निर्वाचन अधिकारी नियोजित रहते हैं। मतदाता की पहचान प्राप्त करने के बाद मत पत्र (Ballot paper) दिया जाता है। इस मतपत्र में सभी प्रत्याशियों के नाम तथा निशान होते हैं। ये चिह्न अनपढ़ लोगों को भी मत डालने में मदद करते हैं।



ब्यालेट युनिट (BU) वी वी पैट (VVPAT) कंट्रोल युनिट (CU)
इलेक्ट्रॉनिक मतयंत्र (EVM)

पुराने मतपत्रों के बदले इलेक्ट्रॉनिक मतपत्रों (EVM - Electronic Voting Machine) को बटन दबाकर अपना मत दाखिला कर सकता है। मतदाता इस यंत्र में अपने प्रत्याशी और उसके निशान के सामने के विद्युत बटन को दबाकर अपना मतदान करते हैं। मतदान का समय समाप्त होने के बाद मतयंत्र को संबंधित केंद्रों में पहुँचाया जाता है।

दिव्यांगों को उचित तरीके से मत देने के लिए मतदान केंद्रों पर आवश्यक सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। दृष्टिबाधित लोगों को मतदान की सुविधा प्रदान करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मतयंत्र पर ब्रेल लिपि में संकेतों को मुद्रित किए जाते हैं।

ज्ञात रहे :

- **निर्वाचन अधिकारी (RO-Returning Officer)** हर एक निर्वाचन क्षेत्र में निर्वाचन या चुनाव की प्रक्रिया निर्वहण करने के लिए निर्वाचन आयोग एक अधिकारी को नियुक्त करता है। उसे 'रिटर्निंग अधिकारी' कहा जाता है। (Returning Officer) इसके अधीन मतकेंद्रों में कार्य करनेवाले निर्वाचन कर्मचारी नियुक्त होते हैं।
- **वी वी पैट (VVPAT) :** वी.वी पैट को मतयंत्र से जोड़ा जाता है। वी.वी पैट में एक वाउचर दिखाता है कि ई.वी.एम में किसे मतदान किया गया है।
- **नोटा (NOTA- None Of The Above) उपरोक्त में कोई नहीं) :** नोटा विकल्प को चुनावी प्राणाली के प्रमुख हथियार के रूप में मान्यता दी जा रही है। इस मतदान द्वारा देश की शासन व्यवस्था को बदलने की क्षमता होती है। मतदान हर किसी का अधिकार और कर्तव्य है। नोटा मतलब है- किसी भी उम्मीदवार के लिए मतदान न करना। जिसका अर्थ है कि मतपत्र पर किसी को भी अपने वोट का हक नहीं देना।

- **दिखावटी मतदान (Mock Poll)** मतदान के दिन अधिकृत रूप से चुनाव आरम्भ होने से पहले इलेक्ट्रानिक मतयंत्र में कोई भी मत दाखिल नहीं हुआ है और मतयंत्र ठीक तरह से कार्य निर्वह कर रहा है इसे सुनिश्चित करना ही 'दिखावटी मतदान' है।

मतों की गणना (Counting) : निर्वाचन समाप्ति के बाद निश्चित दिन प्रत्याशी और उनके अनुयायियों के सम्मुख गिनती के लिए नियुक्त अधिकारियों द्वारा मतों की गिनती होती है। इलेक्ट्रानिक यंत्रों के आने के बाद यह कार्य अत्यंत आसान हुआ है। कुछ विशेष संदर्भों में पुनर्गिनती का मौका भी रहता है। यदि मतों की गिनती से संबंधित किसी भी तरह की अव्यवहार होने का संदेह है तो उम्मीदवार अदालत जा सकते हैं।

राजनैतिक दल : लोकतांत्रिक सरकारों में राजनैतिक पक्षों का होना आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है। राजनैतिक पक्षों के प्रतिनिधि, सरकार और समुदाय के बीच की कड़ी होते हैं। राजनैतिक पक्ष सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति के लिए नियम तथा कानून बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राजनीति में प्रवेश करनेवालों का राजनैतिक पक्ष प्रशिक्षण केंद्र है। राष्ट्र स्तर में केंद्र संसद की लोकसभा, राज्य स्तर में विधान सभा में बहुमत प्राप्त राजनैतिक पक्ष सरकार की रचना करता है। सरकार बनानेवाला पक्ष प्रशासनीय पक्ष कहलाता है। दूसरे स्थान में बहुमत प्राप्त पक्ष विपक्ष के स्थान में रहता है। छोटे-छोटे पक्षों के स्वतंत्र सदस्य स्वेच्छा से प्रशासनीय अथवा विपक्ष का साथ दे सकते हैं। विपक्ष प्रशासनीय पक्ष की कार्य प्रक्रियाओं की विमर्शा करने का अधिकार रखता है।

राष्ट्रीय राजनैतिक पक्ष : भारत में अनेक राजनैतिक पक्ष हैं जिनको राष्ट्रीय पक्ष तथा स्थानीय पक्ष के नाम से विभाजित किया गया है। राष्ट्रस्तर के राजनैतिक पक्ष अनेक राज्यों में अपनी शाखाओं की रचना के अनुसार राष्ट्रीय पक्ष केंद्र के लोकसभा, राज्य के विधान सभाओं में अपने गौरवान्वित संख्याओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन पक्षों को राष्ट्रस्तर की मान्यता भारतीय चुनाव आयोग द्वारा मिलती है। प्रस्तुत भारत में 6 राष्ट्रीय राजनीतिक दल है। वे इस प्रकार है - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी (INC), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी)(CPI-M), भारतीय जनता पार्टी (BJP), बहुजन समाज पार्टी (BSP), नेशनल पीपुल्स पार्टी (NPP), और आम आदमी पार्टी (AAP)। ये राष्ट्रीय पार्टियाँ है और इनका अपना पार्टी चिन्ह भी है।

प्रादेशिक राजनैतिक पक्ष (पार्टी) : प्रादेशिक राजनैतिक पक्ष राज्य राजनैतिक पार्टियों के नाम से भी जाने जाते हैं। विधान सभा में अधिक मात्रा में सदस्यों को पानेवाले पक्ष को प्रादेशिक पक्ष की मान्यता मिलती है। अनेक राज्यों में प्रादेशिक पार्टियाँ अपने प्रभाव से बहुमत प्राप्त करके सरकार की रचना कर चुकी हैं। वे हैं तमिलनाडु के डी.एम. के तथा ए. आई.डी.एम के दल, असम का असम गण परिषद, आंध्रप्रदेश के तेलुगुदेशम् पार्टी, वै. एस. आर सिपि पार्टी, तेलंगाना के बि. आर. एस पार्टी, महाराष्ट्र में शिवसेना पार्टी, कर्नाटक में जनतादल (जात्यातीत) उत्तरप्रदेश के समाजवाद पार्टी, पश्चिम बंगाल के अखिल भारत तृणमूल कांग्रेस पार्टी आदि। इन्हें अपना निर्वाचन चिह्न प्राप्त है।

लोकसभा में भी प्रादेशिक पक्षों के प्रतिनिधियों को देख सकते हैं। कोई भी पार्टी स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं कर पाता तो ऐसे अवसरों में प्रादेशिक पक्ष सरकार की रचना में प्रमुख भूमिका निभाता है। हम केंद्र तथा राज्य सरकारों में यह स्थिति देख सकते हैं।

सम्मिश्र सरकार : आजकल बहुत सारे पक्ष अधिकार के लिए निर्वाचन (चुनाव) में भाग लेते हैं। कोई भी पार्टी स्पष्ट जनादेश प्राप्त करके सरकार की रचना कर सकता है। लेकिन कई संदर्भों में सरकार रचना करने का बहुमत प्राप्त नहीं होता। ऐसे परिस्थिति को 'त्रिशंकु लोकसभा' (Hung Parliament or Assembly) या 'त्रिशंकु विधान सभा' कहा जाता है। ऐसे अवसर पर कुछ पक्ष संयोजित होकर सरकार रचना के सदस्यबल प्राप्त करके मैत्री सरकार स्थापित करते हैं। इस प्रकार की मैत्री को 'मतदानोत्तर मैत्री' (Post-poll alliance) कहते कुछ संदर्भों में निर्वाचन के पूर्व ही दो अथवा दो से अधिक पक्षा मिलकर स्थानों का बँटवारा करके साथ साथ चुनाव लड़ते हैं। इस प्रकार की मैत्री को 'चुनाव पूर्व मैत्री' कहते हैं। इन दो प्रकार की मैत्रियों से त्रिशंकु स्थिति में सरकार की रचना करने में आसान होता है। ऐसी मैत्री से जो सरकार बनेगा उसे 'सम्मिश्र सरकार' कहते हैं। ऐसी मैत्री से जो सरकार में मित्र पक्षवाले मंत्री मंडल में अपना हिस्सा लेकर स्थान प्राप्त करते हैं। कुछ संदर्भों में मित्र पक्ष अपना हिस्सा लिये बिना सरकार का साथ देते हैं तो इसे 'बाह्य समर्थन' कहते हैं। 1989 इसवी से लोकसभा और विधान सभा में अतंत्र सरकार की रचना हुई है।

सार्वजनिक अभिप्राय : आम आदमी का स्वयं से संबंधित किसी विषय पर अपने अभिप्राय को व्यक्त करना सार्वजनिक अभिप्राय कहलाता है। ऐसा अभिप्राय बहुजन राजनैतिक अभिप्राय नहीं कहलाता। सरकार सार्वजनिकों के अभिप्रायों के आधार पर नियम बनाती है। सार्वजनिक अभिप्राय विषयाधारित होकर कालानुसार परिवर्तित होने की संभावना रहती है। सार्वजनिक घटना के प्रति जागृत होकर अपने अभिप्राय को स्वतंत्र रूप से बिना किसी भय और पूर्वाग्रह से व्यक्त कर सकते हैं। सरकार और राजनैतिक पक्ष सार्वजनिक अभिप्रायों को प्रोत्साहित करते हैं। रेडियो, दूरदर्शन, समचार पत्र, पत्रिका, अंतर्जाल आदि समूह माध्यम सार्वजनिक अभिप्राय प्राप्त करने में मदद करते हैं।

समूह माध्यम और लोकतंत्र : प्रतिदिन होनेवाले घटनाओं की सूचना समूह माध्यम लोगों को देती हैं। सरकार की योजना और नियमों को लोगों तक पहुँचाते हैं। माध्यम सरकार की कार्य शैली के बारे में लोगों को जानकारी देने के साथ-साथ लोगों के द्वारा उठाये गये प्रश्नों को उनकी समस्याओं को जनप्रतिनिधियों के सामने रखते हैं। इसलिए समूह माध्यम को हर वक्त निर्भय होकर पक्षपात रहित अभिप्रायों को प्रकट करना चाहिए। सूक्ष्म विचारों का वैभवीकरण करके भय का वातावरण निर्माण नहीं करना चाहिए। राष्ट्रीय एकता, जात्यतीत और लोकतंत्र तत्वों को हानि पहुँचाये बिना कार्य करना चाहिए।

पत्रिका माध्यम के अधीन में प्रतिदिन के समाचार साप्ताहिक पत्र आदि आते हैं। ऐसे पत्र पत्रिका अनिवार्य रूप से समाचार पत्र पंजीकरण कचहरी (PRGI - Press Registrar General of India) में पंजीकरण करा लेना चाहिए। इन पत्रिकाओं की गुणवत्ता बढ़ाने और ऐसे पत्रिकाओं की स्वातंत्र्य रक्षा के लिए भारत में 'भारतीय पत्रिका परिषद' (Press Council of India) की स्थापना हुई है।

माध्यम क्षेत्र में दूरदर्शन, रेडियो, अंतर्जाल, जैसे इलेक्ट्रानिक माध्यम कार्य करते हैं। ऐसे इलेक्ट्रानिक माध्यम 1962 के आकाशवाणी प्रसरण संहिता के अधीन में कार्य करते हैं। आम लोग, अधिकारी और नायकों को अपने विचार विनिमय के लिए अवसर प्रदान करते हैं।

आपको ज्ञात रहे :

- 1) **कर्नाटक राज्य चुनाव आयोग :** संविधान के 73 वें और 74वें परिष्करण अधिनियम 1992 के अनुसार 243K और 243ZA अनुच्छेद के अनुसार कर्नाटक के पंचायत राज संस्थाओं और नगर के स्थानीय संस्थाओं के चुनाव करने के लिए कर्नाटक राज्य चुनाव आयोग को दि 26/05/1993 में गठन किया गया। यह एक संवैधानिक संस्था है, इसका केंद्र कार्यालय बेंगलूरु में है ।
- 2) **राष्ट्रीय एकता दिवस (NVD - National Voters Day) :** भारत का चुनाव आयोग जनवरी 25 को अस्तित्व में आया। इसी दिन को 2011 से राष्ट्रीय मतदाता दिवस के रूप में मनाया जाता है ।
- 3) **स्वीप् (SVEEP - Systematic Voters Education and Electoral Participation) :** व्यवस्थित मतदाता शिक्षा और चुनावी भागीदारी। मतदाता शिक्षा हेतु भारत निर्वाचन आयोग द्वारा 2009 में क्रियान्वित कार्यक्रम ही स्वीप् है ।
- 4) **राजनीतिक दलों के नाम का विस्तृत रूप : (Abbreviations) :**

INC	-	Indian National Congress
BJP	-	Bhartiya Janata Party
CPI(M)	-	Communist Party of India (Marxist)
BSP	-	Bahujan Samaj Party
AAP	-	Aam Aadmi Party
AIADMK	-	All India Anna Dravida Munnetra Kazhagam
DMK	-	Dravida Munnetra Kazhagam
BRS	-	Bharat Rashtra Samithi
YSRCP	-	Yuva Jana Sramika Rythu Congress Party

विशेष सूचना : 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर हाईस्कूल के विद्यार्थियों को विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना अनिवार्य है ।

अभ्यास :

I. रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्दों से भरें :

1. बाह्य निर्वाचन प्रचार कार्य मतदान के दिन से _____ घंटे पहले समाप्त हो जाता है।
2. राजनीतिक दलों के लिए मान्यता प्रदान करनेवाली संस्था _____।
3. प्रेस स्वतंत्रता संरक्षण की संस्थान _____ है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर समूह में चर्चा करें और लिखें :

4. मतदाता सूची पर एक नोट लिखें।
5. चुनाव प्रक्रिया के चरण कौन-कौन सी हैं?
6. सरकार और लोगों के बीच एक कड़ी के रूप में राजनीतिक दल जन प्रतिनिधियाँ हैं। समर्थन करें।
7. सम्मिश्र सरकारों के बारे में लिखिए।
8. भारत में वर्तमान में कौन-कौन से राष्ट्रीय राजनीतिक दल विद्यमान हैं?

III. गतिविधियाँ:

1. चुनावी प्रक्रिया पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन ।
2. चुनाव आयोग के कृत्यों की सूची तैयार करना।
3. चर्चा करें कि नोटा सुविधा लोकतंत्र के लिए लाभ है या हानि ।



अध्याय - 22

देश की सुरक्षा



इस अध्याय में निम्नलिखित अंशों को समझते हैं।

- सेना बलों के प्रकार और उनका उत्तरदायित्व ।
- सेनाबलों का केंद्रस्थान और उनके प्रमुख व्यक्ति ।
- सेनाक्षेत्र से राष्ट्र सुरक्षा की अभिवृद्धि ।
- सेना बलों के अलावा दूसरी श्रेणी की सुरक्षा व्यवस्था ।

आप जानते हैं कि हमारा देश इसके पहले बाहरी आक्रमण का शिकार हुआ था। अनेक हड़ताल, त्याग, बलिदानों से 1947, अगस्त 15 को स्वतंत्र हुआ। अपनी इस स्वतंत्रता की रक्षा करना हम भारतीयों का कर्तव्य है। इसे साथ ही हमारी सुरक्षा व्यवस्था को भी मजबूत करके बाहरी आक्रमण से बचाना है।

भारत एक विशाल देश है। जो 15,200 कि.मी भू-सीमा, 7516.60 कि. मी द्वीपों सहित और द्वीपों को छोड़कर 6100 कि.मी जल सीमा है । पाकिस्तान, चीन, भूतान, नेपाल, बंगलादेश, मयन्मार हमारे पड़ोसी देश है। इंडोनेशिया, मलेशिया, कंबोडिया, थाईलैंड, वियतनाम और मालदीव समुद्र संपर्क के पड़ोसी राष्ट्र हैं। हमारी शांति की अपेक्षा होने पर भी पड़ोसी राष्ट्र हमें शांति से रहने नहीं देते। शांति का समझौता, बातचीत, समझौतों के द्वारा सब समस्याओं का हल निकालने का प्रयास भारत कर रहा है। फिर भी पूर्ण रूप से हम सफल नहीं हुए हैं। इसलिए हमें अपने राष्ट्र की सुरक्षा करनी है। इसके लिए सुरक्षाबल की भूमिका महत्वपूर्ण है ।

हमारे सेनाबलों की रचना:

हमारे देश में थलसेना (Indian Army), जल सेना और वायुसेनाएँ हैं। राष्ट्रपति इन सेनाबलों के सर्वोच्च सेनापति है। थल सेना के प्रमुख को जनरल, जलसेना के प्रमुख को अडमिरल और वायुसेना के प्रमुख को एयर चीफ मार्शल के नाम से जाना जाता है। इन तीनों विभागों के समन्वय के लिए 2001 में चीफ आफ इंटीग्रेटेड डिफेन्स स्टॉफ (CIDS) नामक अधिकारी को नियुक्त किया गया है। देश के रक्षा मंत्री तीन विभागों (थलसेना, जल सेना, वायुसेना) के कार्यों का संगठन करते हैं। तीनों दलों के कार्य उन्हीं दलों के सेनापति संभालते हैं। सेनाबल के प्रत्येक विभाग के अलग-अलग प्रत्येक प्रशिक्षण केंद्र है।

रक्षा मंत्रालय का प्रधान कार्यालय नई दिल्ली में है। इस मंत्रालय के विभाग हैं। 1) रक्षा-विभाग 2) सुरक्षा उत्पादन विभाग 3) सुरक्षा अनुसंधान और अभिवृद्धि विभाग 4) निवृत्ति सेना कल्याण विभाग।

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ : : (CDS - Chief of Defence Staff)

भारत में देश के राजनीतिक नेतृत्व को सैन्य-संबंधित मामलों पर उच्च गुणवत्तावाली सलाह प्रदान करने के लिए 2019 में चीफ ऑफ डिफेंस का पद बनाया गया। इस पद पर नियुक्त होनेवाला व्यक्ति रक्षा मंत्री का प्रधान सैन्य सलाहकार होगा। जनरल बिपिन रावत भारत के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ नियुक्त किये गये।

रक्षा सचिवालय : (Ministry of Defence)

भारत देश की रक्षा प्रणाली का संपूर्ण प्रभार संभालने वाला मंत्रालय ही रक्षा मंत्रालय है। इसका प्रधान कार्यालय नई दिल्ली में है। इसका नेतृत्व रक्षा मंत्री करते हैं। सरदार बलदेव सिंह भारत के पहले रक्षा मंत्री थे।

भारतीय भू- सेना :

राष्ट्र की रक्षा में प्रमुख पात्र निभानेवाले भू-सेना का परिचय पाए। भू-सेना का प्रधान कार्यालय दिल्ली में है। भू-सेना का आदर्श वाक्य सेवा परमोधर्म है। इसका प्रमुख महासेनाधिपति कहलाता है। उप सेनाधिपति, सेनापति, सेना प्रधान अधिकारी मास्टर जनरल, मिलिटरी सचिव, मेलिटरी (फौजी) प्रौद्योगिक (इंजीनियर) आदि सहायक के रूप में काम करते हैं। थल सेना में पैदल सैनिक दल, अश्वदल (क्यावलरी) हथियार बंद सशस्त्र, फिरंगी दल आदि होते हैं। परिवहन आपूर्ति इंजिनियरिंग विभाग भी इसमें है। प्रशासन के उद्देश्य से थल सेना को 7 कमांड के रूप में विभाजित किया गया है। उनके केंद्रस्थानों का विवरण निम्नलिखित है :

क्र. सं.	कमांड का नाम	स्थल और राज्य
1.	पश्चिम कमांड	चांदीमंदिर (चंडीगढ़)
2.	पूर्व कमांड कालकता	(पश्चिम बंगाल)
3.	उत्तरी कमांड	उधमपुर (जम्मू और कश्मीर)
4.	दक्षिणी कमांड	पुणे (महाराष्ट्र)
5.	केंद्र कमांड	लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

6.	प्रशिक्षण कमांड	माव(Mhow) (मध्यप्रदेश)
7.	उत्तर-पश्चिमी कमांड	जयपुर (राजस्थान)

भारतीय थल- सेना प्रशिक्षण केंद्र :

क्र. सं.	प्रशिक्षण केंद्र	स्थल और राज्य
1.	राष्ट्रीय रक्षा अकादमी	खडकवासला (पुणे के पास) महाराष्ट्र
2.	रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज	वेलिंगटन-तमिलनाडु
3.	भारतीय सैन्य अकादमी	देहरादून - उत्तराखंड
4.	कॉलेज ऑफ सिफेंस मैनेजमेंट	सिकंदराबाद-तेलंगाना
5.	राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज	नई दिल्ली
6.	अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी	चेन्नई - तमिलनाडु



थल सेना

इन कमांडों को क्षेत्र तथा उपक्षेत्र जैसे दो भागों में विभाजित किया गया है। लेफ्टिनेंट जनरल कमांड का प्रमुख होता है। हर क्षेत्र में मेजर जनरल प्रमुख है। उपक्षेत्रीय प्रमुख को ब्रिगेडियर कहते हैं। पूना के निकट खडकवासला राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी, ऊटी के निकट वेलिंगटन में स्थित रक्षा सेना कर्मचारी कॉलेज, नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय सुरक्षा कॉलेज, देहरादून में स्थित भारतीय मिलिटरी अकादमी, चेन्नई में स्थित अधिकारी प्रशिक्षण शाला आदि प्रमुख प्रशिक्षण केंद्र हैं।

भू-सेना में कुल 12,37,117 जवान हैं। 9,60,000 आरक्षित योद्धा हैं।

15 जनवरी - भारतीय सेना दिवस

किसी भी पड़ोसी राष्ट्र के अक्रमण से राष्ट्र के भू भाग की रक्षा करके अखंडता को बनाय रखना, वर्तमान में हमारे भौगोलिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा - थल सेना के तकनीकी परिवेश की सुरक्षा करना महत्वपूर्ण कार्य है। हर परिस्थिति का सामना करने को हमेशा भू - सेना तत्पर रहती है। देश की विशाल सीमा सुरक्षा, प्राकृतिक विपत्ति का सामना करना आदि प्रमुख कार्य भू-सेना निभाती है।

भू-सेना की मानवीय कार्य

देश की सीमाओं की सुरक्षा के अलावा, भूकंप, बाढ़, सूखा, भूस्खलन और तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं के मामलों में सेना मानवीय कार्यों को निभाती है। सेना तकनीकी रूप से उन्नत है और उसके पास गुप्तचर व्यवस्था भी है।

भारत की नौ-सेना:

राष्ट्रीय रक्षा के हित में जितनी महत्वपूर्ण थल सेना है, उतनी ही महत्वपूर्ण नौसेना भी है। तो आइए हम नौसेना का परिचय पाए ।

भारत में द्वीप सहित 7516.66 कि.मी. लंबी तटरेखा है और द्वीपों को छोड़कर 6100 कि. मी लंबी तटरेखा है। इस तटरेखा की सुरक्षा के लिए देश के पाए एक मज़बूत नौसेना है, जिसका मुख्य कार्यालय नई दिल्ली है। 'शम् नो वरुण' (जलदेव वरुण हमें आशीर्वाद दें) यह भारतीय नौसेना का आदर्श वाक्य है। नौसेना के प्रमुख को एडमिरल कहा जाता है।

नौसेना को तीन क्षेत्रीय कमांडों में बाँटा गया है।

- 1) पश्चिमी नौका कमांड (केंद्र कार्यालय-मुंबई)
 - 2) पूर्वी नौका कमांड (प्रधान कार्यालय - विशाखा पट्टणम)
 - 3) दक्षिणी नौका कमांड (प्रधान कार्यालय - कोच्चिन) में है।
- पूर्व और पश्चिमी कमांड परिचालन कमांड (Operational command) है तो दक्षिणी कमांड प्रशिक्षण कमांड है। इसके अलावा भारतीय नौसेना के दो बेड़े हैं। पश्चिम बेड़ा (मुंबई) और पूर्वी बेड़ा (विशाखापत्तनम्)

क्रिया कलाप:

भूतपूर्व सैनिकों के साथ हमारी सेना दल व्यवस्था के बारे में चर्चा कर जानकारी प्राप्त कीजिए।



आई एन एस विराट

भारत में जहाज निर्माण केंद्र

क्र. सं.	जहाज निर्माण केंद्र का नाम	स्थल और राज्य
1.	हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड	विशाखापत्तनम् - आंध्रप्रदेश
2.	मझगांव डाकयार्ड लिमिटेड	मुंबई - महाराष्ट्र
3.	गार्डन रीच शिप बिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड	कोलकाता - पश्चिम बंगाल
4.	कोचीन शिपयार्ड	कोच्चि-केरला
5.	गोवा शिपयार्ड	वास्कोडिगामा - गोवा

भारतीय नौसेना के युद्धपोत

भारतीय नौसेना के पास फ्रिगेट, विमानवाहक, कार्वेट, पनडुब्बी, क्रूजर, डेस्ट्रॉयर्स आदि जैसे युद्धपोत हैं। उनमें प्रमुख हैं - INS शिवालिक, INS गोदावरी, INS त्रिशूल और INS ब्रह्मपुत्रा (INS - Indian Naval Ship) इस प्रकार भारत आधुनिक युद्ध नौकाबल युक्त सातवां राष्ट्र के रूप में प्रख्यात है।

भारतीय नौसेना प्रशिक्षण केंद्र

क्र. सं.	प्रशिक्षण केंद्र	स्थान और राज्य
1.	इंडियन नावल अकादमी	एजिमल-केरला
2.	INS शातवाहन	विशाखपत्तनम - आंध्रप्रदेश
3.	INS चिल्का	चिल्का - ओडिशा
4.	INS शिवाजी	लोनावला-महाराष्ट्र
4 दिसंबर - भारतीय नौसेना दिवस		

भारतीय वायुसेना:

थल सेना और नौ सेना की तरह वायु सेना भी देश की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तो आइए अब वायु सेना से परिचय कराते हैं। वायु सेना का मुख्य कार्यालय नई दिल्ली में स्थित है। 'नभ स्पर्शम् दीपतम्' (वैभव के साथ आकाश को छूना) यह वायु सेना का आदर्श वाक्य है।



वायुसेना

भारतीय वायुसेना आधुनिक तकनीकों से युक्त सुसज्जित उपकरणों वाली है। ये शस्त्रास्त्र, उत्तम व्यवस्था, उत्तम संवहन व्यवस्था, शत्रुओं का पता लगाना, शत्रुओं के विरुद्ध लड़ने तथा सुरक्षा सामर्थ्यों से युक्त है। वायुसेना के मुख्य साधन हैं- युद्ध वायुयान और संघर्ष हेतु वायुसेना महत्वपूर्ण है।

भारतीय वायुसेना युद्ध और शांति के समय देश के लिए परिणामकारी उत्तर दायित्व निभाती है। राष्ट्रीय अखंडता, सुरक्षा और स्थिरता को बनाये रखने में वायुसेना का महत्वपूर्ण स्थान है।

भारतीय वायुसेना कमांड:

भारतीय वायुसेना का 5 परिचालन (Operational) कमांड और 2 कार्यात्मक (Functional) कमांड है।

परिचालन कमांड (Operational) :

क्र. सं.	कमांड का नाम	स्थान और राज्य
1.	पूर्वी कमांड	शिलांग - मेघालय
2.	पश्चिमी कमांड	नई दिल्ली
3.	दक्षिणी कमांड	तिरुवनंतपुरम - केरल
4.	केंद्र कमांड	प्रयागराज - उत्तर प्रदेश
5.	उत्तर पूर्वी कमांड	गांधीनगर - गुजरात

औपचारिक कमांड (Functional) :

क्र. सं.	कमांड का नाम	स्थान और राज्य
1.	प्रशिक्षण कमांड	बेंगलूर - कर्नाटक
2.	निर्वाह (रक्षा) कमांड	नागपुर - महाराष्ट्र

भारतीय वायुसेना प्रशिक्षण केंद्र

क्र. सं.	प्रशिक्षण केंद्र	स्थान और राज्य
1.	वायु सेना अकादमी	डंडीगल (हैदराबाद) - तेलंगाना
2.	बेसिक फ्लाईंग ट्रेनिंग स्कूल	प्रयागराज - उत्तर प्रदेश
3.	एयर ट्रेनिंग स्कूल	सांबरा - बेलगाम - कर्नाटक
4.	वायुसेना तकनीकी कॉलेज	जालहल्ली - बेंगलूर - कर्नाटक
5.	कॉलेज ऑफ एयर वारफेयर	सिकंदराबाद - तेलंगाना

इनके अलावा वायुसेना का प्रशिक्षण देने वाले प्रमुख केंद्र बेंगलूर और हैदराबाद में हैं। वायुसेना में नियुक्त होनेवालों को उड़ान प्रशिक्षण देने की विशेष प्रशिक्षण अकादमी की स्थापना दुंडिघाट में की गई है। वैसे ही प्रशासन और तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र बेंगलूर और कोयमतूर में हैं। हमारी वायुसेना में एक हजार से अधिक हवाई जहाज, और हेलिकाप्टर हैं। उनमें प्रमुख हवाई जहाज हैं। केनबेरा, हंटर, अजित मिग 21, मिग 23, मिग 25 मिग 27, मिग 29, मिरेज 2000, सुखोय-SU-30 MK I , तेजस्, राफेल, जगुआर आदि हैं। प्रमुख लड़ाकू हेलीकॉप्टर - रुद्र, चिनूक, ध्रुव आदि हैं।

8 अक्टोबर - भारतीय वायुसेना दिवस

**आपको ज्ञात रहे।
तीनों प्रकार के रक्षा दलों के सेवा वर्ग**

1. थल सेना	2. नौका सेना	3. वायुसेना
य) जनरल	य) अड्मिरल	य) एयर चीफ मार्शल
र) लेफ्टिनेंट जनरल	र) वाइस अड्मिरल	र) एयर मार्शल
ल) मेजर जनरल	ल) रियर अड्मिरल	ल) एयर वैस मार्शल
व) ब्रिगेडियर	व) कमांडर	व) एयर कमांडर
श) कर्नल	श) कैप्टन	श) ग्रूप कमांडर
ष) लेफ्टिनेंट कर्नल	ष) कमांडर	ष) विंग कमांडर
स) मेजर	स) लेफ्टिनेंट कमांडर	स) स्कवार्डन लीडर
ह) कैप्टन	ह) लेफ्टिनेंट	ह) फ्लैट लेफ्टिनेंट
क्ष) लेफ्टिनेंट	क्ष) सब लेफ्टिनेंट	क्ष) फ्लैयिंग अफिसर

सेना नियुक्ति : भारत का प्रत्येक नागरिक भारतीय सेना में जाति, धर्म, वर्ग, और समुदायिक भेद भाव के बिना नियुक्त हो सकता है। लेकिन उस व्यक्ति में सरकार द्वारा निर्धारित कुछ शारीरिक, मानसिक, शैक्षणिक और सामान्य योग्यताएँ (अर्हता) होनी चाहिए और उस पद के लिए अपेक्षित तकनीकी योग्यताएँ तथा विशेष योग्यताएँ अनिवार्य हैं।

भूसेना में निम्न स्तर के पदों के लिए नियुक्ति राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों से नियुक्त पुरुष जनसंख्या के अनुसार (The Recruitable Male Population - RMP) की जाती है। वायुसेना के लिए सशक्त युवकों की नियुक्ति पंजीकरण द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर की जाती है। केंद्र वायुसेना नियुक्ति मंडल (Central Airmen Selection Board - CASB) द्वारा होती है। नौसेना में नाविकों की नियुक्ति नौकाबल नियुक्ति संगठन द्वारा होती है। (Naval Recruitment Organisation - NRO) इसकी जिम्मेदारी मानव संसाधन विकास मंत्रालय और नौका बल केंद्र कार्यालय की होती है। इसके अलावा तीनों सेनाओं के लिए महिलाओं की नियुक्ति विशेष योजना द्वारा की जाती है। (Women Special Scheme - WSES). हाल ही में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश के अनुसार महिलाओं को सेना बलों की सभी शाखाओं में अल्पकालिक सेवा (14 वर्षों तक सीमित) के बजाय दीर्घकालिक सेवा देने का अवसर प्रदान किया गया है ।

अग्निपथ योजना : भारत के युवाओं को सशस्त्र बलों में सेवा करने में सक्षम बनाने की योजना ही अग्निपथ योजना है। यह योजना 2022 में शुरू हुआ था। 17½ - 21 वर्ष की आयु के युवा अग्निपथ योजना के तहत आवेदन कर पात्रता मानदंडों को पूरा कर सशस्त्र बलों में शामिल हो सकते हैं। इन्हें अग्निवीर कहा जाता है। ये चार साल तक सेना में सेवा दे सकते हैं।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और नौसेना अकादमी परीक्षा : केंद्रीय लोक सेवा आयोग (UPSC) इस परीक्षा का आयोजन साल में दो बार करता है और इस परीक्षा में बैठने के लिए 12वीं कक्षा या समकक्ष छात्र का होना ज़रूरी है। यह परीक्षा राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और राष्ट्रीय नौसेना अकादमी में प्रव्रश प्रदान करती है। इस परीक्षा उत्तीर्ण करनेवाले उम्मीदवार उपरोक्त अकादमियों में निर्धारित प्रशिक्षण पूरा करने के बाद भूसेना, वायुसेना और नौसेना में अधिकारियों के पद पर होंगे।

रक्षा-उत्पादन : रक्षा उत्पादन के कार्यों को दो भागों में विभाजित किया जाता है। पहले विभाग द्वारा चलानेवाले कारखाने तथा दूसरा-सार्वजनिक क्षेत्र के कारखाने। इनमें से पहले विभाग में गोला, बारूद, शत्रुसूत्र टैंकर आदि तैयार किया जाता है। पनडुब्बी, हवाई जहाज, भूवाहन जैसे बुलडोजर, सबमेरिन, उड्डयन आदि सार्वजनिक क्षेत्र के कारखानों में निर्मित किये जाते हैं।

आपको ज्ञात रहे :

सार्वजनिक क्षेत्र के सुरक्षा उद्यम

1954 - BEL (Bharath Electronics Ltd.)

1964 - BEML (Bharath Earth Movers Ltd.)

1964 - HAL (Hindustan Aeronautics Ltd.)

1970 - BDL (Bharath Dynamics Ltd. etc)

हमारी सुरक्षा की तैयारी और अनुसंधान का विकास : आज हमारे सुरक्षा बलों के समाने अनेक चुनौतियाँ हैं। इसलिए राष्ट्रसीमा की रक्षा में हमारे सैनिकों को सदा तैयार रहना पड़ता है। हमारी सेना को विश्व में चौथा स्थान प्राप्त है। वायुसेना तीसरी स्थान पर और नौ सेना सातवीं स्थान पर है।

हमारे नौकाबल को शक्तिशाली बनाने के लिए कारवार के पास सीबर्ड नौका अड्डा स्थापित किया गया है। इसके अलावा 1958 में रक्षण अनुसंधान और अभिवृद्धि संस्था (DRDO - Defence Research and Development Organisation) की स्थापना भी की गयी है। इसके प्रमुख कार्यालय नई दिल्ली में है।

भूमि से भूमि पर वार करनेवाली प्रक्षेपक अग्नि-I, अग्नि-II, अग्नि-III, अग्नि-IV, अग्नि-V, पृथ्वी-I, पृथ्वी-II, धनुष, शैरी और प्रहार है। हवा से हवा में वार करनेवाली प्रक्षेपक अस्त्र, नोवेटर K-100 है। भूमि से आकाश पर वार करनेवाली प्रक्षेपक, आकाश, त्रिशूल, बराक-8, क्रूज्, प्रक्षेपक ब्रह्मोस और निर्भय, पनडुब्बी ब्यालिस्टिक प्रक्षेपक सागरिक K-15, लडाकू टैंक प्रतिरोधी प्रक्षेपक अमोघ, नाग और हेलिना प्रक्षेपक को विकसित किया गया है। भारत आज प्रसिद्ध राष्ट्रों की श्रेणी में है। अमेरिका, रूस ब्रिटेन, फ्रान्स अन्य राष्ट्र हैं।

बोफोर्स फिरंगी को कार्गिल युद्ध में (भारत और पाकिस्तान) सफलता पूर्ण प्रयोग किया गया है। समय आने पर परमाणु अस्त्र आंदोलन का सामना करनेवाली तकनीक को पोखरन के प्रयोग से ज्ञात किया गया है। राष्ट्र के विविध प्रदेशों में 55 रक्षा प्रयोगालयों को स्थापना की गयी है। राष्ट्र की सुरक्षा और उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए हमें सेना में शामिल होना है। अपनी सेनाबलों की तरह हमें भी सदा तैयार रहना है।

आपको ज्ञात रहे :

कारगिल युद्ध- 1999 : भारत और पाकिस्तान के बीच 1999 के मई-जून में कारगिलयुद्ध हुआ। मई 16 के दिन पाकिस्तान के सैनिकों ने कश्मीर के ऊँचे प्रदेश पर हवाई जहाज द्वारा आक्रमण किया। प्रत्युत्तर में झुआपरेशन विजयफ के नाम से भारत ने भी हमला बोल दिया। पहले भारतीय सेना को थोड़ा पीछे हटना पड़ा। लेकिन बाद में आक्रमण को दुगुना कर बोफोर्स बंदूकों से जून 14 को आक्रमण करने पर पाकिस्तान अपमानित होकर हार मानकार पीछे हट गया। यह छोटा युद्ध होने पर भी विश्व का ध्यान इसकी ओर रहा। शांतिप्रिय देश भारत पर आक्रमण करनेवाले पाकिस्तान को आक्रमणकारी देश के नाम से पूरे विश्व ने निंदा की। इस युद्ध से भारतीयों में राष्ट्रचेतना जागृत हुई।

इस युद्ध में भारत के करीब 30000 सैनिकों ने भाग लिया, पाकिस्तान के आक्रमणकारी सैनिकों की संख्या लगभग 5000 तक थी। भारतीय भू-सेना को प्रोत्साहन देते हुए वायुसेना 'सेफ्ड सागर' कार्य आचरण प्रारंभ किया। जुलाई के अंतिम सप्ताह में भारतीय सेना ने अंतिम आक्रमण प्रारंभ किया। जुलाई 26 को युद्ध समाप्त हुआ। पाकिस्तान के विरुद्ध इस जीत को 'कारगिल विजय दिवस' के नाम से जाना जाता है। हर वर्ष जुलाई 26 को इस दिवस को मनाया जाता है।

दूसरी श्रेणी की सुरक्षा व्यवस्था (Paramilitary) :

हमारे सेना बलों की पूरक दूसरी श्रेणी के रक्षा व्यवस्था को सुरक्षा के अनेक इकाईयों द्वारा व्यवस्था की गयी है। वे हैं :

1. प्रादेशिक सेना (Territorial army)
2. एन. सी. सी. (National Cadet Corps)

3. तटीय पहरा (Coastal Guard)
4. सीमा सुरक्षा दल (Border Security Force)
5. नागरिक रक्षा (Civil Defence)
6. गृहरक्षक दल (Home Guards)
7. रेड क्रॉस (Red Cross)

प्रादेशिक सेना (Territorial army)

: यह अंशकालिक स्वयं सेवाबल है। 1948 के संसद अधिनियम के अनुसार इसकी स्थापना हुई। इसमें सेना में कार्यरत सैनिक नहीं होते। अपने काम के बीच समय निकालकर इच्छुक युवक मिलिटरी प्रशिक्षण इसमें पा सकते हैं। 18 आयु से 42 आयु तक के नागरिक इसमें शामिल हो सकते हैं। राष्ट्र की आपातकालीन परिस्थिति का सामना, प्राकृतिक विकोप के संदर्भ में यह कार्य करता है। हरसाल अक्टूबर 9 को 'प्रादेशिक सेना दिवस' के रूप में मनाया जाता है।



एन.सी.सी (National Cadet Corps): एन.सी.सी देश का एक प्रधान संगठन है। 1948 में इसकी स्थापना हुई। इसमें पाठशाला विश्वविद्यालय के छात्र स्वेच्छा से शामिल हो सकते हैं। इसका प्रमुख उद्देश्य व्यक्तिगत गुणों का विकास करना, मित्रता बनाना और आदर्श सेवा भावना का विकास करना है। यह अनुशासन प्रशिक्षण प्राप्त जन समूह होता है। राष्ट्रीय आपातकालीन परिस्थिति में देश की सहायता करते हैं। एन.सी.सी के दो विभाग हैं। सीनियर और जूनियर। सीनियर में कालेज के विद्यार्थी होते हैं। जूनियर में पाठशाला के विद्यार्थी होते हैं। इन कैडेटों को कई सुविधाएँ उपलब्ध की जाती हैं। वे हैं -

- एन.सी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त छात्रों को सेना में भर्ती होने का विशेष अवसर दिया गया है।
- प्रशिक्षण समाप्त करके प्रमाणपत्र प्राप्त छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा में आरक्षण की व्यवस्था है।
- प्राशिक्षण में आयुध शिक्षा देना।

प्रशिक्षण के दौरान केडेट इन साहसों को सीखते हैं:-

- पदयात्रा (हैकिंग)
- साहसिक यात्रा (ट्रेकिंग)
- फिसलना (ग्लैडिंग)
- पर्वतारोहण (स्केलिंग)

क्रिया कलाप:

अपने स्कूल में एन.सी.सी.
स्काउट में शामिल होकर
अधिक अनुभव पाइये।

भारतीय तट सुरक्षा बल (Indian Coast Guard): यह एक आंशिक मिलिटरी सेवा है। दूसरी श्रेणी के सुरक्षा बलों में यह महत्वपूर्ण है। 1978 में इसकी स्थापना हुई। यह तट की सुरक्षा (Maritime) और राष्ट्र की रक्षा के संबंधित रक्षाबल है। **वयं रक्षमाम्** (हम रक्षा करते हैं) इसका आदर्श वाक्य है। यह करीब 7,516.5 की.मी. तटीय प्रदेश की रक्षा का कार्य करने के साथ गैर कानूनी समुद्री व्यापार, चोरी करना नशीले पदार्थों की तस्करी आदि अव्यवहारों को रोकने में सहकारी है। इस सुरक्षा बल की नौकाओं के अनेक वीरोचित नाम हैं- जैसे पुठार, विक्रम, विजय और वीर। इसका प्रधान कार्यालय दिल्ली में है। इसके एक डायरेक्टर जनरल भी होते हैं। इस संघटन का प्रादेशिक कार्यालय मुंबई, चैन्नै, गांधीनगर, और अंडमान निकोबार के पोर्टब्लेयर में है। (श्री विजयपुरं)

तटरक्षक दल के पास 1402 परिष्कृत जहाज और 381 विमान और 60 हेलिकॉप्टर हैं। तट पर 12,585 योद्धा हैं।

1 फरवरी - भारतीय तट सुरक्षा दल दिवस।

सीमा सुरक्षा बल (BSF - Border Security Force) : सीमा सुरक्षा बल की स्थापना 1965 में हुई। इसके सैनिक भारत पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ की सीमा रेखा प्रदेशों की रक्षा करते हैं। इसका प्रशिक्षण केंद्र बेंगलूर के यलहंका में हैं। सीमा भाग में अतिक्रम प्रवेश, गैर कानूनी धंधे को वस्करी आदि को रोकने में सहकारी है।

नागरिक रक्षा बल (Civil Defence) : प्राणों की रक्षा, नागरिकों के जायदाद की रक्षा, औद्योगिक उत्पादनों की रक्षा इसका मुख्य उद्देश्य है। हम स्वेच्छा से इस संघटन में शामिल हो सकते हैं। इस संघटन के करीब 22 विभागों को देश में सीमित किया गया है। हाल ही में 13 लाख नागरिक रक्षण स्वयं सेवक बने हैं। उनमें आज 6.64 लाख स्वयं सेवक प्रशिक्षित हैं।

गृह रक्षा दल (Home Guards) : यह एक स्वयं सेवा संघटन है। 1946 में इसकी स्थापना हुई। यह स्थानीय पुलिसों को सहायता करता है। नागरिक समाज के आंतरिक कलहों को रोकने, शांति स्थापना, निर्वाचन में पुलिस की सहायता में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे कुछ राज्य और केंद्रशासित प्रदेशों ने अपनाया है। 1962 में चीन आक्रमण के समय स्वयं सेवा संघटन ने समवस्त्र धारण कर देश की रक्षा में सहायता की। हमारे देश में करीब 5,73,793 गृहरक्षक दल के स्वयं सेवक हैं। देश भर में यह संघटन व्याप्त है।

भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी (Indian Red Cross Society) : यह एक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर का संघटन है। भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी की स्थापना ब्रिटिश शासन के दौरान 1920 में भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी अधिनियम को जारी कर की गई। इसका प्रधान कार्यालय दिल्ली में है।

भारत की रेड क्रॉस संस्था मानवीय स्वयं संघटक के रूप में काम करती है। राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों में करीब इसकी 700 शाखाएँ हैं। भारत के राष्ट्राध्यक्ष इसके अध्यक्ष हैं। राज्यशाखा के अध्यक्ष राज्यपाल होते हैं। इसके अलावा सेक्रेटरी जनरल मुख्य कार्य निर्वाहक अधिकारी होता है। यह संघटन राष्ट्र की आपात कालीन परिस्थिति में लोगों की सहायता करता है। बिना किसी भेद भाव के युद्ध भूमि में घायलों और अस्वस्थ लोगों की सेवा करता है।

भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी के मूलभूत तत्व :

इस संस्था के 7 मूलभूत तत्व हैं। 1) मानवीयता 2) निष्पक्षता 3) स्थिरता 4) स्वतंत्रता 5) स्वयं सेवा 6) ऐक्यता 7) विश्वव्यापकता।

8 मई - विश्व रेडक्रॉस दिवस

भारतीय सेना के जवानों को दिए जानेवाले शौर्य पुरस्कार : भारतीय भू सेना, नौ सेना, वायु सेना और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस दलों के अधिकारी और कर्मचारियों को निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित और प्रोत्साहित किया जाता है।

युद्धकाल में दिए जानेवाले शौर्य पुरस्कार :

- | | | |
|----------------|----------------|-------------|
| 1) परमवीर चक्र | 2) महावीर चक्र | 3) वीर चक्र |
|----------------|----------------|-------------|

शांति काल में दिए जानेवाले शौर्य पुरस्कार :

- | | | |
|--------------|----------------|---------------|
| 1) अशोक चक्र | 2) कीर्ति चक्र | 3) वीरता चक्र |
|--------------|----------------|---------------|

इस प्रकार केवल युद्ध काल में सीमित न रहकर शांति काल में भी हमारे सुरक्षा बल देश के लिए अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। ये बाढ़, भूकंप, भूक्षरण, आंधी- तूफान जैसे प्राकृतिक विकोपों से ग्रस्त जनता की सहायता करते हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा गारद (NSG - National Security Guard): यह भारत में आतंकवाद के गंभीर कृत्यों को रोकने के लिए असाधारण परिस्थितियों में कार्रवाई करनेवाला दल है। यह संगठन 22.09.1986 में अस्तित्व में आया। 'सर्वत्र सर्वोत्तम सुरक्षा' (हर जगह परम सुरक्षा) इस संगठन का आदर्श वाक्य है।

विशेष सुरक्षा दल (SPG - Special Protection Group): भारत के प्रधानमंत्री और पूर्व प्रधानमंत्रियों और उनके परिवार के करीबी सदस्यों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए इस दल को 1985 में अस्तित्व में लाया गया। 'शौर्यम् समर्पणम् सुरक्षणम्' (शौर्य भक्ति और रक्षा) इस संगठन का आदर्श वाक्य है।

सुरक्षा बल और अंतर्राष्ट्रीय शांति : हमारा सेनाबल केवल राष्ट्ररक्षा के लिए सीमित नहीं, बल्कि विदेशों में शांति स्थापना द्वारा देश की गरिमा बढ़ाता है। विश्वसंस्था की निगरानी में हमारे सैनिकों ने गाझा, कोरिया, कांगो, श्रीलंका आदि प्रदेशों में सेवा कर कीर्ति प्राप्त की है। हमारे सैनिकों की सहायता से बांग्लादेश स्वतंत्र राष्ट्र हुआ है।

इस प्रकार केवल युद्ध काल में सीमित न रहकर शांति काल में भी हमारे सुरक्षा बल देश के लिए अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। ये बाढ़, भूकंप, भूक्षरण, आंधी - तूफान जैसे प्राकृतिक विकोपों से ग्रस्त जनता की सहायता करते हैं।

आपको ज्ञात रहे :

केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल : (CAPF - Central Armed Police Forces)

1. असम राइफल्स (AR - Assam Rifles)
2. सीमा सुरक्षा बल (BSF - Border Security Force)
3. केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF - Central Industrial Security Force)
4. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF - Central Reserve Police Force)
5. भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP - Indo Tibetan Border Police)
6. राष्ट्रीय सुरक्षा गारद (NSG - National Security Guard)
7. सशस्त्र सीमा बल (SSB - Sashastra Seema Bal)

29 मई - संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षकों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस

आपको ज्ञात रहे :

- भू सेना, वायु सेना, नौ सेना, NCC और भारतीय तट रक्षक, प्रशासनिक रूप से केंद्रीय रक्षा मंत्रालय के अधीन है ।
- केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल प्रशासनिक रूप से केंद्र गृह मंत्रालय के अधीन है ।
- AR - भारत और म्यांमार के बीच की सीमा की रक्षा करता है ।
- BSF - भारत और पाकिस्तान तथा भारत और बांग्लादेश के बीच की सीमा की रक्षा करता है ।
- ITBP - भारत और चीन के बीच की सीमा की रक्षा करता है ।
- SSB - भारत और नेपाल तथा भारत और भूतान के बीच की सीमा की रक्षा करता है ।

अभ्यास :

I. खाली जगहों को उचित शब्दों से भरिए :

1. हमारे तीन सेनाबलों के सर्वोच्च प्रधान सेनापति _____ है।
2. भू-सेना के प्रमुख _____ हैं।
3. रक्षा मंत्रालय का प्रधान कार्यालय _____ में है।
4. हिंदुस्तान का जहाज कारखाना _____ में है।
5. सीमा सुरक्षा बल का प्रशिक्षण केंद्र _____ में है।
6. भारतीय रेडक्रास की स्थापना _____ में की गई है।

II. निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

7. हमारे रक्षा मंत्रालय के चार विभाग कौन से हैं ?
8. भारतीय की भूसेना की रचना का विवरण दीजिए।
9. भारतीय भूसेना के कमांड कौन से हैं ?
10. भारतीय वायु सेना के कार्यों का विवरण दीजिए।

11. सेना नियुक्ति के लिए कौन-सी योग्यताएँ होनी चाहिए?
12. एन. सी. सी. के मुख्य लक्ष्य कौन-से हैं? एन.सी.सी. कैडेटों को प्राप्त होनेवाली सुविधाएँ कौनसी हैं?
13. चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के बारे में लिखिए।

III. गतिविधि:

1. देश की सुरक्षा हमारे सेनाबल पर आधारित है। इस विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।
2. अपने निकट के रेडक्रास संघटन जाकर उसकी कार्य सूची बनाइए।
3. निवृत्त सैनिकों को विद्यालय में आमंत्रित करके उनसे सेवा अनुभव प्राप्त कीजिए।

IV. परियोजना:

1. हमारे सेना बलों का चित्र तैयार करके विद्यालय में प्रदर्शित कीजिए।
2. विद्यालय में भारतीय रेडक्रास सोसाइटी बनाकर सार्वजनिकों को उसकी जानकारी दीजिए।
3. युद्ध पोत (जंगी जहाज) जंगी नौकाओं का चित्र संग्रह कीजिए।

राष्ट्रीय भावैक्य



इस अध्याय में निम्नलिखित अंशों को समझते हैं।

- राष्ट्रीयता का अर्थ ।
- देश की विविधता में एकता लानेवाले अंश।
- राष्ट्रीय भावैक्य के सफलता के अंश।

राष्ट्रीयता : राष्ट्र नामक शब्द से राष्ट्रीयता शब्द आया है। आधुनिक विद्वानों के अनुसार राष्ट्रीयता को निर्धारित करने वाले अंश हैं - अपने आवास स्थान को मातृभूमि मानने वाला जनसमूह। उस जनसमूह के पारस्परिक भ्रातृत्व की भावना और राष्ट्र के सुख-दुखों में समान रूप से भाग लेने वाले ऐसे लोगों को राष्ट्रीय और ऐसी भावना को राष्ट्रीयता कहते हैं।

अनादि काल से भारत में आवासित लोगों में ऐसी राष्ट्रीय भावना देखी जा सकती है। हमारे देश पर हुए विदेशी आक्रमणों के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा इसी राष्ट्रीयता भावना ने दी। अंग्रेजों के खिलाफ हुए आंदोलन की मूल प्रेरणा यही थी।



हर साल 26 जनवरी को नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर होनेवाली गणतंत्र दिवस परेड हमारे देश की भावैक्य को बतानेवाली एक भव्य नजारा है।

राष्ट्रीय भावैक्यता : एक देश के लोग, हम सब एक हैं, यह भावना ही राष्ट्रीय भावैक्यता है। अर्थात् विविध जाति, धर्म, प्रादेशिकता और विविध भाषा बोलनेवाले होकर भी अपनी एकता को पहचानना। इस प्रकार की एकता शक्तिशाली राष्ट्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारत एक विशाल राष्ट्र है। इस देश में अनेक भाषाओं और उपभाषाओं को बोलनेवाले लोग हैं। संविधान के 8वीं अनुसूची के प्रकार 22 भाषाओं को अधिकृता अनुसूचित भाषा के रूप में स्वीकार किया है। हमारे देश में अनेक प्रकार के धर्म और जाति (हिंदू, इस्लाम, ईसाई, बौद्ध, जैन, सिख और फारसी) आचरण में रहना एक अद्वितीय लक्षण है। उसी प्रकार विविध वेशभूषा, आहार पद्धति, और सामाजिक व्यवस्था होने के बावजूद भी हममें एकता की भावना है। भौगोलिक और प्राकृतिक विविधता होने पर भी राजनीतिक दृष्टि से प्रत्येक भाग को समेकित रूप में, एक ही संविधान के अधीन प्रशासित है।

विविधता में एकता : भारत अपने कई विविधताओं के बीच में भी एकता की मूल बुनियाद रखता है। भौगोलिक, सामाजिक, भाषा, सांप्रदायिक, राजनीतिक, धार्मिक, जनांगीय तथा संस्कृति के बीच में विविधता होने पर भी हिमालय से कन्याकुमारी तक के भारतीयों की जीवन शैली में एकता के अंश निहित हैं। एक प्रकार की प्रशासन व्यवस्था, सरल समूह माध्यम, आधुनिक शिक्षण, स्वास्थ्य, कानून पद्धति-आदि एकता के अंशों को प्रतिबिंबित करते हैं।

विविधता में एकता को प्रतिबिंबित करनेवाले अंश :

भौगोलिक एकता : भारत विश्व के दूसरे देशों से अलग होकर, हिमालय पर्वत, बंगाल खाड़ी, हिंदमहासागर, अरब सागर, आदि प्राकृतिक रूप से एकता प्राप्त है। इस भौगोलिक भूमि पर रहने वालों द्वारा राष्ट्रगीत गाना राष्ट्रीय एकता का द्योतक है।

राजनैतिक एकता : अनादि काल से भारत में एकरूपता को पाने के साथ आज भी भारत ने एक संविधान, एकरूप कानून, शिक्षाक्रम, संघीय न्यायांग व्यवस्था, शक्तिशाली केंद्र सरकार की प्रशासन नीति में राजनैतिक एकता हासिल की हैं। राजनीतिक रूप से हम भारतीय हैं इस पहचान के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून, संचार माध्यम आदि क्षेत्र में सर्वमान्य मानदंड हैं।

धार्मिक एकता : भारत एक बहुधार्मिक राष्ट्र है। हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख, ईसाई, इस्लाम, फारसी-आदि धर्म हैं, प्रत्येक धर्म अपने ईद-पर्वों को मनाता है। एक धर्म के

लोगों को दूसरे धर्म के लोगों के साथ भाग लेने से एकता तथा सर्वधर्म समन्वय की भावना आती है। सब धर्म के लोगों को अपने-अपने धर्मों को आचरण करने का अधिकार प्राप्त है।

भाषा की एकता : भारत विविध भाषाओं का मूल है। संस्कृत बहुत-सी भाषाओं की मूल भाषा है। अनेक भाषाओं को बोलनेवाले लोग भारत में हैं। प्रत्येक राज्य अपनी भाषा और साहित्य से युक्त है। फिर भी भाषा की एकता को क्षति नहीं होती है। भारत में हम देख सकते हैं कि एक भाषा के लोग दूसरी भाषा का सम्मान करते हैं।

सांस्कृतिक एकता : भारत में विविध वर्ग, जाति, धर्म होने पर भी सांस्कृतिक एकता को देख सकते हैं। विविध प्रदेश के लोगों के अपने संप्रदाय, आचार-विचार, वेश-भूषा, आहार पद्धति, जीवन शैली - आदि सांस्कृतिक विविधता होने पर भी वे समन्वित हैं।

राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करनेवाले अंश :

1. **धर्मनिरपेक्षता :** भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है, धर्म विरोधी राष्ट्र नहीं। इसका मतलब है - प्रत्येक नागरिक यहाँ अपने धर्म का आचरण करने का धार्मिक अधिकार प्राप्त कर चुका है। सर्वधर्म समन्वय यहाँ देखने को मिलता है। इसलिए यह राष्ट्रीय एकता का पूरक अंश है।

2. **लोकतंत्र :** भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है। यहाँ के नागरिक समान रूप से कानून के अधीन हैं। मूलभूत अधिकार और राज्य निदेशक तत्वों में सब नागरिकों को समान माना गया है। लोग विविध भाषा और संस्कृति के आधार पर कोई भेद भाव नहीं कर सकते। इसलिए हम समझ सकते हैं कि भारत एक ऐक्य राष्ट्र है।

3. **राष्ट्रीय त्योहार :** राष्ट्रीय त्योहार जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्रदिवस, गाँधी जयंती-आदि भारतीयों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इन त्योहारों को सब भारतीय नागरिक देश के प्रत्येक भाग में मनाते हैं। अपनी भाषा और संस्कृति को भुलाकर सब के द्वारा इनका आचरण होने के कारण हमारे राष्ट्रीय त्योहार, राष्ट्रीय एकता की याद दिलाती हैं।

4. **राष्ट्रीय चिह्न :** हमारे राष्ट्रीय चिह्न या प्रतीक, राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय पुष्प, राष्ट्र पक्षी, राष्ट्र प्राणी-आदि हमारे राष्ट्रीय चिह्न हमारी एकता के प्रतीक हैं। ये अंश भी हमारे आचरण के संदर्भ में अथवा आपत्ति के संदर्भ में सब में पारस्परिक सौहार्दता लाने में पूरक अंश हैं।



राष्ट्रीय प्रतीक



राष्ट्रीय पक्षी-मयूर



राष्ट्रीय पुष्प-कमल



राष्ट्रीय प्राणी-बाघ

पारस्परिक सौहार्दता : केंद्र और राज्य सरकार सामान्य ध्येयोद्देश्य द्वारा काम करते हैं। राष्ट्र का प्रत्येक प्रदेश दूसरे प्रदेश पर निर्भर है। प्रत्येक प्रदेश के उत्पादन आर्थिक विकास में योगदान देते हैं। उदा: पंजाब में गेहूँ का उत्पादन होता है तो तमिलनाडु में उसका विक्रय होता है, गुजरात में कपास का उत्पादन होता है तो बिहार में विक्रय होता है। इसलिए हर प्रदेश एक - दूसरे प्रदेश पर निर्भर है। कोई भी प्रदेश पूर्णतः स्वावलंबी नहीं होता। यह अंश सूचित करता है कि हम सब एक ही राष्ट्र के हैं।

गतिविधि :

आपके विद्यालय में राष्ट्रीय भावैक्यता वृद्धि करने वाले संदर्भों पर टिप्पणी लिखिए।

इतना ही नहीं संचारी माध्यम, समूह माध्यम, प्राकृतिक अंश, विविध संस्कृति, प्रादेशिकता, धर्म, भाषा आदि होने पर भी राष्ट्रीयता/ऐक्यता की भावना लोगों में देखी जा सकती है।

अभ्यास :

I. खाली जगहों को उचित शब्दों से भरिए:

1. गणराज्योत्सव गणतंत्र दिवस _____ तथाहारो में से एक है।
2. हमारे संविधान में अधिकृत / अनुसूचित भाषाओं के रूप में मान्यता प्राप्त भाषाओं की संख्या _____ है।
3. हमारा राष्ट्रीय प्राणी _____ है।
4. हमारा राष्ट्रीय पक्षी _____ है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों को सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए और उत्तर लिखिए:

5. राष्ट्रीयता किसे कहते हैं?
6. राष्ट्रीय एकता किसे कहते हैं?
7. विविधता में एकता को प्रतिबिंबित करने वाले अंश कौन-कौन से हैं?
8. राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करनेवाले अंश कौन-कौन से हैं?

III. गतिविधि:

1. विविधता में एकता लानेवाले चित्र तैयार करके विद्यालय में प्रदर्शन कीजिए।
2. अपने प्रदेशों में विविध धर्मों के त्योहारों का आचरण करने से संबंधित जानकारी प्राप्त कीजिए।

IV. परीयोजना :

1. राष्ट्रीय एकता को प्रतिबिंबित करनेवाले चित्रों का संग्रह कीजिए।
2. अपने विद्यालय में मनारा जाने वाले राष्ट्रीय त्योहारों पर एक निबंध लिखें ।
3. एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम पर एक निबंध लिखें ।



अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का एक परिचय

इस अध्याय में निम्नलिखित अंशों को समझते हैं।

- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की प्रमुख परिभाषाएँ
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की प्रारूप और कार्यक्षेत्र ।
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का महत्व ।

परिचय : समकालीन विश्व में 195 सार्वभौम राष्ट्र है । ये राष्ट्र पूर्णतः स्वतंत्र होने पर भी आत्मनिर्भर राष्ट्र नहीं हैं । चाहे वह कोई व्यक्ति हो या उनका प्रतिनिधित्व करनेवाला राष्ट्र, अपने लोगों की कमियों को दूर करने के लिए दूसरे राष्ट्र से जुड़ना ज़रूरी है । इस तरह की अनिवार्यताएँ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का परिचय करता है ।

अर्थ और परिभाषाएँ : अंतर्राष्ट्रीय संबंध - इन पदों का अर्थ राष्ट्र, राज्यों के बीच का अंतर संबंध ही है। 'इंटरनेशनल रिलेशनस्' शब्द का प्रयोग सबसे पहले जेरेमी बेंथम ने 1789 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'प्रिंसिपल्स ऑफ मोरल्स एंड लेजिस्लेशन' (Principles of Morals and Legislation) में किया था।

नीचे दी गई कुछ विद्वानों की परिभाषाएँ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने में मदद करती है ।

क्विंसी राइट : अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभिन्न समूहों, राज्यों, राष्ट्रों, सरकारों, लोगों, क्षेत्रों, संघों और धार्मिक, सांस्कृतिक और औद्योगिक संगठनों के बीच संबंधों का अध्ययन है ।

हंस जे मार्गेथो : उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति कहा है । अंतर्राष्ट्रीय राजनीति राष्ट्रों के बीच सत्ता के लिए संघर्ष और उसका उपयोग है ।

प्रारूप: अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का अपना ही प्रारूप है, जिसकी चर्चा इस प्रकार की गई है -

1) **परिवर्तन की प्रारूप :** अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की प्रारूप गतिशील है। यह विश्व राजनीति में क्या हुआ है? क्या हो रहा था? और आगे क्या होगा? इसका सटीक विश्लेषण है।

2) **अंतः विषय का विषय :** अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन अन्य सामाजिक विज्ञानों की तरह अंतः विषय प्रारूप का है। यह अन्य सामाजिक विज्ञानों से प्रभावित हुआ है और प्रभावित किया है।

3) **राष्ट्र राज्य हि प्राथमिक इकाई :** अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में, राज्य का व्यवहार राष्ट्रों के संबंधों की गति के लिए प्रेरक शक्ति है। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में राष्ट्र-राज्य को प्राथमिक इकाई माना जाता है।

4) **राष्ट्रीय हित और राष्ट्रीय ताकत मूलभूत कारक :** राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना राज्य का मुख्य लक्ष्य है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर देश दूसरे देशों के साथ संबंध बनाते हैं। और साथ ही किसी राष्ट्र की शक्ति उस राष्ट्र के हितों की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

5) **अधिकार के लिए संघर्ष :** हंस जे मार्गेथो के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति अधिकार या शक्ति के लिए एक संघर्ष है। जिसमें जिस देश के पास सबसे अधिक अधिकार या शक्ति होती है वह अपने हितों की पूर्ति के लिए दूसरे देशों को प्रभावित करता है।

6) **राष्ट्रों के बीच परस्पर क्रिया और प्रतिक्रिया :** आज की दुनिया में, कोई भी राष्ट्र अपने आप में परिपूर्ण नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र किसी न किसी तरह से दूसरे राष्ट्र पर निर्भर है। इसलिए अपने-अपने हितों की सुरक्षा के लिए परस्पर क्रिया और प्रतिक्रिया अनिवार्य है।

7) **सिद्धांत निर्माण के लिए प्रायोगिक और विश्लेषणात्मक विधानों का उपयोग :** ज्ञान की सभी शाखाओं के अध्ययन का आधार सिद्धांत है। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में भी सिद्धांत आधार है। ये सिद्धांत तात्विक (normative) और प्रायोगिक (empirical) स्वरूप का है। विशेष रूप से अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के विद्वानों ने इसके अध्ययन

को अधिक वैज्ञानिक बनाने के लिए प्रायोगिक और विश्लेषणात्मक तरीकों (Analytical Approach) का उपयोग किया है ।

8) आधिकारिक और गैर-आधिकारिक संस्थाओं की भूमिका : मान्यता प्राप्त और गैर-मान्यता प्राप्त संगठन अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन को प्रभावित करते हैं । संयुक्त राष्ट्र (UN - United Nations), विश्व बैंक (World Bank), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF - International Monetary Fund) जैसे संगठन आधिकारिक संगठन हैं । हिंसक संगठन गैर आधिकारिक संगठन हैं, जो वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए खतरा हैं । इस तरह के दोनों संगठनाएँ विश्व-राजनीति पर अपना प्रभाव डाल रहे हैं ।

व्याप्ति : अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का अपना व्याप्ति है, जो इस प्रकार है ।

1) अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन : अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का दायरा काफी व्यापक है । जिसमें विषय-वस्तु, उत्पत्ति, अर्थ, स्वरूप, व्याप्ति, महत्व, और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विकास को शामिल किया गया है ।

2) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन : इसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिकार को बलवृद्धि करने के लिए विभिन्न देशों के बीच सहयोग, संघर्ष, संधान और समन्वय जैसे मुद्दों को शामिल किया गया है । इन्हें कैसे और क्यों जारी में रखा गया ? इसके परिणाम क्या हैं ? इस विचारों पर परामर्श और अनुसंधान करने तक इसका दायरा फैला हुआ है ।

3) अंतर्राष्ट्रीय अभिनेताओं का अध्ययन : अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय और अंतर-सरकारी संगठनों का अपना ही प्रभाव होता है । उदाहरण के लिए रेड क्रॉस (Red Cross), अंतर्राष्ट्रीय और अंतर-सरकारी संगठन, विश्व व्यापार संगठन (WTO - World Trade Organisation), विश्व बैंक जैसे अंतर-सरकारी संगठनों (Inter Governmental Organisation) के साथ राष्ट्र राज्य की परस्पर क्रिया और प्रतिक्रियाओं का अध्ययन यहाँ किया जाता है ।

4) विदेश नीति : विभिन्न देशों की विदेश नीतियाँ, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की मूलाधार हैं । जो संबंधित देशों के ध्येय, लक्ष्यों और उपलब्धियों को सूचित करती हैं । इसलिए विदेश नीति भी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एक अभिन्न अंग है ।

5) युद्ध और शांति : यहाँ राष्ट्र-राष्ट्रों के बीच संघर्ष और युद्ध के कारणों और प्रभावों पर व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है ।

6) अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विचारों का सृजन और प्रसार : अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शांति स्थापित करना और संघर्षों को समाप्त करना है । वैश्विक शांति, सुरक्षा और समृद्धि को बढ़ावा देनेवाले विचारों का सृजन करना और प्रसारित करना भी इसके दायरे में आता है ।

7) राष्ट्र की शक्ति केंद्रों का अध्ययन : वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय संबंध राष्ट्रों के हितों के बीच संघर्ष का अध्ययन है। राष्ट्र के हितों की रक्षा करने में किसी राष्ट्र की शक्ति का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । इसलिए देश को शक्ति प्रदान करनेवाले इन शक्ति केंद्रों का अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विषय-वस्तु है ।

महत्व : अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अपना ही महत्व है । प्रथम विश्व युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का व्यवस्थित अध्ययन भी शुरू हुआ । अमेरिका, ब्रिटेन, स्विट्जरलैंड जैसे देशों के विश्वविद्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का व्यवस्थित अध्ययन शुरू हुआ । 1919 में ब्रिटेन में वेल्स विश्वविद्यालय में वुडरो विल्सन पीठ (Woodrow Wilson chair) की स्थापना से यह साकार हुआ । जिसके पहले अध्यक्ष एकार्थ जिम (Ekarth Jim) थे। इस प्रकार 1919 में पूर्व राजदूत एडमंड दा वॉल्श (Edmond A Walsh) ने विदेशी सेवा से संबंधित शिक्षा प्रदान करने के लिए अपने नाम पर अमेरिका के वाशिंगटन में जार्जटन विश्वविद्यालय में 'स्कूल ऑफ फॉरिन सर्विस' (School of Foreign service) की शुरुआत की ।

इस प्रकार सौ वर्षों से अधिक इतिहास के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन समृद्ध हो गया है। और यह विश्व के सभी नागरिकों के उज्ज्वल भविष्य को निर्धारित करता है। इसलिए इसके महत्व को समझना आवश्यक है ।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का महत्व :

1. विश्व राजनीति की वास्तविक स्वरूप का परिचय कराता है ।

विश्व राजनीति विभिन्न देशों और संगठनों के बीच वास्तविक शक्ति संबंधों की उत्थान-पतन को समझने में मदद करती है। विभिन्न देशों की क्रिया-प्रतिक्रियाएँ उस देश के

नीतिगत दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। इसलिए अंतर्राष्ट्रीय संबंध विश्व राजनीति की वास्तविकता को समझने में मदद करते हैं।

2. राष्ट्रीय हितों को समझने में मदद करता है।

राष्ट्रों के हित अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की मूल प्रेरणा है। इन हितों की स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की स्वरूप को निर्धारित करती है। इन हितों की पूर्ति के लिए ही सभी राष्ट्र अपने-अपने संबंधों को विकसित करते हैं।

3. विश्व सामना करनेवाली प्रमुख चुनौतियों पर ज्ञान प्रदान करता है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन का ज्ञान विश्व सामना करनेवाले प्रमुख चुनौतियाँ जैसे भूख, कुपोषण, गरीबी, अशिक्षा, बेरोज़गारी, संघर्ष, युद्ध, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और जैविक समस्याओं आदि को निपटाने के लिए आधार है।

4. विश्व चेतना को जागृत करता है।

देशों के बीच अलग-अलग हितों और आस्थाओं के कारण कई मतभेद हैं, लेकिन अंत में हम सब मनुष्य हैं, यह भावना हमारे बीच की सीमाओं को तोड़ देता है। इस प्रकार की भावनाएँ विश्व शांति में योगदान देती हैं और विश्व चेतना को जागृत करती हैं। इस संबंध में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन सहायक होता है।

5. विदेश नीति के महत्व पर जोर देता है।

विदेश नीति का अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन का एक हिस्सा है। जैसा कि पहले ही कहा गया है, विश्व शांति के लिए देशों के बीच अच्छे संबंध बहुत आवश्यक हैं और इसे साकार करने के लिए विदेश नीति का ज्ञान आवश्यक है।

6. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के महत्व को जानने में सहायक है -

मानव जीवन को आसान बनाने के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठन बनाए गए हैं। वैश्विक स्तर पर कई संगठन और संघ मौजूद हैं। वे विश्व शांति के लिए काम कर रहे हैं। उनकी सक्रियता के कारण दुनिया कम से कम कुछ हद तक शांति से रह रही है। विश्व संगठन, विश्व बैंक आदि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का अध्ययन ऐसे संगठनों को समग्र रूप से समझने में मदद करता है।

अभ्यास :

I. खाली जगहों को उचित शब्दों से भरिए:

1. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति इन्होंने कहा _____ ।
2. वुडरो विल्सन पीठ _____ विश्व विद्यालय में प्रारंभ हुई ।
3. इंटरनेशनल रिलेशन शब्द का प्रयोग करनेवाले प्रथम व्यक्ति थे _____ ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए:

4. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन क्या है ?
5. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का व्यवस्थित अध्ययन कब प्रारंभ हुआ ?
6. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के व्यवस्थित अध्ययन के लिए वेल्स विश्वविद्यालय में प्रारंभ हुई वुडरो विल्सन पीठ के पहले अध्यक्ष कौन थे ?
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की स्वरूप की व्याख्या कीजिए ।
8. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का क्या महत्व है ?

III. गतिविधि:

1. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में परस्पर निर्भरता के महत्व पर कक्षा में चर्चा करे ।
2. शिक्षक की सहायता से वैश्विक शांति में योगदान देनेवाले कारकों की सूची तैयार कीजिए ।
3. वुडरो विल्सन के जीवन और उपलब्धियों के बारे में जानें ।
4. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के लिए रचित पुस्तकों की सूची बनाएँ ।

IV. परियोजना :

1. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को बेहतर बनाने में विभिन्न देशों के नेताओं के बीच बैठक और विचारों के आदान-प्रदान के महत्व पर चर्चा करें ।
2. शिक्षक की सहायता से जानें कि कौटिल्य का अर्थशास्त्र अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विकास के लिए किस प्रकार उपयोगी है ?

सामाजिक शास्त्र

अध्याय 25

सामाजीकरण तथा पारिवारिक संबंध



इस अध्याय में निम्नलिखित बिंदुओं को जानते हैं।

- सामाजीकरण का अर्थ और उसका महत्व।
- व्यक्ति पर सामाजीकरण का प्रभाव।
- सामाजीकरण के प्रतिनिधि ।

सामाजीकरण :

मानव सामाजिक जीव है। उसका शिशु हर तरह के जानवरों की भाँति केवल प्राणी के रूप में जन्म लेता है। कालांतर में सामाजिक जीव के रूप में विकसित होता है। बच्चे के बड़े होकर सामाजिक व्यक्ति होने की प्रक्रिया को सामाजीकरण कहते हैं।

सामाजीकरण सार्वत्रिक है। मानव के पूरे जीवन में चलने वाली प्रक्रिया है। जानवर केवल अपने मूल प्रवृत्ति के आधार पर व्यवहार करते हैं। उनके व्यवहार में वैविध्यता नहीं होती। उनमें सीखने की क्षमता बहुत कम होती है। परंतु मानव में ऐसा नहीं है। उसके जन्म से ही आनेवाली सहज प्रवृत्तियाँ और संस्कृतियाँ उस पर प्रभाव डालती हैं। प्राकृतिक देन सीखने की क्षमता का वह यथावत उपयोग करता है। पर्यावरण और परिस्थिति के साथ मिलजुलकर जीने का प्रयत्न करता है। समाज में प्रचलित संप्रदाय, आचार- विचार, नैतिक नियम, आदि संस्कृति के अंशों का पालन करने की कोशिश करता है। उनको अपने सामाजिक व्यवहार में, आचरण में लाता है। ये सब व्यक्ति के सामाजीकरण से ही संभव है। इसलिए सामाजीकरण मानव का विशिष्ट लक्षण है।

समाजीकरण का महत्व / कार्य :

- 1) मनुष्य को जन-जीव /समूह जीव बनाता है।
- 2) व्यक्तित्व के विकास में मदद करता है।
- 3) जीवन में अनुशासन लाता है।
- 4) विभिन्न कौशलों को सीखने और अपनाने का अवसर प्रदान करता है।
- 5) उचित आकांक्षाओं को विकसित करने में मदद करता है।

- 6) सामाजिक अंतर को कम करता है।
- 7) एक भव्य भविष्य के निर्माण का अवसर प्रदान करता है।
- 8) संस्कृति की निरंतरता को आगे बढ़ाने में योगदान।
- 9) सामाजिक व्यवस्था को सुरक्षा प्रदान करता है।

सामाजीकरण के प्रतिनिधि : समाजीकरण को प्रभावित करने वाले दो मुख्य प्रकार के कारक तत्व हैं: पहला उम्र, अनुभव और बड़ों का प्रभाव है। दूसरा वह प्रभाव है जो एक व्यक्ति पर समवयस्क से पड़ सकता है। पहले विभाग में माता, पिता, गुरु जन तथा अधिकारियों को रखते हैं। दूसरे विभाग में मित्रों, साथियों तथा समवयस्कों को जोड़ा जा सकता है। इसके आधार पर निम्नलिखित अंश को सामाजीकरण का प्रतिनिधि कह सकते हैं।

1. **परिवार :** बच्चे के सामाजीकरण में परिवार की भूमिका प्रमुख है। माता-पिता बच्चे से सीधे रक्त संबंधी होते हैं। 'माँ ही बच्चे के लिए पहला शिक्षक, घर ही पहली पाठशाला' कहावत अक्षरशः सत्य है। माता-पिता का व्यवहार -बोली (व्यवहार), गतिविधियाँ, व्यवहार के तरीके - आदि बच्चे के नैतिक और भावनात्मक विकास को बहुत प्रभावित कर सकते हैं। घर पर बच्चा जीवन मूल्यों जैसे प्रेम, स्नेह, विश्वास, सहनशीलता, सहृदयता और सहकारिता का पहला पाठ सीखता है। पारिवारिक प्रशंसा उसकी गतिविधियों के लिए प्रोत्साहन का स्रोत हो सकता है। जब गलत किया जाता है, तो सजा सही रास्ता दिखाती है। माता-पिता आयु में, अनुभव में, तथा अधिकार में बड़े होने का कारण बच्चे आज्ञाकारी होते हैं। माता-पिता के सानिध्य के वातावरण से प्रभावित होते हैं। बच्चों का मन समाजीकरण से चमेली की कलियों की तरह खिलता है और प्रफुलित होता है।

गतिविधियाँ :

अपने परिवार को आधार बनाते हुए अपने दादी, पिता, माता, बहन/भाई, भाभी, बुआ- इन लोगों द्वारा निभानेवाली गतिविधियों की सूची बनाइए।

2. **साथी :** समाजीकरण के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधि साथी हैं, साथी खिलाड़ी और दोस्त होते हैं। यह रिश्ता सहयोग और आपसी अनुकूलता पर आधारित है। वे लग-भग एक ही उम्र के होते हैं, और एक बच्चा दोस्तों से ऐसी चीजें सीखता है जो वह अपने माता-पिता और शिक्षकों से नहीं सीख सकता। यह सीख समाज की दृष्टि से आवश्यक है।

3. **धर्म:** समाजीकरण की प्रक्रिया में धर्म की भूमिका महत्वपूर्ण है। धर्म सामाजिक जीवन की आदर्श नींव रखता है। नीतियुक्त जीवन जीना सिखाता है। धार्मिक स्थलों में माता-पिता, बुजुर्ग, रिश्तेदार बच्चे जाते हुए ध्यान देते हैं। पूजा, त्योहार, मेला, उत्सव आदि सामाजिक गतिविधियों में भाग लेकर वे धार्मिक गतिविधियों को अपनाते हैं। इससे सामाजिक सेवा में रुचि, दान, धर्म आदि से समाज को लाभ मिलता है।

4. **स्कूल :** एक बच्चे के समाजीकरण में स्कूल की महत्वपूर्ण भूमिका है। स्कूल की शिक्षा के प्रभाव के साथ उनके शिक्षकों और दोस्तों के व्यक्तित्व से प्रभावित होता है। शिक्षा द्वारा बच्चे का व्यवहार, ज्ञान, गुण और मानसिकता का निर्माण होता है। उसकी गुप्त शक्तियाँ और क्षमताएँ प्रकट होती हैं। अपने जीवन को बड़ा करके सामाजिक जीवन को तैयार करते हैं। बाल समाजीकरण में शिक्षक-शिक्षिकाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। वे उस उम्र में शिक्षकों से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। कई गुणों, जैसे - सद व्यवहार, सद्भावना और समानता, को शिक्षकों के व्यवहार में प्रदर्शित होकर बच्चों में जीवन के मूल्यों जैसे प्रेम, विश्वास, सहिष्णुता और सहृदयता को सिखाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। सहगामी गतिविधियों को संरचनात्मक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। स्कूल के पाठ्य विषयों में व्यावसायिक शिक्षा, यौन शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, जीवन कौशलों को ठीक तरह से उपलब्ध कराया जाना चाहिए। बच्चा इन अंशों को सीखकर सामाजीकरण प्राप्त करता है।



आप ही सोचिए :

सामाजीकरण की पृष्ठभूमि में बालक/बालिका के रूप में पाठशाला में आपसे निभानेवाने पात्रों की कार्यक्षमता के बारे में सोचिए।

5. **जनसंचार माध्यमों की भूमिका :** आधुनिक समाज में जनसंचार माध्यम एक प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं। दूरदर्शन, फिल्म, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, नाटकों, विज्ञापन, रेडियो आदि जैसे जनसंचार माध्यम साहित्य को विपुल मात्रा में उपयोग करते हैं। विज्ञापन, रेडियो कार्यक्रम, कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, नृत्य-रूपक, संगीत, भित्तिपत्र, विशेष व्यक्तियों के बयान, अमृत वाणियाँ और अनुभव के उद्धरणों का बहुत प्रभाव पड़ता है। समाचार, रसप्रश्न कार्यक्रम, परिचय, संवाद,

विचारगोष्ठी, विविध स्थलों को देखना, खोज आदि जनसंचार माध्यमों द्वारा सही उपयोग होता है। अच्छे संस्कार और व्यक्तित्व के निर्माण में सामाजीकरण बहुत मदद करता है। शैक्षणिक महत्व वाले कार्यक्रम इससे प्रभावित होते हैं। मगर आधुनिकता के प्रभाव से वर्तमान पीढ़ी संस्कृति तथा मूल्यों से दूर जा रही है।

6. पास-पड़ोस (Neighbourhood) : पास-पड़ोस

का अर्थ है आगल-बगलवाले। सामुदायिक गुणों का एक छोटा समूह है जो आकार में छोटा होता है। लोग आपस में संबंधित होते हैं। स्थानीय लोगों को कई

गतिविधि :

अपने पड़ोसियों के साथ आपके घरवालों के संबंध का विश्लेषण कीजिए।

प्रकार की जरूरी सेवा करते हैं। पास पड़ोस वालों का पात्र ग्राम और नगर प्रदेशों में दिखाई देता है। परंतु दोनों वातावरण में उसका स्वरूप अलग-अलग होता है। देहाती प्रदेशों में इसकी भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। पास पड़ोस के लोग सुख-दुख तथा खुशहाल समारोह में भाग लेते हैं। एक ही परिवार वालों जैसे जीते हैं। वे रुचि, अभिरुचि, त्योहारों - पर्वों, शादियों, धार्मिक समारोहों के अवसर पर एक-दूसरे की मदद करते हैं। ग्रामीण परिवेश में बड़ी संख्या में लोग इस भावना के साथ रहते हैं कि कोई पड़ोसी है। लेकिन शहरी परिवेश में ऐसी भावनाओं और कठिनाइयों में पड़ोसी होने की भावना असंभवनीय है। अक्सर, शहरों में पड़ोसियों को अपने रूप में पहचानने की तुलना में व्यक्तिगत रूप से पहचानना अधिक है।

लिंग और सामाजीकरण :

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, समाजीकरण प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है। समाजीकरण की प्रक्रिया सभी परिवारों में एक जैसे नहीं चलती। माता-पिता के आचार - विचार, शैक्षिक स्तर, आशा-आकांक्षाएँ, अभिरुचि और प्रधानता आदि समाजीकरण की प्रक्रिया में प्रभाव डालते हैं। इससे सामाजीकरण की प्रक्रिया में, जाने-अनजाने में मूल्यों को, आचार-विचारों को विभिन्न तरीकों से अपने बच्चों को शिक्षित करते रहते हैं। उदाहरण के लिए, बेटा खेल खेलकर घर देर आने से डाँटने और बेटी के देर आने से डाँटने में अंतर होता है। आमतौर पर, एक बेटे को अब आया क्या बेटा ? वही बेटी के देर से

आने को कहते हैं - अंधेरे से पहले घर आ जाना चाहिए। विशेष रूप से भारत में बेटी से रसोई घर में मदद करने की अपेक्षा करते हैं परंतु बेटे से इसकी अपेक्षा नहीं करते। इसी तरह खेलने के लिए बेटी को गुड़िया तथा बेटे को बल्ला देते हैं। इस तरह विभिन्न रूप से लिंग के आधार पर सामाजीकरण प्रक्रिया आमतौर पर चलती रहती है। इसे भेद-भाव का समाजीकरण कहा जाता है।

आज के आधुनिक जटिल समाज में महिलाओं के सामाजिक स्थान में काफी बदलाव आ रहे हैं। यह समय-समय पर, एक देश से दूसरे देश में बदल रहा है। भारत में, राष्ट्रीय और लोकतांत्रिक चेतना, नयी अर्थव्यवस्था, जो आधुनिक शिक्षा महिलाओं को अधीनता से मुक्त करके नयी दिशा प्रदान की। महिलाओं को कुछ पद मिलने लगे हैं जो पहले केवल पुरुष ही प्राप्त कर सकते थे। हालाँकि, लिंग भेद के आधार पर श्रम विभाजन अभी भी जारी है। महिलाओं ने हाल ही में खनन, स्टीलवर्किंग/लोहा और इस्पात के कारखानों में काम, सुरंग निर्माण कार्य (टनलिंग) और समुद्र की गहराइयों से संसाधनों को बाहर निकालने जैसे क्षेत्रों में काम करने की पहुँच हासिल की है। वैद्यकीय व्यवसाय, वकीली व्यवसाय, कानून, विश्वविद्यालय स्तर के अनुसंधान, कारखानों में कार्य, सेना क्षेत्र युद्ध सामग्री के निर्माण में महिलाएँ पहले से ही काम कर रही हैं।

स्वतंत्रता के बाद भारत में समानता सिद्धांत का कार्यान्वयन लड़कियों की शिक्षा के लिए सरकार की ओर से लाए गये विशेष कार्यक्रम, आर्थिक विकास, शहरी विकास और बदलते सामाजिक दृष्टिकोण के लिए विशेष कार्यक्रमों ने लैंगिक समानता लाने में प्रमुख भूमिका निभाई है।

गतिविधि :

विशेष उपलब्धियाँ हासिल करने वाली महिलाओं के बारे में जानकारी जुटाइए।

अभ्यास :

I. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. मनुष्य सामाजिक व्यक्ति बनने की प्रक्रिया को _____ कहते हैं।
2. माँ ही बच्चे की पहली _____ होती है।
3. चमेली की कलियों के समान बालकों का मन _____ से खिल उठता है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के समूहों में चर्चा करके उत्तर दीजिए :

4. समाजीकरण में हमउम्र की भूमिका बताइए।
5. पारिवारिक वातावरण में सीखनेवाले मूल्य कौन-कौन से हैं?
6. समाजीकरण की प्रक्रिया में धर्म की भूमिका क्या है?
7. समाजीकरण के महत्व बताइए।
8. समाजीकरण की प्रक्रिया में विद्यालय की भूमिका का वर्णन कीजिए।
9. आधुनिक समाज में जनसंचार माध्यम समाजीकरण के प्रतिनिधि के रूप में कैसे कार्य करते हैं?

III. गतिविधियाँ :

1. 'सामाजिक निर्माण में जनसंचार माध्यमों की भूमिका - एक निबंध' प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
2. समाजीकरण से संबंधित समाचार पत्रों में आनेवाले लेखों को एकत्रित कीजिए।

IV. योजना:

1. कर्नाटक में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ हासिल करने वाली महिलाओं के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

अध्याय 26

समुदाय



इस अध्याय में हम निम्नलिखित अंशों को समझते हैं।

- समुदाय शब्द का अर्थ।
- नगर - शब्द का अर्थ और शहरी समुदाय की विशेषताएँ।
- औद्योगीकरण - शहरीकरण का संबंध।
- ग्रामीण और आदिवासी समुदायों की विशेषताएँ।

समुदाय का अर्थ :

सामान्य नियम, मूल्य, सामान्य पहचानवाले एक निर्दिष्ट भौगोलिक प्रदेश में वास करनेवाले जनसमूह को समुदाय कहते हैं। यह एक सामाजिक इकाई है।

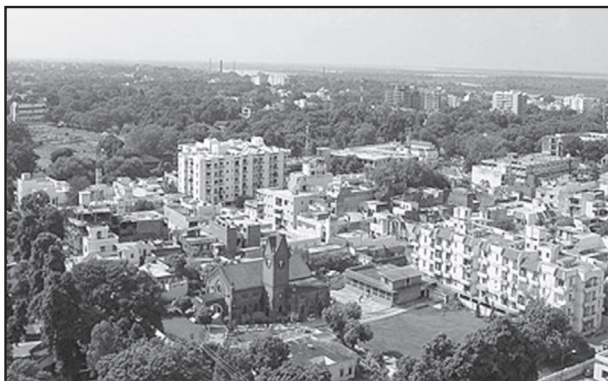
समुदाय :

मनुष्य अकेला नहीं रह सकता वह समूह जीवी है। वह निवास करने वाले समूह के सदस्यों से संबंध बनाए रखता है। निरंतर आवासित निर्दिष्ट प्रदेश के सह सदस्यों के साथ आवास के साथ-साथ सामाजिक रुचि, सामाजिक चिंता का विकास करता है। उनसे सामाजिक कल्याण का विकास होता है। इससे उसे कुछ सामान्य अवधारणाएँ बनती हैं। इसी प्रकार निर्दिष्ट क्षेत्र में सामान्य सामाजिक जीवन की अवधारणा ही 'समुदाय' है। समुदाय की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. जन समूह
2. सीमित निर्दिष्ट प्रदेश
3. जीवन के प्रति सामान्य दृष्टिकोण
4. एकता की भावना
5. कानून द्वारा अप्रमाणित

नगर क्या है ?

नगर सापेक्षाकृत बड़ी, घनी आबादी वाला और सामाजिक रूप से विविधता युक्त लोगों का स्थायी आवास स्थान है। नगर एक समुदाय है। 2011 की जनगणना उन कारकों को निर्धारित करती है जो एक 'नगर' को नगर बनाता है।



नगर

- 1) कम से कम 50,000. की जनसंख्या।
- 2) 1000 प्रति वर्ग मील की आबादी।
- 3) उनमें से अधिकांश गैर-कृषि गतिविधियों में लगे हुए हैं।
- 4) नागरिक सुविधाओं की उपलब्धता।
- 5) नगरी समुदाय को एक शहर, नगर और अन्य महानगर के रूप में मान्यता प्राप्त है।

गतिविधि : अपने निवास स्थान के निकटतम नगर और गाँव में अंतर (आबादी, विस्तार, सुविधाएँ आदि) का पता लगाइए।

शहरी स्वरूप की विशेषताएँ :

- 1) सामाजिक विविधता
- 2) गुमनामी
- 3) अधिक मात्रा की सामाजिक गतिशीलता।
- 4) व्यक्तिवाद, विलासितावाद और वैयक्तिकता पर अधिक जोर।
- 5) संघ और संगठनों का विकास ।
- 6) छोटे आकार का परिवार।
- 7) सामाजिक परिवर्तन की तीव्र गति।

खुद करें :

आपने जिला केंद्र में निहित बड़े-बड़े कारखानों की सूची तैयार करके उनसे उत्पादित वस्तुओं के नाम लिखिए।

औद्योगीकरण और शहरीकरण :

औद्योगीकरण से तात्पर्य वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए प्रयुक्त तकनीकी में परिवर्तन की प्रक्रिया से है। स्पष्ट रूप से कहा जाए तो उत्पादन के उद्योग के विकास का संकेत देने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

अंग्रेजों की अलगाववादी नीति के परिणाम स्वरूप, उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध तक भारत में उद्योगों की स्थापना नहीं की। बाद में उद्योगों की स्थापना ने पुराने गृह-उद्योगों को नष्ट कर दिया। इसने ग्रामीण लोगों को शहरी और औद्योगिक केंद्रों तक पहुँचाया। गाँवों को छोड़कर लोगों औद्योगिक नगरों में आश्रय पाने लगे तथा उपलब्ध रोजगार के अवसरों को स्वीकार किया। भौगोलिक और बड़े उद्योगों के व्यावसायिक आंदोलनों द्वारा लोग करीब आये। ट्रेन और बसों की सुविधाओं से लोगों में एकता आयी। औद्योगीकरण, खासकर हमारे सामाजिक माहौल को बदलकर शहरों का निर्माण कर दिया।



कारखाना

ग्रामीण समुदाय और उसकी विशेषताएँ :

ग्रामीण समुदाय भारतीय समाज का आधार स्तंभ हैं। इसका आधार ग्राम है। भारतीय संस्कृति और ऐतिहासिक विकास में गाँवों का महत्वपूर्ण स्थान है। समुदाय को सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पूर्ण संगठन कहा जाता है जो एक सीमित दायरे में सन्निहित है। सीमित भूमि क्षेत्र में रहने वाले लोगों का एक समूह को गाँव कहते हैं, जो सामान्य जीवन जी रहा है। एक गाँव का विचार एक छोटा जनसंख्या समूह है जो कृषि को न केवल एक पेशे के रूप में बल्कि जीवन के एक विधान के रूप में अपनाता है।

गतिविधि : आप अपने निवास स्थान में पास-पड़ोस के - संबंधों के बारे में क्या जानते हैं? अपने बड़ों से जानकारी संग्रह करें।

ग्राम समुदाय की विशेषताएँ :

जनसंख्या, विस्तार और जीवन शैली की दृष्टि से एक गाँव दूसरे गाँव से भिन्न होता है। समस्थल पर स्थित गाँव, तटीय गाँव से अलग है। रेगिस्तान या पहाड़ियों के गाँवों के जीवन के विधान में बदलाव देखे जा सकते हैं। कई भिन्नताओं के बावजूद गाँवों की सामान्य विशेषताओं की सूची इस प्रकार है-



ग्राम समुदाय

1. छोटे आकार का समुदाय
2. पारस्परिक संबंध
3. सामाजिक एकता
4. अनौपचारिक नियंत्रण
5. संयुक्त परिवारों की प्राथमिकता
6. कृषि का महत्व
7. प्रकृति का प्रभाव
8. पड़ोस का प्रभाव
9. सादगी
10. अत्यधिक धर्मश्रद्धा
11. पारंपरिक / सांप्रदायिक परिप्रेक्ष्य (दृष्टिकोण)
12. व्यापक जाति प्रणाली
13. निरक्षरता, गरीबी आदि।

जानिए : आपके गाँव में आयोजित मेले या उत्सव पर आधारित ग्रामीण समुदाय की विशेषताओं पर ध्यान देकर, एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए ।

ग्राम समुदाय की समस्याएँ / मुद्दे :

1. कृषि समस्याएँ / मुद्दे
2. गृह-उद्योग की समस्याएँ
3. निरक्षरता, गरीबी और बेरोजगारी
4. स्वास्थ्य व्यवस्थाओं की कमी
5. नागरिक सुविधाओं का अभाव।

आदिवासी-आदिवासी समुदाय और इसकी विशेषताएँ:

जनजातीय समुदाय वे लोग हैं जो नागरिक समाज से दूर जंगलों, घाटियों, पहाड़ियों आदि क्षेत्रों में रहते हैं। वे दुनिया भर में एक समान हैं और कुछ देशों में पर्याप्त संख्या में हैं। अफ्रीका के बाद दुनिया की सबसे बड़ी जनजातियों वाला देश है भारत । मानवशास्त्रीय शब्दकोश में जनजातियों को इस तरह परिभाषित किया गया है - सामान्यतः निर्दिष्ट भौगोलिक प्रदेश, भाषा, सांस्कृतिक समानता और सामाजिक संगठन वाला समूह । भारत की जनजातियों को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है: निग्रिटो, मंगोलियाई और भूमध्यसागरीय।

जनजाति की विशेषताएँ :

- 1) सामान्य क्षेत्र।
- 2) पारिवारिक समूहों का एक समूह।
- 3) आंतरिक संबंध क्रिया ।
- 4) सामान्य भाषा।
- 5) सादगी और आत्म परिपूर्णता।
- 6) सामान्य धर्म।
- 7) सामान्य संस्कृति।
- 8) सामान्य नाम।
- 9) संसृता (एकता का भाव प्रबल होना)।
- 10) निरक्षरता।



जनजाति

भारतीय जनजातियों को भौगोलिक रूप से निम्नानुसार विभाजित किया गया है।

1 पूर्वोत्तर क्षेत्र के आदिवासी : ये मंगोलों से संबंधित हैं और नागालैंड, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, असम, त्रिपुरा और मणिपुर में पाए जाते हैं। ये चीनी-तिब्बती भाषा प्रवर्ग से संबंधित भाषाएँ बोलते हैं, इनमें से कुछ सबसे प्रमुख हैं - गुरुंग, लिम्बी, लेप्पा, आका, मिशीगारो, खासी, चक्मा, नागा, सेमा, कचारी।

2. मध्य क्षेत्र के आदिवासी : कृष्णा नदी उत्तर तथा गंगा के दक्षिणी भागों के पहाड़ी और तलहटी हिस्से शामिल हैं। इन क्षेत्रों में संताल, मुंडा, भील, गोंड, ओरानो, बाइगा, खारिया, खोंडा, कोल, भूमि, सवारू जैसी जनजातियाँ निवास करती हैं। अन्य जनजातियों की तुलना में ये अधिक विकसित हैं।

3. दक्षिणी आदिवासी: कृष्णा नदी के दक्षिण और कन्याकुमारी से उत्तर में स्थित क्षेत्र को दक्षिणी क्षेत्र कहते हैं। आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु के कुछ भागों में ये जनजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें सोलिगा, यारवा, तोडव, कोटा, चेंचू, पणिया, काडार, सिद्धि, शहदगडरिया आदि प्रमुख हैं।

इसके अलावा चौथे समूह में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में आवासित जनजातियों का समूह है। इस क्षेत्र की प्रमुख जनजातियाँ ज़ारवा, ओन्गे, प्रहरी (सेंतिनेली) अंडमानी और निकोबारी हैं।

अभ्यास

I. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. निर्दिष्ट प्रदेश में सामान्य सामाजिक जीवन बिताने की अवधारणा ही _____ हैं।
2. भारतीय समाज का आधार स्तंभ _____ समुदाय है।
3. पूर्वोत्तर क्षेत्र के मूल निवासी _____ जनजाति से संबंधित हैं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के समूह में चर्चा करके उत्तर लिखिए:

4. नगर क्या है?
5. औद्योगीकरण का अर्थ क्या है?
6. गाँव की अवधारणा को संबोधित कीजिए।
7. मानव विज्ञान का शब्दकोश में 'जनजाति' शब्द के लिए क्या व्याख्या प्रदान की गई है?
8. नगरीय स्वरूप की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
9. ग्राम समुदाय की विशेषताओं की सूची बनाइए।
10. ग्राम समुदाय के समस्याओं को बताइए।
11. जनजाति की विशेषताओं को पहचानिए।
12. भारतीय जनजातियों को कैसे विभाजित किया जा सकता है?

III. गतिविधियाँ :

1. शहरी-ग्रामीण जीवन की सुविधा-असुविधाओं पर चर्चा कीजिए।
2. अपने आस पड़ोस या जाने माने जनजातियों की जीवन पद्धति के बारे में विषय संग्रह कीजिए।

IV. परियोजना :

1. अपने गाँव/नगर में सुविधाओं की कमी को दूर करने के लिए संबंधित ग्राम पंचायत/नगर पंचायत सदस्य से जानकारी प्राप्त कीजिए।

S4C3X2

- कर्नाटक में प्राप्त उपलब्ध खनिजों का परिचय और उनका महत्व।
- कर्नाटक के प्रमुख खनिजों का वितरण और उत्पादन।

**प्रमुख खनिजों
का वितरण**

सूची

- लौह अयस्क
- मैंगनीज
- सोना
- + बाक्सआइट

Districts labeled on the map:

- बीदर
- कलबुर्गि
- विजयपुरा
- यादगिरि
- बागलकोट
- रायचूर
- बेलगावी
- धारवाड
- गदग
- कोप्पल
- बळ्ळारी
- विवजनगर
- उ. कन्नड
- हावेरो
- दावनगेरे
- चित्रदुर्ग
- शिवमोग्गा
- तुमकूर
- चिकमगलूर
- चिकबल्लापुर
- उडुपी
- हसन
- मंड्या
- कोडागु
- मैसूरु
- चांमराजनगर
- कोलार
- बाल्लारी
- नेगलुरु
- नवलगुर

103

वितरण: कर्नाटक में कच्चे लोहे का वितरण अधिकतम बल्लारी, चिक्कमंगलूर, बागलकोटे, चित्रदुर्गा, तुमकुरू शिवमोगा, दक्षिण कन्नड, उत्तर कन्नड तथा गदग जिलों में देखा जा सकता है। बल्लारी जिले में कई कई खानें हैं और प्रथम स्थान पर हैं। विजयनगर जिले के होसकोटे और बल्लारी जिले के संडूर क्षेत्रों में भी लौह अयस्क के भंडार पाए जाते हैं। बल्लारी जिले के चिक्कमंगलूर जिला लौह अयस्क के भंडार की उपलब्धता में दूसरे स्थान पर है। दोणीमले (द्रोणीपर्वत) विभूतिगुड्डा, बेलगाला, कुमारस्वामी पहाड़, बल्लारी का तिम्मप्पन गुडी, देवाद्रि श्रेणी तथा रामदुर्गा पहाड़ियों में कच्चा लोहा उत्पादन किया जाता है।

चिक्कमंगलूर जिला लौहा अयस्क भंडार की उपलब्धता में दूसरे स्थान पर है। बाबाबुडनगिरि पहाड़ (इनाम दत्तात्रेय पीठ), केम्मण गुंडी, कुद्रेमुख, गंगामूला, कल्हत्तगिरी, जेनुसुरि, पहाड़ों से लौह अयस्क प्राप्त होता है। जीव वैविध्यता को बनाए रखने की दृष्टि से राष्ट्र के सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय उत्पाद क्षेत्र कुद्रेमुख में खानों की खुदाई को स्थगित करने का निर्णय दिया है। चित्रदुर्गा जिले का होसदुर्गा, सासलु, बागलकोटे, अमीनगढ़, तुमकुरू जिले का हुलियारू, चिकनायकनहल्ली, शिवमोगा जिले का कुंम्सी, शंकरगुडा सिद्धरहल्ली आदि क्षेत्रों में अयस्क के निक्षेप हैं।

क्रियाकलाप

अपने जिले में उपलब्ध खनिज सम्पदा की तालिक बनाइए।

राज्य में उत्पादित लौह अयस्क को भद्रावती में विश्वेश्वरय्या लोह और इस्पात कारखाने तथा बल्लारी के पास जिन्दा ल विजयनगर लौह इस्पात कारखाने में उपयोग कर शेष भाग निर्यात किया जाता है। भद्रावती में विश्वेश्वरय्या लोहे और इस्पात का कारखाना फिलहाल काम नहीं कर रही है।

मैंगनीज : मैंगनीज अयस्क (कच्चा मैंगनीज) मुख्य रूप से पर्वतदारशिला और रूपान्तरित शिलाओं में ऑक्साइड रूप में मिलता है। इसे मिश्र लौह के रूप में इस्पात के निर्माण में कठोरता को बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है। साथ ही इसे रासायनिक विद्युत उद्योग, रासायनिक खाद, सूती कपड़े की छपाई और रंगों के निर्माण के लिए भी उपयोग किया जाता है। इससे मैंगनीज को 'बहुउपयोगी खनिज' भी कहा जाता है।

वितरण : कर्नाटक में मैंगनीज अयस्क निक्षेप काफी मात्रा में उपलब्ध है। मैंगनीज उत्पादन में उड़ीसा के बाद कर्नाटक दूसरे स्थान पर है। राज्य का मैंगनीज वितरण लौह अयस्क प्रदेशों में ही देखा जाता है। बल्लारी जिले का संडूर प्रदेश प्रमुख मैंगनीज उत्पादक क्षेत्र है। यहाँ राज्य का 90 प्रतिशत मैंगनीज उत्पादन होता है। अन्य प्रमुख मैंगनीज को खानों में शिवमोगा जिले का कुंसी, शंकरगुड्डा, होसहल्ली, चित्रदुर्गा जिले का सादरहल्ली.

तुमकूर जिले का चिकनायकनहल्ली, उत्तर कन्नड जिले का शिरसी तालुक, सूपा, लोंडा, उस्काण्ड तथा धारवाड विजयापुरा, चिक्कमगलूरु जिले आते हैं। राज्य के मैंगनीज उत्पादन का बड़ा हिस्सा जापान, चीन आदि राष्ट्रों को निर्यात होता है।

बाक्साइट : बाक्साइट अयस्क (कच्चा बाक्साइट) अल्यूमीनियम उत्पादन के लिए अधिकतम उपयोग किया जाता है। सीमेन्ट, इस्पात, विद्युत तारों के निर्माण में इसका उपयोग होने के कारण इसकी माँग बढ़ रही है।

वितरण : कर्नाटक में बाक्साइट अयस्क के निक्षेप बेलगावी चिकमगलूरु चित्रदुर्गा दक्षिण कन्नडा तथा उडुपी जिलों में बंटे हुए हैं। बेलगावी जिला प्रमुख बाक्साइट उत्पाद क्षेत्र है। यहाँ के बेलगाँव तथा खानापुर तालुक में बाक्साइट की खानें हैं। इनको बेलगाँव के इंडियन अल्यूमीनियम कंपनी के उद्योग में उपयोग किया जा रहा है।

सोना (स्वर्ण) : सोना एक दुर्लभ चमकीली, अधिक टिकाऊ और पीली धातु है। इसे आभूषण बनाने, घड़ी इत्यादि बहुमूल्य वस्तुओं के निर्माण में अधिक उपयोग किया जाता है। सोने की माँग तथा उपयोग आजकल बढ़ते जा रहे हैं, जिससे इसका दाम दुगना हो गया है।

कर्नाटक सोने की खानों के लिए भारत में प्रथम स्थान रखता है। उत्पादन का अधिक सोना कर्नाटक की खानों से ही प्राप्त होता है। इस कारण कर्नाटक को 'स्वर्णप्रदेश' कहा जाता है। कर्नाटक में प्राचीन काल से सोने की खान एवं खनन का प्रयोग है। परन्तु बड़े पैमाने पर सोने का खनन सन् 1880 में जॉन टेलर नामक व्यक्ति ने प्रारम्भ किया और सन् 1885 में के.जी. एफ. (कोलार गोल्ड फील्ड्स) में 'हट्टी' सोने की खान अस्तित्व में आया। कोलार के सोने की खानों के प्रदेशों में चार प्रमुख खानें हैं। वे नंदीदुर्गा, उरिगां, चाम्पियन रीफ और मैसूर की खान। इनमें चाम्पियन रीफ खान अत्यन्त गहरी खान (3217 मीटर) है। इस खान में कुछ वर्षों के निरंतर खनन से स्वर्ण निक्षेप की मात्रा कम हो गयी है। अब खनन कार्य स्थगित हो गया है।

वर्तमान रायचूर जिले का 'हट्टी' सोने की खान भारत की सबसे बड़ी सोने की खान है। वर्तमान में हट्टी सोने की खान देश में सोने का बड़ा उत्पादक है। तुमकूर जिले के बेल्लारी, शिरा के निकट स्थित अज्जनहल्ली में भी स्वर्ण अयस्क उत्पादित होता था (अब खनन बंद हो गया है)। अन्य सोने के निक्षेपों में गदग जिले का मुलगुंदा, कप्पतगुड्ड हासन जिले का केंपिनकोटे आदि हैं।

अभ्यास

I. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों को पूर्ति कीजिए :

1. कुद्रेमुख क्षेत्र में _____ खनिज प्राप्त होता है।
2. उत्तम स्तर का लौह खनिज _____ से प्राप्त होता है।
3. कर्नाटक में सर्वाधिक मैंगनीज उत्पादन क्षेत्र _____ खान है।
4. बाक्साइट खनिज से _____ लोहे का उत्पादन किया जाता है।
5. के.जी.एफ का सर्वाधिक गहरी सोने की खान _____ में है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर समूह मे चर्चा करके लिखिए :

6. कर्नाटक को स्वर्ण प्रदेश क्यों कहा जाता है ?
7. कर्नाटक में प्राप्त प्रमुख खनिजों के नाम लिखिए ?
8. मिश्र लौह के रूप में प्रयोग किया जाने वाला खनिज कौन सा है?
9. हमारे राज्य में लौह खनिज प्राप्त होने वाले प्रदेशों के नाम लिखिए।
10. कर्नाटक में बाक्साइट उत्पादक प्रमुख जिला कौन-सा है ?
11. कर्नाटक के प्रमुख सोने की खानों के नाम लिखिए।

III. सुमेलित कीजिए :

- | अ | आ |
|-------------|--------------------------|
| 1. मैंगनीज | य. एल्युमीनियम् |
| 2. हट्टी | र. इंडियन एल्युमीनियम् |
| 3. बाक्साइट | ल. के.जी.एफ. |
| 4. बेलवागी | व. सबसे बड़ी सोने की खान |
| | श. बहु उपयोगी खनिज |

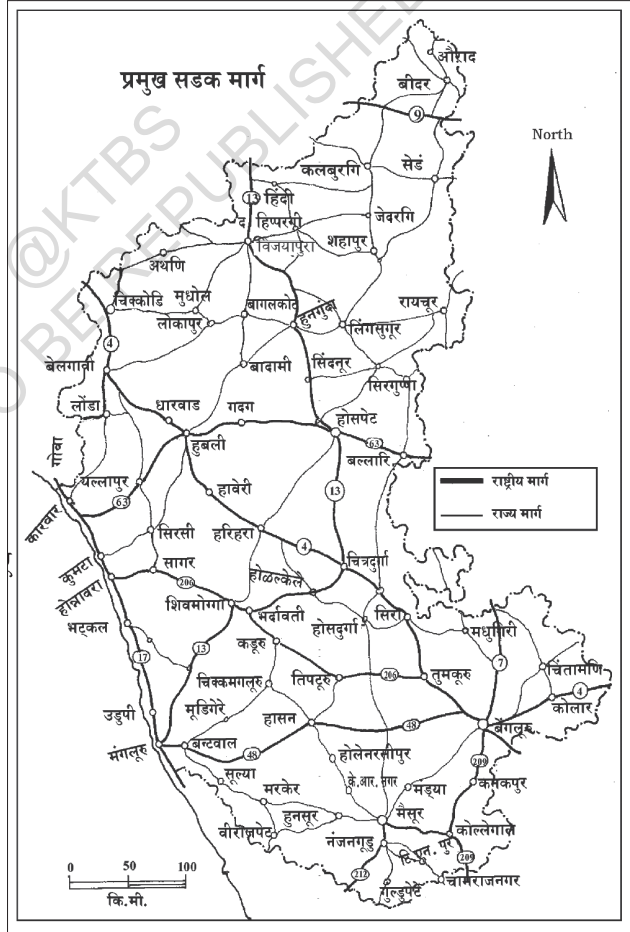
IV. क्रिया कलाप :

1. कर्नाटक में उपलब्ध खनिज के नमूनों (samples) का संग्रह कीजिए और टिप्पणी लिखिए।
2. कर्नाटक के नक्शे में खनिजों का वितरण दर्शाइए और अंकित कीजिए ।

इस अध्याय से निम्नलिखित अंशों को जानेंगे -

- कर्नाटक में यातायात के साधन का महत्व ।
- सड़क यातायात - प्रकार, प्रमुख राजमार्ग ।
- रेल यातायात का महत्व, प्रमुख रेल मार्ग ।
- जल यातायात और वायु यातायात ।

एक स्थान से दूसरे स्थान को माल और यात्रियों का 'आवागमन साधन' ही यातायात है। कृषि उद्योग और व्यापार वृद्धि में यातायात के साधन ही प्रमुख महत्वपूर्ण हैं। कर्नाटक अनेक प्राकृतिक संसाधनों से युक्त राज्य है। यहाँ खनिज, वाणिज्य उत्पाद, वन सम्पत्ति, शक्ति संसाधन उपलब्ध हैं। इनके सही और पूर्ण उपयोग से आर्थिक अभिवृद्धि की जा सकती है। जिसके लिए सुव्यवस्थित यातायात की सुविधा का होना अनिवार्य है। कर्नाटक कृषि प्रधान राज्य है। खाद्य पदार्थ और अन्य कृषि उत्पादनों को कृषि क्षेत्र तक पहुँचाने के लिए, खानों से खनिज लाने, उद्योग धन्धों द्वारा तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने यात्रियों के आवागमन ऐसे ही कई उद्देश्यों की



पूर्ति के लिए यातायात की सुविधा की आवश्यक है। कर्नाटक में रेल, सड़क, जल तथा वायु यातायात की व्यवस्था है।

सड़क यातायात :

महत्व : कर्नाटक की जनता अधिकतर गाँवों में ही बसती है। जिससे प्रत्येक गाँव कस्बे तथा अन्य आवासीय क्षेत्रों को जोड़ने सम्पर्क करने के लिए सड़क यातायात का बड़ा महत्व है। सड़कों का निर्माण सरल और कम खर्च में किया जा सकता है। इसके द्वारा यात्री और सामान (माल) आसानी से राज्य के कोने - कोने तक पहुँचाए जा सकते हैं। सड़कों की अभिवृद्धि राज्य की कृषि, उद्योगधन्धों, खानों तथा वाणिज्य उद्योगों के विकास को निर्धारित करती है।

सड़क यातायात का विस्तार : कर्नाटक में प्राचीन काल से सड़क यातायात की परम्परा रही है। पहले राजा - महाराजा अपने सैनिकों के प्रशासनिक निर्वाह के लिए सड़कों का निर्माण कराते थे। प्रमुख सड़कों पर यात्रियों के आश्रय स्थान, ठहरने का स्थान, वाटिका (बाग-बगीचे), छत्रों का निर्माण (सराय) करवाया गया। तटीय क्षेत्रों तथा अंदरूनी प्रदेशों के सम्पर्क के लिए सड़कें बनवाई गईं।

स्वयं करे :

अपने जिले से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग और वे आपके जिले के किन-किन तालुकों से होकर गुजरते हैं, उसकी सूची बनाइए।

कर्नाटक में स्वतंत्रता से पूर्व सड़क निर्माण की व्यवस्था नहीं थी। प्राचीन मैसूर प्रांत, बेंगलूर और जिला केंद्रों से सम्पर्क जोड़ने के लिए सड़कें थीं। ये सुव्यवस्थित नहीं थी। स्वतंत्रता के बाद विशाल आपके जिले से गुजरनेवाले राष्ट्रीय । मैसूर के निर्माण के बाद सन् 1961 में कुल 43,182 राजमार्ग और वे 3,32,743.15 कि. मी. है। इनमें से 35.70 प्रतिशत भाग पक्की सड़कें और 64.30 प्रतिशत भाग कच्ची सड़कें है। आजकल सड़कों का दर्जा भी उन्नत होता जा रहा है।

कर्नाटक से गुजरनेवाला अत्यंत लम्बा राष्ट्रीय राजधानी और बदरगाहों को जोड़ने वाला राज मार्ग संख्या 13 मंगलूर - मुडबिद्री, कोप्पा, शिवमोग्गा, चित्रदुर्गा, होसपेट, इलकल, विजयापुरा से होकर सोलापुर में जाकर मिलता है ।

सड़कों के प्रकार : कर्नाटक की सड़कों को चार भागों में बाँटा जा सकता है :

- 1) राष्ट्रीय मार्ग
- 2) राज्य मार्ग
- 3) जिला सड़कें
- 4) ग्रामीण सड़कें।

1. राष्ट्रीय मार्ग (National highways): प्रमुख नगर, राज्य, राजधानी और बंदरगाहों को जोड़ने वाली सड़कों को राष्ट्रीय मार्ग कहा जाता है। ये सड़कें चौड़ी तथा उत्तम स्तर की और सुव्यवस्थित हैं। ये द्विपथी, चतुष्पथी तथा षट्पथी सड़कें हैं। केंद्र सरकार के अंतर्गत इनका निर्वाह कार्य भारतीय राष्ट्रीय बृहत मार्ग प्राधिकार (NHAI - National Highways Authority of India) से जुड़ा है। कर्नाटक में वर्तमान समय में 14 बृहत् सड़कें हैं यह कुल 7332 किलोमीटर लंबी हैं। उत्तर कन्नड (कर्नाटक), विजयपुरा, बेलगावी, शिवमोग्गा, बेंगलूर ग्राम्य, तुमकुरु, दक्षिण कन्नड तथा बल्लारी जिलों में अधिक राष्ट्रीय बृहत मार्ग फैला हुआ है। लेकिन रायचूर और कोडगु जिलों में राष्ट्रीय बृहत मार्ग नहीं है।

कर्नाटक से गुजरनेवाले राष्ट्रीय बृहत् मार्ग -48 (NH -48) और राष्ट्रीय बृहत् मार्ग - 44 (NH -44) ये दोनों राष्ट्रीय बृहत् मार्ग प्राधिकार के 'सुवर्ण चतुष्कोण योजना' और कॉरीडोर योजना से जुड़ा है। वे चार, छः या आठ पथों से युक्त हैं।

2. राज्य के बृहत् मार्ग (State highways): कर्नाटक की राजधानी बेंगलूर से जिला केन्द्र, प्रमुख शहर तथा राष्ट्रीय बृहत् मार्ग से संलग्न सड़कों को 'राज्य बृहत मार्ग' कहा जाता है। इनका निर्माण और प्रबंध राज्य सरकार की जिम्मेदारी है। कर्नाटक राज्य में 27,880 कि.मी. लम्बी राज्य बृहत सड़कें हैं। बेलगावी जिला अत्यन्त लम्बी बृहत् सड़क वाला जिला है। बेंगलूर अत्यन्त कम लम्बी (छोटी) राज्य बृहत सड़क वाला जिला है। क्योंकि यहाँ नगरी सड़कें अधिक हैं।

3. जिला सड़क (MDR - Major District Roads) : जिला केन्द्र से सभी तालुक केन्द्रों, प्रमुख शहरों, ग्रामों, रेलमार्गों तथा बृहत मार्गों से संपर्क जोड़ने वाले मार्गों को 'जिला सड़क' कहते हैं। इनका निर्माण अभिवृद्धि तथा देखरेख 'जिलापंचायत' के अन्तर्गत आता है। राज्य में कुल 56,115 कि. मी. लम्बा 'जिला मार्ग (सड़क)' है। सबसे अधिक 'जिला सड़क' तुमकुरु जिले में है। रायचूर जिले में सबसे कम जिला सड़कें हैं।

4. ग्रामीण सड़क : तालुक केन्द्र से प्रत्येक ग्राम को, सभी जिला सड़कों से सम्पर्क जोड़ने वाली सड़कें ही ग्रामीण सड़कें हैं। इनका निर्माण एवं व्यवस्था तालुक पंचायत तथा ग्राम पंचायत प्रशासन की जिम्मेदारी है। कर्नाटक राज्य में कुल 1,97,331.61 कि.मी. लम्बी ग्रामीण सड़कें हैं।

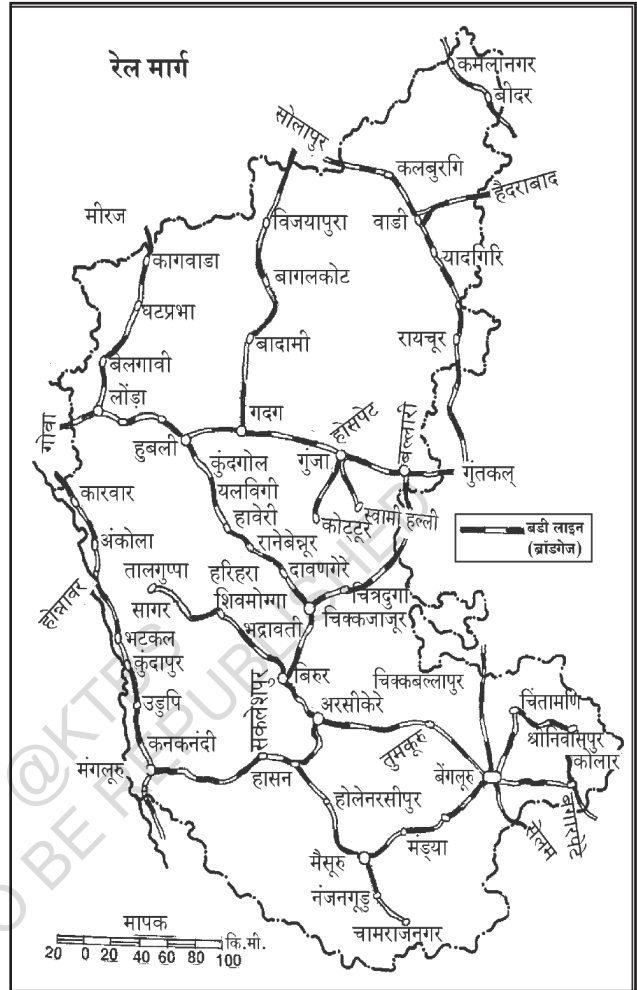
उपरोक्त प्रकार की सड़कों के अतिरिक्त, विविध उद्देश्य और स्थानीय प्रशासन व्यवस्था के अधीन स्थित सड़के हैं। उदाहरण: लोकोपयोगी सड़कें, वन विभाग, सिंचाई विभाग, और नगरपालिका तथा महानगरपालिका की सड़कें।

रेल यातायात :

कर्नाटक में सड़क यातायात के बाद रेल यातायात प्रमुख है। (निम्न दर) कम दाम में अधिक दूर की यात्रा और माल ले जाने के लिए रेल यातायात को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

कर्नाटक में सर्वप्रथम रेल संचार का प्रारंभ सन् 1864 में हुआ। बेंगलूरु और मद्रास नगरों के बीच 'मद्रास रेलवे कंपनी' ने इसका निर्माण किया था। यह सन् 1956 तक कुल 2595 कि.मी लम्बा रेल मार्ग था, जो दक्षिण रेल मंडल के अन्तर्गत था। आज यह उत्तर पश्चिम रेल मंडल के रूप में अस्तित्व में है। इसकी केंद्र कचहरी हुब्ल्ली में है। कर्नाटक में आज कुल 3244 कि.मी. लंबा रेल मार्ग है।

कर्नाटक के सभी जिलों में रेल मार्गों का समान वितरण नहीं है। बेंगलूरु नगर, बेंगलूरु ग्रामांतर, बल्लारी, बेलगावी, हासन, उत्तर कन्नड, चित्रदुर्गा, उडुपि, बेंगलूरु दक्षिण (रामनगर), दक्षिण कन्नड जिलों में लगभग 150-200 कि.मी. लम्बा रेल मार्ग है। कोडगु जिले में कोई भी रेलमार्ग नहीं है।



क्रिया कलाप

सड़क यातायात और रेल यातायात के सफर के बारे में अपना अनुभव अपने समूह में चर्चा कीजिए। तत्पश्चात आप किस यातायात को उत्तम मानते हैं निर्णय लीजिए।

कोंकण रेलवे : यह पश्चिमी तटीय प्रदेश का महत्वपूर्ण रेल मार्ग है। यह मंगलूर से मुम्बई के बीच की यात्रा अवधि को लगभग 41 घंटे से 18 घंटे कम करता है। इसकी लम्बाई कर्नाटक में 273 कि. मी. है। इसमें 13 प्रमुख और 310 अन्य पुल हैं। उनमें शरावती का पुल (2.2 कि. मी.) अत्यंत लम्बा है। काली नदी का पुल (1.2 कि. मी.) भी प्रमुख है। कई सुरंग मार्ग और पुलों से गुजरने वाला यह मार्ग अत्यंत सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों से युक्त है।

मैट्रो रेल : बेंगलूर बृहत् के रूप में विकसित होने के साथ-साथ यातायात सम्बन्धी समस्याएँ अधिक होती जा ही हैं। इसके निवारण (समाधान) के लिए 'नम्म मैट्रो' (हमारा मॅट्रो) नगर रेल योजना जारी की गई। इससे 20 अक्तूबर 2011 में सर्वप्रथम मैट्रोरेल बेंगलूर, बैयप्पनहल्ली से एम. जी. सड़क तक कार्यान्वित हुयी। इससे लाखों लोग यात्रा कर रहे हैं। अब व्हाइट फील्ड (काडुगोडी) से चल्लीघट्टा तक और मादावर से सिल्क इंस्टीट्यूट तक मैट्रो रेल संपर्क है। इससे एक स्थान से दूसरे स्थान तक तुरंत पहुंचा जा सकता है। आज भी मैट्रो रेल मार्ग निर्माण अवस्था में है।



वायु यातायात :

वायु यातायात अत्यंत शीघ्र चालित यातायात का साधन है। यह यात्रियों, डाक और बहुमूल्य हल्की वस्तुओं को शीघ्र दूर के स्थलों के (लाने, ले जाने) परिवहन के लिए बड़ा उपयुक्त है। प्राकृतिक विपदा आने पर तथा युद्ध जैसे आकस्मिक परिस्थितियों में परिहार कार्य निभाने में भी यह यातायात साधन में सहायक है। परन्तु यह महंगा यातायात का साधन होने के कारण सभी वर्ग के लोगों के लिए उपलब्ध नहीं है।

कर्नाटक में प्रथम विमानयान सन् 1946 में बेंगलूर-हैदरबाद के बीच 'दक्कन एयरवेस' नामक कंपनी ने प्रारंभ किया था। भारतीय विमान संचार सन् 1953 में राष्ट्रीयकृत हो गए और इन्डियन एयर लाइन्स संस्था के प्रारम्भ होते ही बेंगलूर से विविध केन्द्रों को विमानयान की सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई। राज्य की राजधानी बेंगलूर सन् 1996 में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा घोषित किया गया। मंगलूर में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है। बेलगावी, हुबली, मैसूर शिवमोग, बीदर और बल्लारी (जिंदाल विजयनगर हवाई अड्डा), कलबुर्गी में देशीय हवाई अड्डे हैं। नवीन विमानपत्तन हासन कलबुर्गी में निर्माणाधीन है।

इससे पूर्व बेंगलूरु HAL (हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड) विमान पत्तनों में अन्तर्राष्ट्रीय विमानपत्तन को 34 कि. मी. दूरी पर देवनहल्ली को दिनांक 24-5-2008 को स्थानांतरित किया गया। HAL विमान पतन जहाजरान (पायलट) के प्रशिक्षण हेतु उपयोग में लाया जा रहा है। नव निर्मित देवनहल्ली विमान पत्तन भारत का प्रथम हरित क्षेत्र पत्तन (ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट) है। यह सुविधाओं से सुसज्जित अति आधुनिक विमान पत्तन है।

जल यातायात :

कर्नाटक में अन्तर्देशीय तथा समुद्री यातायात दोनों ही परम्परा में हैं। इनकी उपलब्धि बहुत सीमित है। उन्हें बहुत महत्व नहीं मिला है। प्राचीन काल में अन्तर्देशीय जल यातायात ग्रामीण नाव, डोंगी (हरिगोल), बेडे (तेप्पा) तक ही सीमित था। आजकल यंत्रचालित नावों का चलन है। यह उत्तर कन्नड, उडुपी तथा दक्षिण कन्नड जिलों में देखा जा सकता है। इन जिलों में बहने वाली नदियाँ में गंगावली, काली, शरावती, हालाडी, चक्रा, कोल्लुरु (उडुपि) उद्यावर, नेत्रावती आदि मुख्य हैं। जिनमें अन्तर्देशीय जल यातायात होता है। कृष्णा नदी को पार करने के लिए कुछ स्थानों पर नाव का उपयोग होता है। सड़क तथा यातायात की सुविधा की अभिवृद्धि से जल यातायात उपयोग कम हो गया है।

बन्दरगाह : समुद्रीतट पर जहाजों के ठहरने के स्थान को बन्दरगाह कहते हैं। मत्स्यपालन, व्यापार, जन-यात्रा और माल पहुंचाने के लिए जहाजों का प्रयोग होता है। कर्नाटक में लगभग 25 छोटे और बड़े बन्दरगाह हैं। सन् 1957 में बंदरगाह विकास प्राधिकार का स्थापित किया था और सुविधाओं का विस्तार आरंभ किया। 'नव मंगलूर' सन् 1974 में मई 4 तारीख को भारत का 9 वाँ (नौवा) 'प्रमुख बंदरगाह' घोषित हुआ। इसे 'कर्नाटक का मुख्य द्वार' कहा जाता है। इस बंदरगाह से लोहा (लोह अयस्क), कॉफी, मसाले, काजू, चंदन, खपरेल, क्रोमाइट, ग्रेनाइट, संचित फल और मछलियाँ निर्यात होती हैं। यहाँ से पेट्रोलियम का आयात होता है। साथ ही राज्य ने 13 छोटे बंदरगाहों की अभिवृद्धि की है। वे हैं- प्राचीन मंगलूर बंदरगाह, मल्पे बंदरगाह, हंगर कट्टे, कुंदापुर, पडुबिद्री, भटकल होन्नावर, बेलकेरी, तदडी और कारवार। इनमें से कारवार बंदरगाह अत्यंत सुन्दर है। यह हरकाल का बंदरगाह होते हुए लौह अयस्क (कच्चा लोह) मैंगनीज, ग्रेनाइट और व्यवसायोत्पन्न चीजों को निर्यात करता है।

अभ्यास :

I. सही शब्दों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कोजिए :

1. प्रत्येक गाँवों-शहरों को _____ यातायात जोड़ता है।
2. कर्नाटक में पहली ट्रेन सेवा इस साल में शुरू हुई _____ ।
3. कर्नाटक में सबसे कम जिला सड़कें वाला जिला यह है _____ ।
4. कर्नाटक के मुख्य द्वार के रूप में _____ बंदरगाह को जाना जाता है।
5. पश्चिमी तट के रेल मार्ग को _____ कहा जाता है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए समूह में चर्चा करके उत्तर लिखिए:

6. सड़क यातायात के महत्व को लिखिए।
7. कर्नाटक की सड़कों के विविध प्रकारों को लिखिए।
8. वायुयान की सुविधाओं को लिखिए।
9. कर्नाटक के बंदरगाहों के नाम लिखिए।

III. जोड़ कर लिखिए :

- | | |
|-----------------------------|--------------------|
| 1. सुवर्णा चतुष्कोण | ए) मंगलूरु - मुंबई |
| 2. शरावती पुल | बी) बेंगलूरु |
| 3. विमान संचार राष्ट्रीयकृत | सी) NH-44 |
| 4. कोंकण रेल्वे | डी) हवाई अड्डा |
| 5. हमारा (नम्म) मेट्रो | ई) कोंकण रेल्वे |
| | एफ) 1953 |

IV. गतिविधि :

1. मानचित्र पर कर्नाटक से गुजरने वाले राजमार्गों को पहचानें और उनका नाम अंकित करें।

V. परियोजना :

1. ट्रेन में यात्रा करने के अपने अनुभवों के बारे में लिखें।
2. अपनी स्थानीय परिवहन प्रणाली के बारे में एक नोट लिखें।

अध्याय - 29

कर्नाटक के कारखाने



इस अध्याय से निम्नलिखित अंशों को जानेंगे -

- कर्नाटक के कारखाने का महत्व।
- कर्नाटक के प्रमुख कारखानों के क्षेत्र।
- लोहा - इस्पात उद्योग का वर्गीकरण एवं उत्पादन।
- सूती कपड़ा, चीनी, सीमेंट, कागज के कारखाने।
- बेंगलूर- भारत का प्रमुख सूचना तकनीकी उद्योग केंद्र।

किसी भी राज्य के शीघ्र विकास में उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऐसा सुनहरा मौका हमारे राज्य को प्राप्त है। अपार खनिज संपत्ति, कच्चा माल, आवश्यक जलवायु, सिंचाई व्यवस्था, यातायात, अनुभवी मजदूरों की उपलब्धि, विशाल व्यापार, केन्द्र तथा तकनीकी होने के कारण कर्नाटक अनेक वैविध्यमय कारखानों के लिए हमारा राज्य कृषि आधारित कुटीर उद्योग से लेकर आधुनिक कारखाने की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

कर्नाटक में कारखाने के विकास के लिए सर एम. विश्वेश्वरय्या जी का बहुत बड़ा योगदान है। 'औद्योगिकीकरण नहीं तो विनाश' इस तथ्य पर चलने वाले विश्वेश्वरय्या जी ने कर्नाटक राज्य के अनेक उद्योगधन्धों की बुनियाद डाली। सन् 1902 में शिवनसमुद्र जलविद्युत शक्ति उत्पादन के प्रारंभ के बाद विभिन्न मूलभूत सामग्री, दैनिक उपयोग की वस्तुओं को तैयार करने वाले उद्योग प्रारंभ हुए। चावल की मिलें, खपरैल बनाना, बीडी सिगरेट, लोहा और पीतल ढलाई के कारखाने स्थापित हुए। सन् 1923 के बाद राज्य में लोहा और इस्पात उद्योग, साबुन तैयारी, कपास और रेशम की मिलें, कागज, सिमेंट, रंग, चीनी, चंदन का तेल आदि आधुनिक कारखानों की स्थापना हुई। स्वतंत्रता से पूर्व ही उन दिनों का मैसूर प्रांत कारखानों के लिए एक आदर्श राज्य था। इसका कारण था-प्रारंभ में अंग्रेजों तथा तत्कालीन शासकों की इस ओर अभिरुचि।

स्वतंत्रता के बाद केन्द्र सरकार की उद्योग नीति राज्य में कारखानों के विकास में सहायक रही। इसके परिणाम स्वरूप अनेक कारखाने स्थापित हुए। उदाहरण के लिए विमान

निर्माण, प्रौद्योगिकी, मशीनी उपकरण, घड़ियाँ, लोहा, और इस्पात, अल्युमीनियम, सूचना एवं तकनीकी, इलेक्ट्रानिक्स तथा जैविकी तकनीकी उद्योग इत्यादि प्रमुख हैं।

लोहा एवं इस्पात उद्योग :

दक्षिण भारत में कर्नाटक को ही सर्वप्रथम लोहा इस्पात उद्योग की स्थापना करने का श्रेय प्राप्त है। सर. एम. विश्वेश्वरय्या की दूरदर्शिता से बाबाबुडनगिरि पहाड़ी (इनाम दत्तात्रेय पीठ) से काफी मात्रा में प्राप्त लोहा अयस्क के उपयोग के लिए शिवमोग्गा जिले के भद्रावती क्षेत्र में सन् 1923 में लोहा एवं इस्पात उद्योग की स्थापना की गई। इसे मैसूरु आईरन एण्ड स्टील इंडस्ट्रीज लिमिटेड (MISL - Mysore Iron and Steel Industries Limited) के नाम से जाना गया। तत्पश्चात् यह सन् 1989 में भारत के इस्पात प्राधिकार (SAIL - Steel Authority of India Limited) को सौंपा गया। आज यह विश्वेश्वरय्या लोहा एवं इस्पात की कारखाना (VISL - Vishveshwaraiah Iron and Steel Limited) के नाम से प्रसिद्ध है। इस कारखाने के लिए आवश्यक लोहा-अयस्क केम्पणु गुंडी से, बंडी गुड्डा से चूना, भद्रा नदी से जल और संडूर से मैंगनीज की पूर्ति होती है। आरंभ में भट्टी के लिए लकड़ी, ईंधन के रूप में उपयोग होता था। शरावती विद्युतशक्ति उत्पादन केंद्र के प्रारंभ होने पर जल विद्युतशक्ति का उपयोग होने लगा। अब विशेष प्रकार के इस्पात, ढलवाँ लोहे का उत्पादन हो रहा है। कर्नाटक का एक और प्रमुख लोहा एवं इस्पात उद्योग, वैयक्तिक क्षेत्र का जिन्दाल, विजयनगर इस्पात लिमिटेड है। जो बल्लारी जिले के तोरणगल स्थान में सन 2001 में बड़े ही आधुनिक कोरेक्स (COREX) तकनीकी के प्रयोग से स्थापित हुआ है। यह लोहा और इस्पात का उत्पादन करता है।

सूती कपड़ा उद्योग :

सूती कपड़ा उद्योग सर्वप्रथम प्रारंभ होने वाला आधुनिक कारखाने में से एक है। यह कृषि आधारित उद्योग है। प्राचीन काल से ही हथकरघा वस्त्र निर्माण की प्रथा कर्नाटक में चली आ रही है। आज भी हथकरघा धन्धे प्रचलित हैं। कृत्रिम रेशों वाले वस्त्र, विदेशी सूती वस्त्रों की स्पर्धा होने पर भी सूती वस्त्रों की आज भी राज्य में बहुत माँग है।

आधुनिक सूती मिलें 19 वीं शताब्दी के अंतिम चरणों में आरंभ होने लगी थी। रूई (कपास) बनाने (कटाई मिल, सूत कटाई) आदि से बीज अलग करने (ओटाई मिल), रूई से धागे निकालने वाले कारखानें (कटाई मिल, सूत कटाई) आदि काम उत्तरी जिलों में आरंभ हुआ। सर्वप्रथम सन् 1884 में एम.एस.के. मिल कलबुर्गी में स्थापित हुआ। तत्पश्चात्

तत्पश्चात् कपास उत्पादन करने वाले उत्तरी मैदानी क्षेत्रों में अभिवृद्धि हुई। दावणगेरे सूती वस्त्र उद्योग का अत्यंत प्रमुख केंद्र बन गया। यह ‘कर्नाटक का मेनचैस्टर’ कहलाता है। हुब्बल्ली, इलकल, गुलेदगुड्डा, रबकवि, बागलकोटे, मोणकाल्मूर, गदग, बेटगेरी, बादामी, बेलगावी, नरगुंदा, गोकक, बल्लारी, हुणसूर, नंजनगूडु, पिरियापट्टणा, चामराजनगरों में भी सूती वस्त्र कातने-बुनने (कताई कपड़ा मिलें कार्यरत हैं)।

कर्नाटक में वस्त्र उद्योग की स्थिति को सुधारने के लिए 'सुवर्ण वस्त्र नीति' 2008- 13 नामक योजना का प्रारंभ सरकार द्वारा हुआ। जिनमें 11 जिलों में तैयारी वस्त्र कंपनियों के पार्क (Ready-Made Garment Park) की स्थापना हुई। इनसे उत्पादित माल विदेशों को निर्यात करना ही इसका उद्देश्य है। आज वस्त्र निर्यात क्षेत्र की दृष्टि से कर्नाटक का स्थान देश में दूसरा है। दोडबल्लापुर, आनेकल, बेलगावी, मैसूरु, रामनगर में इस तरह के पार्क (फैक्ट्रियाँ) हैं।



चीनी उद्योग :

चीनी उद्योग कर्नाटक के प्रमुख बड़े उद्योगों में से एक है। यह भी कृषि आधारित उद्योग है। इसके विकास के लिए आवश्यक सभी सकारात्मक अंश राज्य में उपलब्ध हैं। उदा- गन्ना (ईख) उत्पादन

जानिए :

कर्नाटक का शक्कर नगर मंड्या है।
कर्नाटक का शक्कर जिला-बेलगावी है।

(सह सामग्री), उत्तम जलवायु, विद्युत, स्थानीय बाजार, यातायात के साधन इत्यादि। यह कर्नाटक की आर्थिक व्यवस्था में प्रमुख स्थान रखता है। ही श्रीरंगपट्टण के पालल्लि (अष्टग्राम) तथा चिक्कबल्लापुर में चीनी निर्माण (उत्पादन) का उल्लेख सर फ्रांसिस बुकानन ने किया है। सन् 1847 में चीनी का उत्पादन कर लंदन के वस्तु प्रदर्शन में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त करने का उल्लेख मिला है। सर्व प्रथम चीनी उद्योग सन् 1933 में मैसूर चीनी कंपनी (MySugar), मंड्या में प्रारंभ हुआ। सन् 1951 तक यह एकमात्र चीनी का कारखाना था। आज राज्य में कुल 71 चीनी के कारखाने हैं। कर्नाटक राज्य भारत के कुल चीनी उत्पादन का 16 प्रतिशत उत्पादन करता है। यह राज्य भारत में चीनी उत्पादन के लिए तृतीय स्थान रखता है।

वितरण : कर्नाटक में चीनी उद्योग, विशेषकर गन्ना (ईख) उत्पादक प्रदेशों में वितरित है। कावेरी, कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदियों के जलानयन प्रदेशों में यह केंद्रीकृत हैं। बेलगावी तथा बागलकोट जिलों में अत्यधिक चीनी के कारखाने हैं। तत्पश्चात मंड्या, मैसूर, बीदर, विजयपुर, कलबुरगी, बल्लारी तथा दावणगेरे जिलों का स्थान प्रमुख हैं।

गन्ने के छिलके तथा राब/गुड़ इस उद्योग से प्राप्त होने वाले उपपदार्थ है। गन्ने के छिलकों से कागज तैयार होता है और ईंधन के रूप में भी इसका उपयोग होता है। राब का उपयोग शराब बनाने में किया जाता है।

कागज - उद्योग :

कागज आधुनिक जगत की महत्वपूर्ण वस्तु है। यह शिक्षण, मुद्रण पत्र-पत्रिकाएँ तथा संस्कृति विकास के लिए आवश्यक वस्तु है। कागज उद्योग वन आधारित है। इस उद्योग के लिए बाँस, वृक्षों के गूदे, घास, गन्ने के छिलके, चिथड़े कपड़े, रद्दी कागजों का उपयोग कच्चेमाल के रूप में किया जाता। चिक्कमगलूर के घने जंगलों को ध्यान में रखकर भद्रावती में 'मैसूर पेपर मिल लिमिटेड' कारखाने

क्रिया कलाप : अपने समीप के उद्योग केंद्र में जाइए और वहाँ प्रयोग की जानीवाली कच्ची सामग्री का संग्रह वे कैसे करते हैं, जानें।

की स्थापना सन् 1936 में की गई। तत्पश्चात् व्यक्तिगत कंपनी वेस्टकोस्ट (पश्चिमी घाट) पेपर मिल की स्थापना दांडेली में की गई। यहाँ कच्चा माल निकटवर्ती वन क्षेत्रों से बाँस, नीलगिरि वृक्ष का गूदा, काली नदी से जल, जोगप्रपात से विद्युत् आदि उपलब्ध होता है। नंजनगूडु, कृष्ण राज नगर, सत्यगाला, मुंडगोड, मुनीराबाद, यडियूर तथा बेंगलूर में राज्य का शेष कागज उत्पादन क्षेत्र है। भारत में कागज उत्पादन के लिए कर्नाटक चौथा स्थान रखता है। कर्नाटक प्रति वर्ष 3.6 लाख टन कागज उत्पादन करता है।

सीमेंट उद्योग :

कर्नाटक में नगरीकरण तथा औद्योगिकीकरण का विकास बढ़ने के साथ-साथ निर्माण कार्य में सीमेंट की माँग भी बढ़ गयी है। मकान बनाने, बड़े-बड़े सार्वजनिक भवनों के निर्माण, सड़क, पुल, बाँध आदि के निर्माण के लिए सीमेंट आवश्यक है।

सीमेंट उद्योग की स्थापना के लिए आवश्यक अत्यधिक चूनापत्थर राज्य में उपलब्ध है। साथ ही जिप्सम तथा बाक्सइट भी उपलब्ध है। केवल कोयले को पड़ोसी राज्यों से आयात किया जाता है। जल, बालू, यातायात, विद्युत् शक्ति (ऊर्जा), चिकनी मिट्टी, विस्तृत व्यापार की सुविधा भी सीमेंट उद्योग के विकास में सहायक रही है।

राज्य का प्रथम सीमेंट कारखाना सन् 1939 में भद्रावती में स्थापित हुआ। तत्पश्चात् बागलकोट, तुमकूरु जिले के अम्मसंद्रा, कलबुरगी जिले के शाहाबाद में सीमेंट के कारखाने स्थापित हुए। अन्य सीमेंट उद्योग केन्द्रों में वाडी, लोकापुर, इट्टिगेहली, मडकेरे, कंचीपुरा, कलदगी, कुरकुंटा, सेडम और चितापुर, मुद्दापुर, अम्मसंद्र, कुडितिनी, तोंडेबावी और कल्लूरु प्रमुख हैं। देश के सीमेंट उत्पादन में कर्नाटक महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सूचना तकनीकी उद्योग :

कर्नाटक भारत का प्रमुख सूचना एवं तकनीकी केन्द्र है। यहाँ सूचना तकनीकी उद्योग का काफी मात्रा में विकास हुआ है। अनेक प्रौद्योगिक महाविद्यालय, अनुसंधान केंद्र, कंप्यूटर (गणकयंत्र) आधारित तकनीकी कोर्स (पाठ्यक्रमों) पर अधिक बल दिया जा रहा है।

जिससे परिवर्तित अगाध मानव शक्ति है। इससे अनेक सॉफ्टवेयर उद्योगों की स्थापना हुई है और कर्नाटक का इस दिशा में कर्नाटक का स्थान भारत में अति उन्नत है।

क्रिया कलाप

अपने जिले के विविध कारखाना की इकाई की सूची बनाइए। निकट के कारखाना इकाई जाकर उत्पादक वस्तुओं के बारे में जाने।

बेंगलूर ; भारत का प्रमुख सूचना एवं तकनीकी केंद्र :

बृहत् बेंगलूर भारत का 'सिलीकॉन घाटी' के नाम से प्रसिद्ध है। सॉफ्टवेयर (तकनीकी अंश) अथवा कंप्यूटर प्रोग्राम के लिए सामग्री उत्पादन तथा निर्यात करने में यह प्रथम स्थान रखता है। यह जगत (विश्व) के दस प्रमुख उन्नत तकनीकी नगरों में से एक है। इसके आस-पास के अन्य नगरों में भी सॉफ्टवेयर उद्योग व्यापक रूप में फैल रहा है। इस एक ही नगर (बेंगलूर) में आइ. टी. (Information Technology) बी. टी. (Bio-Technology) उद्योग ने लाखों लोगों को रोजगार दिया है। यहाँ विश्व की कुछ प्रसिद्ध कंपनियों ने अपनी शाखाएँ स्थापित की हैं। इसका कारण उत्तम जलवायु, विद्युत आपूर्ति, तकनीकी विशेषज्ञ (निपुण), आर्थिक सहायता विस्तृत बाजार तथा मूल सुविधाओं का होना है। इससे बृहत् बेंगलूर भारत के प्रतिष्ठित सूचना तकनीकी केंद्र के रूप में जाना जाता है।

बेंगलूर में इंसोसिस, विप्रो आदि प्रतिष्ठित कंपनियाँ हैं। इनकी विविध शाखाएँ राज्य के अन्य कुछ नगर केंद्रों में देखी जा सकती हैं। उदा- मैसूर, हुबबल्ली, कलबुरगी, शिवमोग्गा, तुमकूर, मंगलूर आदि। मानव संसाधनों की सूचना, नियुक्ति, प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम आदि की जानकारी देने के लिए यह उद्योग बड़ा उपयोगी है।

कर्नाटक के कारखाने के क्षेत्र : राज्य में कारखाने की व्यापकता के आधार पर कर्नाटक में 5 उद्योग क्षेत्र बाँटे जा सकते हैं। वे हैं -

1. बेंगलूर-कोलार-तुमकूर-औद्योगिक क्षेत्र-यह अत्यंत अधिक औद्योगिकवाला क्षेत्र है।
2. बेलगावी-धारवाड-औद्योगिक क्षेत्र।
3. दक्षिण कन्नड-उडुपि औद्योगिक क्षेत्र ।
4. बल्लारी-रायचूर-कोप्पल जिला औद्योगिक क्षेत्र ।
5. मैसूर- मंड्या औद्योगिक क्षेत्र।

अभ्यास:

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. कर्नाटक में सर्वप्रथम लोहा और इस्पात कारखाने की स्थापना _____ स्थान में हुई है।
2. कर्नाटक का मेनचेस्टर _____ शहर को कहते हैं।
3. यहाँ वेस्ट कोस्ट पेपर मिल पाई जाती है _____ ।
4. टोंडेबावी में _____ उद्योग है ।
5. 'सिलीकॉन घाटी' के नाम _____ से नगर को जाना जाता है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर समूह में चर्चा करके लिखिए :

6. कर्नाटक के लोहा और इस्पात उद्योगों का नाम बताइए ।
7. कर्नाटक में सूती कपड़ा उद्योगों का वितरण के बारे में बताइए में विवरण दीजिए।
8. कागज़ उद्योग के लिए आवश्यक कच्चे माल के बारे में बताइए ।
9. कर्नाटक के औद्योगिक क्षेत्रों के नाम बताइए ।
10. बेंगलूरु में सूचना - तकनीकी उद्योगों के केंद्रीकृत होने का कारण समझाइए ।

III. सुमेलित कीजिए:

अ	आ
i) भद्रावती	अ) मैसूरु शुगर कंपनी
ii) तोरणगल	क) औद्योगीकरण या विनाश
iii) सर. एम्. विश्वेश्वरय्या	ज) मैसूरु पेपरमिल लिमिटेड
iv) मंड्या	प) राज्य का पहला सूती कपड़ा उद्योग
	ब) जिंदाल विजयनगर स्टील लिमिटेड

IV. परियोजना :

1. अपने जिले में स्थित उद्योगों के बारे में जानकारी एकत्र करें ।

कर्नाटक के प्रमुख पर्यटन केन्द्र



इस अध्याय से निम्नलिखित अंशों को जानेंगे :

- कर्नाटक के प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक स्थलों का परिचय तथा महत्व ।
- प्रमुख प्रेक्षणीय स्थानों का विवरण तथा उनके राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व ।
- प्रमुख पहाड़, जलप्रपात, ऐतिहासिक स्थान ।

‘देश देखो कोश पढ़ो’ यह कन्नड भाषा की कहावत है। लोग अपने व्यापार तथा लेन देन के लिए, कौतूहल के लिए, धार्मिक आचरण, मन को शांति, घूमने, सुन्दर स्थलों को देखने की जिज्ञासा, खुशी के लिए, स्वास्थ्यवर्धन के लिए, अपने वास स्थान से उचित स्थानों पर जाकर कुछ दिन विहार करके वापस आने को पर्यटन या प्रवास कहते हैं। पर्यटन स्थानों पर ठहरने की व्यवस्था, लघु आहार की व्यवस्था होती है। इससे लोग उन स्थानों पर कुछ दिन ठहरकर अन्य प्रेक्षणीय स्थलों को प्रस्थान करते हैं। आधुनिक जगत में पर्यटन मानव जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। पर्यटन से प्रांत की संस्कृति, नागरिकता, जनजीवन का क्रम आदि समझना संभव होता है।

कर्नाटक भारत के अनेक प्रेक्षणीय स्थलों वाले प्रसिद्ध राज्यों में से एक है। कर्नाटक प्रकृतिदत्त अनेक सुंदर स्थलों से परिपूर्ण है। हरियाली युक्त मनमोहक सह्याद्रि पहाड़, वहाँ की नदियाँ, जलप्रपात, सुन्दर नयन मनोहर घाटियाँ, वन्यजीवी, चंदनवन आदि हैं। सुन्दर समुद्री तट, ऐतिहासिक स्थल, शिल्पकला सौन्दर्य से युक्त मंदिर, विविध धर्मों के धार्मिक केन्द्र, यात्रास्थल देशविदेश के लोगों को आकर्षित करते हैं। इसके महत्व को समझकर कर्नाटक के प्रेक्षणीय स्थलों को देखने के लिए सरकार ने सन् 1971 में व्यवस्थित पर्यटन तथा निर्वाह के लिए कर्नाटक प्रवासोद्यम निगम (KSTDC - Karnataka State Tourism Development Corporation) की स्थापना की। प्रवासियों के लिए मूल भूत सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए यात्री निवास, प्रवासी गृह, नाश्ता-पानी केन्द्र आदि की व्यवस्था प्रमुख प्रेक्षणीय स्थानों में की है।

कर्नाटक पर्यटकों के लिए स्वर्ग है। यह विविध सुंदर स्थलों से युक्त है। तथा लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। युनेस्को हंपी के स्मारकों का समूह है। पट्टदकल्लु के स्मारकों का समूह, पश्चिमी घाट की कर्नाटक के व्याप्ति के दस स्थान और बेलूरु, हलेबीडु तथा

सोमनाथपुर में होय्सल काल के मंदिरों को विश्व धरोहर स्थलों के रूप में मान्यता दी गई है। इससे सम्पूर्ण विश्व में कर्नाटक को ख्याति मिली है। 'एक राज्य, अनेक दुनिया' (One State, Many worlds) यह कर्नाटक पर्यटन विभाग के आदर्श वाक्य है।

कर्नाटक सरकार ने नवीन प्रवासोद्यम नीति (2024-2029) को जारी कर निजी संस्थाओं को मौका और प्रोत्साहन दिया है। उत्तम प्रवासोद्यम निर्वहण राज्य के रूप में सन् 1996-97 में इस राज्य को पुरस्कार प्राप्त हुआ है। निम्नलिखित प्रेक्षणीय स्थल कर्नाटक में प्रसिद्ध हैं।

कर्नाटक के प्रमुख दर्शनीय स्थल :

कर्नाटक का पर्वतीय स्थल : कर्नाटक वैविध्यमय भूस्वरूप वाला प्रदेश है। अनेक ऊँचे पर्वत श्रेणियों से युक्त है। यहाँ अनेक पर्वतीय क्षेत्र हैं। इनमें प्रमुख है- चिकमगलूर जिले का कुदुरेमुख प्रमुख गिरिधाम है। इसके चारों ओर हरे भरे घने जंगल, पहाड़, कॉफी के बाग, जलप्रपात हैं। जिस कारण यह बड़ा ही आकर्षणीय स्थल है।

चिकबल्लापुर जिले का नंदी पर्वतीय क्षेत्र समुद्रतल से लगभग 1492 मीटर ऊँचा है। यहाँ की जलवायु ठंडी है। यह बेंगलूर के काफी निकट होने के कारण लाखों पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ आवास तथा खाने-पीने की व्यवस्था होने के कारण ठहरने की सुविधा भी है। अपने स्वास्थ्य सुधार के लिए महात्मा गाँधीजी यहाँ ठहरे थे इसलिए 'गांधी भवन' का निर्माण किया गया।

इसी प्रकार बिलिगिरिरंगा पहाड़, आगुंबे का सूर्यास्त स्थल, केम्मण्णु गुंडी, देवरायन दुर्गा, चित्रदुर्ग जिले का जोगी मट्टी, कोडचाट्टी, हिमवद गोपालस्वामी पहाड़, रामनगर की चट्टानें, मधुगिरि का एक शिलापहाड़, विस्मयकारी याणा की चट्टान, मडकेरी आदि गर्मी में ठहरने के स्थान हैं तथा पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

कर्नाटक के जलप्रपात: हमारा राज्य जलप्रपातों की नगरी है। मलेनाडु (पर्वतीय प्रदेश) अनेक जलप्रपातों से युक्त है। वर्षाकाल में इनका जल बड़े वेग से बहता है। उत्तर कन्नड जिले में अत्यन्त अधिक जलप्रपात है।

भारत का सबसे ऊँचा जल प्रपात जोग, शिवमोग्गा जिले में है। यहाँ शरावती नदी चार भागों में बँटकर लगभग 253 मीटर की ऊँचाई से गिरती है। इन्हें राजा, रानी, रोरर रॉकेट के नाम से जाना जाता है। यह वर्षाकाल में पूर्ण जल पूरित होकर, सौन्दर्यमय होकर विस्मरणीय रूप प्रस्तुत करता है।

कावेरी नदी मंड्या जिले के शिवन समुद्र के निकट गगनचुक्की, भरचुक्की जुड़वें जलप्रपात का निर्माण करती है। मडकेरी के निकट का सुंदर अब्बीप्रपात है। केम्मण्णु गुंडी गिरिधाम के पास हेब्बे जलप्रपात है। इसके अलावा कल्लुत्तगिरी जलप्रपात, उत्तर कन्नड जिले के उंचल्ली जलप्रपात, मागोडु

जलप्रपात, बेलगावी का गोकक जलप्रपात अन्य प्रमुख जलप्रपात है। यह घटप्रभा नदी द्वारा निर्मित गोकक जलप्रपात को 'कर्नाटक का नयागरा जलप्रपात' कहा जाता है।

कर्नाटक के वन्यजीव धाम (स्थल) :

कर्नाटक घने जंगलों से युक्त राज्य है। जंगल तथा जंगली जानवरों की सुरक्षा के लिए सरकार अनेक वन्यजीवी धाम, पक्षीधाम, राष्ट्रीय उद्यानवन, बाघ संरक्षण क्षेत्र (Tiger Reserves), जीववैविध्य क्षेत्रों का निर्वाह कर रही है।

कर्नाटक में पाँच राष्ट्रीय उद्यानवन हैं। वे हैं नागरहोले का 'राजीव गाँधी राष्ट्रीय' उद्यानवन, बंडीपुर, बन्नरघट्ट, कुदरेमुख तथा अन्शी राष्ट्रीय उद्यानवन।

प्राणियों का उनके ही क्षेत्र में संरक्षण (सुरक्षा) प्रदान करने के लिए राज्य में 36 वन्यजीव धाम निर्मित है। उनमें प्रमुख है मेलकोटे वन्यजीव अभयारण्य, कावेरी वन्य जीव अभयारण्य, मुकांबिका वन्यजीव अभयारण्य, कप्पतगुडु वन्यजीव अभयारण्य, जोगिमट्टी वन्यजीव अभयारण्य, भीमघड़ वन्यजीव अभयारण्य, चिंचोली वन्यजीव अभयारण्य, तलकावेरी वन्यजीव अभयारण्य आदि।

कर्नाटक सुन्दर समुद्रीतट से युक्त राज्य है। उनमें गोकर्ण का ओम बीच (तट), उल्लाल बीच, मुरुदेश्वर, मरवंते, मल्पे इत्यादि समुद्रीतट असंख्य पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

उडुपि के समीप सेंट मेरीस द्वीप विशिष्ट स्तम्भाकार प्राकृतिक चट्टान की रचना मनोहारी है। मुरुदेश्वर का नेत्राणी द्वीप, कारवार के समीप देवगढ़ और कूर्मागढ़ नामक दो द्वीप आकर्षक हैं।

ऐतिहासिक क्षेत्र (चारित्रिक स्थान) : हमारे प्रांत के शासक कदंब, होयसल, चालुक्य, विजयनगर शासकों ने उनके द्वारा निर्मित शिल्पकला के वैभव से युक्त लोगों को आकर्षित करने वाले अनेक स्थानों को छोड़ा है। उनमें हंपी, बेलूर, हलेबीड, सोमनाथपुर, बादामी,

गतिविधि :

अपने शहर के बारे में जानें

हमारे राज्य के प्रत्येक स्थान अपना ही महत्व रखते हैं। इस प्रकार हमारे शहर के इतिहास तथा महत्व के बारे में पूर्वजों से जानकारी एकत्र करें।

पट्टदकल, ऐहोले, विजयपुर का गोलगुंबज, लकुंडी, बनवासी, बसरालू, बल्लिगावे, मैसूर, श्रीरंगपट्टण, आदि ऐतिहासिक स्थल प्रमुख हैं। ये राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त क्षेत्र हैं।

गतिविधि :

अपने गाँव तथा आसपास के ग्रामों के ऐतिहासिक स्मारक, देवालय के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

यात्रास्थल : कर्नाटक में अनेक यात्रास्थान हैं। धर्मस्थल, उडुपि, श्रृंगेरी, होरनाडु, कोल्लूर, गोकर्ण, उलवि, शिरसी, श्रवणबेलगोल, कूडलसंगम, मेलुकोटे आदिचुंचनगिरि, कारकला, देवागुड्डा, मैलारक्षेत्र, कुलबुरगी का ख्वाजाबंदे नवाज दरगाह, विजयपुर का इब्राहीम रोज़ा, सिरा का मल्लिक रहान दरगाह, मैसूर का सेंट फिलेमिना चर्च, मंगलूर का रोजारियो केथेड्रल चर्च आदि प्रमुख यात्रास्थल हैं।

कर्नाटक के किले : चरित्र सम्बन्धी अनेक सुरक्षित दुर्ग (किले) कर्नाटक में आज भी पर्यटकों के प्रमुख स्थान हैं। बीदर किला, विजयपुर किला, कलबुरगी किला, हंपी किला, केलदी किला, चित्रदुर्ग किला, मधुगिरी किला, नंदी पहाड़ किला, पावागढ़ किला, मंजराबाद किला, उच्चंगीदुर्ग किला, कवलेदुर्ग किला, परसगढ़ किला, श्रीरंगपट्टण किला, तटीय प्रदेश के दुर्गों में बहादुरगढ़ किला, बसरज दुर्ग किला, देवगढ़ किला, कूर्मगढ़ किला इत्यादि प्रमुख दुर्ग हैं।

ये ऊपरलिखित सभी प्रेक्षणीय स्थल कर्नाटक के गौरव में चार चाँद लगाते हैं। हमारी राजधानी बेंगलूर आजकल पर्यटकों को आकर्षित कर रही है। यहाँ की उत्तम जलवायु, विधानसभा जैसी सुंदर इमारतें, कब्बन पार्क, लालबाग जैसे अनेक आकर्षक उद्यान हैं। इसे 'उद्यान नगरी' कहते हैं। इसके अलावा विधान सौधा, विकास सौध, उद्योग सौध और उच्च न्यायालय जैसे खूबसूरत इमारतें, नेहरू तारालय, विश्वेश्वरय्या औद्योगिक और तकनीकी वस्तु संग्रहालय जैसे कई आकर्षणीय स्थान हैं। यह कर्नाटक का अति बृहत् नगर है। राष्ट्रस्तर के बृहत् नगरों में बेंगलूर एक है।

उसी प्रकार मैसूरू 'महलों का शहर' है और यहाँ अंबाविलास राजमहल, जगनमोहन राजमहल जैसे खूबसूरत महल हैं। यहाँ का दशहरा उत्सव देश-विदेश से लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। चामुंडी पहाड़, जयचामराजेंद्र चिड़ियाघर, कबिनी जलाशय, नुगु वन्य जीव अभयारण्य, शुकवन, बैलुकुप्पे, आदि प्रमुख दर्शनीय स्थलों को मैसूरू और उसके आसपास देख सकते हैं।

गतिविधि :

अपने विद्यालय स्तर पर एक जिला दर्शन की व्यवस्था करें तथा प्रमुख पर्यटन केंद्रों के बारे में एक टिप्पणी लिखिए।

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति सूक्त पदों से कीजिए:

1. नंदी पहाड़ी स्थान (हिलस्टेशन) _____ जिले में है ।
2. अब्बी जलप्रपात _____ नगर के निकट है ।
3. कर्नाटक का नयागरा नाम से _____ जलप्रपात प्रसिद्ध है।
4. गोकर्ण के निकट _____ बीच (समुद्री तट) है।
5. राजमहलों के शहर के नाम से _____ नगर जाना जाता है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए समूह में चर्चा करके उत्तर लिखिए:

6. यात्रा द्वारा होने वाले लाभ कौन-कौन से हैं ?
7. कर्नाटक में युनेस्को विश्व धरोहर स्थल कौन-कौन से हैं।
8. बेंगलूरु के आकर्षणीय स्थानों का नाम बताइए ।
9. कर्नाटक के वन्यजीव धामों के नाम लिखिए।
10. कर्नाटक के प्रमुख जलप्रपात के नाम बताइए ।
11. कर्नाटक पर्यटन विभाग का आदर्श वाक्य क्या है ?

III. जोड़कर लिखिए:

- | अ | आ |
|-------------------------|-----------------------------------|
| i) बिलिगिरि रंगा पहाड़। | अ) राजीव गांधी राष्ट्रीय उद्यानवन |
| ii) गांधीभवन | क) चामराजनगर जिला |
| iii) नागरहोल | ज) सेंट मेरीस द्वीप |
| iv) मैसूरु | प) नंदी पहाड़ |
| v) उडुपि | ब) चामुंडि पहाड़ |
| | म) मयूरधाम |

IV. क्रियाकलापः

1. कर्नाटक के पर्वतीय स्थल और वन्य धामों की सूची बनाएँ।
2. कर्नाटक के प्रमुख प्रेक्षणीय स्थलों के बारे में अपना अनुभव लिखिए।

V. प्रदत्त कार्यः

1. कर्नाटक के पर्यटन स्थलों का चित्र संग्रह कर अल्बम (चित्राधार) तैयार कीजिए।

@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED

अर्थशास्त्र
अध्याय - 31
धन और ऋण



इस अध्याय में हम निम्नलिखित अंशों को समझते हैं।

- धन का विकास और कार्यों का महत्व ।
- देशीय बैंक और ऋण के प्रकार।
- बैंक: विकास और प्रकार।
- बैंकों के विभिन्न जमा का परिचय।
- सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना और उसके कार्य।

पैसा, मानव का एक अद्भुत आविष्कार है। वह दैनंदिन व्यवहारों में विनिमय के माध्यम के रूप में इस्तेमाल हो रहा है। वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यनिर्णय, संपत्ति संग्रह तथा भविष्य के व्यापार को सरल बन दिया है। पैसे के कारण मानव के वाणिज्य व्यवहार का विकास हुआ है।

पैसा, सामान और सेवाओं को खरीदता है। इसे भुगतान मापन और मूल्यांकन के माध्यम के रूप में आमतौर पर स्वीकार किया गया है। राबर्टन्स के अनुसार, “जो कुछ भी माल के भुगतान के लिए या अन्य व्यावहारिक उधार चुकाने में व्यापक रूप से स्वीकृत कोई वस्तु पैसा कहलाता है।”

‘पैसा’ शब्द का पर्याय रूप में इस्तेमाल हो रहा अंग्रेजी शब्द ‘मनी’ रोमन भाषा का मोनेटा जुनो (Moneta Juno) शब्द से आया है। भारतीय रुपया संस्कृत शब्द ‘रूप्या’ (Rupya) से आया है। इसका अर्थ ‘चाँदी का सिक्का’ है।

धन का विकास: आज हम कागज के रूप और सिक्कों का उपयोग कर रहे हैं। लेकिन विकास का यह स्तर रातोंरात नहीं हुआ। इस मुकाम तक पहुँचने में इसे हजारों साल लगे हैं। धन के विकास में कई चरण होते हैं। वस्तु विनिमय पद्धति सिर्फ शुरुआत और प्राचीन चरण है। अब हम धन विकास के विभिन्न चरणों के बारे में चर्चा करेंगे।

वस्तु विनिमय: प्राचीन काल में लोग बिना धन का उपयोग किए ही वस्तुओं का आदान-प्रदान करते थे। वस्तु विनिमय एक कठिन व्यावहारिक पद्धति थी। इसमें समय और

काल व्यर्थ होते थे। उदाहरण के लिए यदि किसी - व्यक्ति के पास गाय है और वह बदले में भेड़ चाहता है, तो उसे भेड़वाले को ढूँढना पड़ता था। इसके अलावा विनिमय में एक गाय की जरूरत वाले व्यक्ति को भी ढूँढना पड़ता था। अगर ऐसे कोई व्यक्ति को ढूँढ लिया तो एक गाय कितने भेड़ के समान है। यह प्रश्न उठता था। इसलिए, वस्तु विनिमय प्रणाली परस्पर आवश्यकताओं का मेल, सार्वभौमिक मूल्यांकन, वस्तु अविभाज्यता और धन संचय की समस्याएँ जैसी असुविधाएँ थीं। विकास का अगला स्तर वस्तु रूप का धन है।

वस्तु रूप के धन: एक निश्चित आकार और वजन की वस्तु को धन के रूप में दर्शाया जाता है। प्रत्येक को उस मानक वस्तु द्वारा

याद रहे : इतिहास में विविध राजाओं द्वारा लागू और उपयोग किए गए सिक्कों के बारे में हम जानकारी प्राप्त कर चुके हैं।

मापा जाता है। विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं में, विभिन्न वस्तुओं का उपयोग धन के रूप में उपयोग किया जाता था। उदाहरण: ग्रीस में गाय, रोम में भेड़, चीन में दाँत, आदि। गणना की एक इकाई के रूप में पैसे की शुरुआत से भौतिक विनिमय की सभी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ। पैसे के विकास में अगला कदम है लोहे का धन।

लोहे का धन : लोहे के धन के लिए विशेष रूप से सोने, चाँदी, ताँबे, और काँस का उपयोग किया जाता था। प्रमाणित वजन विशेष रूप से सोने या चाँदी, से तैयार कर जिस पर मोहर लगी हुई सुंदरसिक्कों को विनिमय के माध्यम के रूप में उपयोग किए जाते थे। उन्हें विभाजित करना, परिवहन करना और विभिन्न घटकों के लिए भुगतान करना आसान है। धनविकास का अगला चरण कागजी धन है।



लोहे का धन (सिक्के)

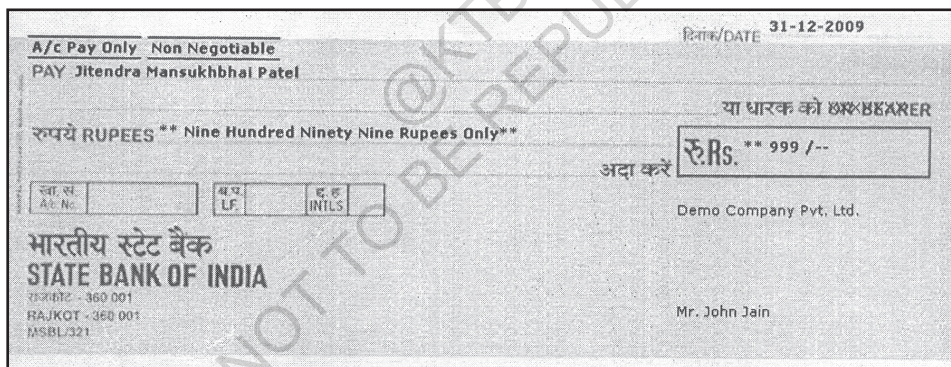
कागज का धन : धातु के धन को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना सुरक्षित नहीं था। इसलिए व्यापारियों ने अपने आदेशित धन की राशि की गवाही देने के लिए परिचित उधारदाताओं द्वारा जारी लिखित दस्तावेज लेना शुरू कर दिया।



कागज का धन

ये लिखित दस्तावेज असली पैसे नहीं थे। लेकिन वे स्वीकार कर रहे थे क्योंकि वे मांग पर पैसे का आदान-प्रदान करने को तैयार थे। लोगों ने धीरे-धीरे बैंकनोटों को अपना लिया और उन्होंने उन्हें पैसे के रूप में स्वीकार कर लिया। ऐसा इसलिए है क्योंकि सरकारों ने अपने केंद्रीय बैंकों को बैंक नोट जारी करने का एकाधिकार प्रदान किया है। नोट शासन बद्ध धन बन गया। कोई व्यक्ति संबंधित देश में व्यवहार में वहाँ के शासन बद्ध धन को इनकार नहीं किया जा सकता है। भारत में रुपया शासन बद्ध धन है। इसी तरह संयुक्त राज्य अमेरिका - डॉलर, यूके - पाउंड, जर्मनी-मार्क, जापान-यान, चीन-युवान रेन्मिन्बी।

बैंक धन : व्यवसाय और वाणिज्यिक विकास के रूप में बैंक धन अस्तित्व में आया। चेक, ड्रॉफ्ट, क्रेडिट और डेबिट कार्ड बैंक के पैसे के कुछ उदाहरण हैं। चेक की सहायता से धन को जमा से जमा में या जमा से नकद में स्थानांतरित किया जा सकता है। चेक को वस्तुओं और सेवाओं के व्यवहार में इस्तेमाल कर सकते हैं। जिन्हें समीप धन संपत्ति के नाम से जाना जाता है।



चेक लीफ

क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड: क्रेडिट कार्ड धारक कुछ प्रदाताओं से कर्ज पर सामान और सेवाएँ खरीद सकते हैं। क्रेडिट कार्ड को फिर इलेक्ट्रॉनिक मशीन में दबाया जाता है। फिर धारक के क्रेडिट खाते से पैसा विक्रेता के खाते में स्थानांतरित कर दिया जाता है। डेबिट कार्ड उसी तरह काम करता है।



डेबिट कार्ड

लेकिन डेबिट कार्ड के पैसे का भुगतान खरीदार के बचत खाते से किया जाता है।

धन के कार्य: धन के कार्यों को मुख्य रूप से तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है ।

1. प्राथमिक या मुख्य कार्य।
2. पूरक कार्य।
3. अन्य कार्य।

1. प्राथमिक या मुख्य कार्यों को निम्नानुसार विभाजित किया जाता है:

- अ) **विनिमय माध्यम या भुगतान साधन:** वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने और बेचने के लिए धन को एक दलाल के रूप में उपयोग किया जाता है। धन का उपयोग व्यवहार को दो भागों में बाँटा है। सबसे पहले, बाजार में सामान और सेवाओं को बेचने से पैसे उपलब्ध होता है। दूसरे, धन का उपयोग से वस्तुओं और सेवाओं को बाजार से खरीदा जाता है।
- ब) **मूल्यांकन:** धन, वस्तु विनिमय पद्धति के सबसे बड़ा नुकसान को समाप्त कर दिया है। वह वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को धाम के रूप में व्यक्त करता है। इससे विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की विनिमय दर निर्धारित करना सरल बन गया है।

2) पूरक कार्य: धन के पूरक कार्य तीन हैं । वे हैं -

- अ) **विलंबित भुगतान का प्रमाण:** धन भविष्य के भुगतान के लिए सहायक है। एक उधारकर्ता निश्चित प्रमाण के धन को भविष्य के निश्चित दिनांक पर भुगतान करने के करार पर उधार ले सकता है। उसी तरह, एकव्यक्ति वर्तमान समय में सामान खरीदकर, उनके पैसे को भविष्य के निश्चित तारीख में भुगतान कर सकता है।
- ब) **मूल्य संग्रह या क्रय शक्ति संग्रह:** वस्तु विनिमय पद्धति होने पर बचत करना संभव नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कुछ वस्तुएँ नष्ट हो जाती थीं । जब धन का उपभोग किया गया, तो इसे भविष्य के लिए बचाया जा सकता है क्योंकि यह नष्ट नहीं होता है। लेकिन धन का मूल्य मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति के अनुसार बढ़ या घट सकता है। बचत का उपयोग पूँजी जुटाने के लिए किया जा सकता है।

क) **मूल्य का हस्तांतरण या क्रय शक्ति का हस्तांतरण:** धन को एक तरफ से दूसरी तरफ और साथ ही विदेशों में भी स्थानांतरित कर सकते हैं। इसके लिए क्रय शक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करना आवश्यक हो जाता है। पैसे के रूप में उधार देना और उधार लेने का व्यवहार चलता रहता है। पैसे का इस कार्य से व्यक्ति अपने अतिरिक्त धन को उत्पादन उद्देश्यों के लिए दूसरों को उधार देकर ब्याज पा सकता है।

3) **विविध कार्य:** प्राथमिक और द्वितीय कार्यों के अलावा, धन अतिरिक्त रूप में कुछ संभावित कार्यों को भी संचालन कर रहा है। वे हैं -

अ) **ऋण का आधार :** धन, ऋण का आधार बनाता है। चेक व्यवस्था बैंकों को उधार बनाने का अवसर प्रदान करती है।

ब) **पूँजी उत्पादकता में वृद्धि:** पूँजी के रूप में धन के कई उपयोग हैं। धन की तरलता का लक्षण पूँजी को कम उत्पादक से अधिक उत्पादक उपयोग में स्थानांतरित करने में सहायक होता है।

ऋण के भेद :

ऋण, उधार देनेवाला और उधार लेनेवालों को पैसा, सामान या सेवाओं को भविष्य में लेने के वादे पर भरोसे के साथ आपूर्ति करने का एक करार है। भारत में दो तरह के उधार हैं। अर्थात् औपचारिक उधार और अनौपचारिक उधार।

1. **अनौपचारिक उधार:** भारत में प्राचीन काल से ही देशीय बैंकों के माध्यम से एक अनौपचारिक ऋण प्रणाली रही है। अनौपचारिक ऋण क्षेत्र लेन-देनेवाले कौश्राफरू, महाजन, शेटरू, साझेदार, चेट्टियार जैसे नामों से जाना जाता है।

19वीं सदी के मध्य तक, भारत में देशीय बैंक वित्तीय प्रणाली का एक केंद्रीय भाग थे। यूरोपीय बैंकवालों के आगमन से देशीय बैंकवालों का एकाधिकार में मुसीबत आ गयी। ऐसा इसलिए है क्योंकि यूरोपीय बैंकों को भारत में सरकारी सुरक्षा प्राप्त थी। हालाँकि, साहुकारों ने उधार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आजादी के बाद भारत सरकार ने धन लेन-देन करने वालों के चंगुल से मुक्त होने के लिए कई प्रयास किए हैं। 1969 में 14 और 1980 में 6 वाणिज्य बैंको को राष्ट्रीयकृत किया। ग्रामीण लोगों के उधार की आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रादेशिक ग्रामीण बैंको की (RRB's) स्थापना की। लेकिन ग्रामीण ऋणदाता अभी भी ग्रामीण उधार देने में एक बड़ा भाग पूरा कर रहे हैं।

2. औपचारिक उधार: औपचारिक ऋण क्षेत्र में बैंक और सहकारी समितियाँ शामिल हैं। वे अत्यधिक ब्याज दर नहीं लेती हैं। उनका उद्देश्य सिर्फ लाभ नहीं बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी है। वे भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विनियमन और निरीक्षण के अधीन हैं।

बैंक और जमा: बैंक आर्थिक विकास की प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बैंक शब्द की उत्पत्ति पर कोई सहमति नहीं है। कुछ का मानना है कि अंग्रेजी बैंक शब्द इतालवी भाषा बैंको (BANCO) से आया है। बैंको का अर्थ है बेंच। कुछ का कहना है कि यह जर्मन भाषा के बैंक (BANCK) से आता है। इसका अर्थ है 'सामूहिक पूँजी निवेश या सामान्य निधि'।

1949 के भारतीय बैंक विनियमन अधिनियम की व्याख्या के अनुसार, भारत में बैंकिंग व्यवहार चलानेवाली कोई भी कंपनी एक बैंकिंग कंपनी कहलाती है। बैंकिंग का अर्थ है उधार या निवेश के उद्देश्य से जनता से पैसे जमा कराना, माँग या अन्य आधार पर पैसे का भुगतान करना और चेक, ड्राफ्ट, आदेशों के माध्यम से पैसे की निकासी।

बैंकों का महत्व: बैंक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बैंक आकर्षक ब्याज दरों की पेशकश करके सार्वजनिक बचत एकत्र करते हैं और पूँजी संग्रह की प्रक्रिया के लिए सहायक हैं। बैंकों ने चेक प्रणाली के माध्यम से वित्तपोषण का एक सुविधाजनक मार्ग प्रदान किया है। ये प्रचलित बाजार ब्याज दर पर ऋण प्रदान करते हैं। जिससे वे कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों के विकास की सुविधा प्रदान करते हैं। साथ ही, बैंक निधि पत्र (हुंडी) (Bill of Exchange) को हस्तांतरण करते हैं। वे माँग (हुंडी) पत्र (Demand Draft), क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड भी प्रदान करते हैं। बैंक शेयर पर धन निवेश करते हैं, जो उधार सृष्टि (credit creation) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बैंकों के प्रकार: बैंक कई प्रकार के होते हैं। प्रत्येक प्रकार का बैंक आमतौर पर एक निश्चित प्रकार के व्यवहार में माहिर होता है।

- 1. औद्योगिक बैंक:** औद्योगिक बैंक उद्योगों को लघु और दीर्घकालिक दोनों तरह के ऋण प्रदान करते हैं। ये उद्योग को आवश्यक स्थिर पूँजी प्रदान करने के लिए दीर्घकालिक ऋण प्रदान करते हैं। उदाहरण: औद्योगिक वित्त निगम, औद्योगिक ऋण और निवेश निगम, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक और विभिन्न राज्य वित्त निगम।

2. **विनिमय बैंक:** विनिमय बैंक देश के विदेशी व्यापार को वित्तपोषित करते हैं और विदेशी धन के साथ सौदा करते हैं। यहाँ निधि पत्र (हुंडी) मुख्य ऋण प्रदान करने का साधन हैं। वे साधारण बैंकों का व्यवहार भी चलाते हैं लेकिन उनका भाग कम है।
3. **बचत बैंक:** ये बैंक भी कम आय वाले लोगों में भी बचत के शौक को प्रोत्साहित करते हैं। ये व्यक्तियों के लिए लघु बचत संग्रह संबंधित हैं। भारत में बचत बैंकों का व्यवहार को डाकघरों और वाणिज्यिक बैंकों संचालित करते हैं।
4. **सहकारी बैंक:** सहकारी बैंक सहयोग के सिद्धांतों पर चल रहे हैं। वे सहकारी समिति अधिनियम के तहत पंजीकृत हैं। वे अपनी गतिविधियों को केवल सदस्यों तक ही सीमित रखते हैं। ये बैंक सदस्यों से निवेश स्वीकार करते हैं और उन्हें न्यायोचित दाम पर अग्रिम उधार देते हैं।
5. **भू - बंधक बैंक:** ये भी सहकारी बैंक हैं। ये भूमि आधारित नहरों, सिंचाई, बाग निर्माण और अन्य स्थायी सुधारों पर किसानों को दीर्घकालिक ऋण प्रदान करते हैं। इन्हें भूमि विकास बैंक भी कहा जाता है।

वाणिज्यिक बैंक: जनता से जमा राशि एकत्र करना वाणिज्यिक बैंकों को प्रमुख और मूल कार्य है। वाणिज्यिक बैंक द्वारा संग्रहीत निवेशक के मुख्य भेद है - चालू खाता, बचत खाता, निश्चित अवधि या वायदा निवेश हैं।

चालू खाता निवेश: चालू खाता निवेश को आम तौर पर व्याहारीक संस्थाएँ, व्यापारियों और सार्वजनिक प्राधिकरण खोलते हैं। वे ब्याज अर्जित करने की बजाय चेक द्वारा भुगतान करने की सुविधा के लिए खोलते हैं। चालू खाता बार-बार व्यवहार में सहायक है।

बचत खाता : ग्राहक अपनी बचत जमा राशि को चालू आय का एक भाग बचाने के लिए खोलते हैं। ग्राहक अपनी जरूरत के समय अपने खाते से पैसा निकाल सकते हैं। चालू बचत निवेश के पैसे पर थोड़ा सा ब्याज देता है।

कालावधि निवेश : जमाकर्ताओं को उनकी सुरक्षा और अधिक प्रतिफल प्रदान करने का साधन हैं। निश्चित अवधि निवेश जमा एक निश्चित अवधि के लिए खोली जानेवाली जमा राशि होती है। जिसे निश्चित अवधि / वायदा निवेश के रूप में भी जाना जाता है।

भारतीय रिजर्व बैंक:

भारतीय रिजर्व बैंक भारत का केंद्रीय बैंक है। इसकी स्थापना 1 अप्रैल, 1935 को हुई थी। यह मूल रूप से एक शेयरधारक बैंक के रूप में शुरू हुआ था। 1 जनवरी 1949 को भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण किया गया। यह अब भारत सरकार के स्वामित्व और नियंत्रण में है।



भारतीय रिजर्व बैंक

आपको ज्ञात रहे :

भारतीय रिजर्व बैंक के प्रस्ताव में, रिजर्व बैंक के कार्य इस प्रकार हैं: - बैंक नोटों के मुद्दे को नियंत्रित करना और भारत की मौद्रिक स्थिरता को बनाए रखने की दृष्टि से संरक्षण देना तथा सामान्य रूप से देश की मुद्रा और ऋण प्रणाली की व्यवस्था का प्रबंधन करना।



नोटों के मूल्य

भारतीय रिजर्व बैंक के कार्य (केंद्र बैंक):

1. **मुद्रा संचालन का एकरूपता:** भारतीय रिजर्व बैंक ने 2 रुपये और उससे अधिक मूल्य के नोटों का मुद्रण करना, संचालन में एकरूपता रखता है। उसने 2, 5, 10, 20, 50 और 100, 200, 500 मूल्य के नोट मुद्रण करके उन्हें प्रचलित किया। 1 रुपये के नोट को केन्द्र सरकार की ओर से RBI छापता है। हालांकि, केंद्र सरकार के पास एक रुपये का सिक्का लाने का अधिकार है।

2. **सरकारी बैंक के रूप में कार्य निर्वहण :** RBI केंद्र और राज्य दोनों सरकारों से जमा स्वीकार करता है। यह सरकार की ओर से कर और अन्य दरों का धन एकत्रित करता है। यह निश्चित निर्देशों पर सरकार की ओर से जनता को धन प्रदान करता है। RBI सरकारी ऋण पत्र और खजाना, निवेश (हुंडी) बेचता है। और सरकार को वित्तीय सलाहाकार के रूप में कार्य निभाता है।

RBI केंद्र और राज्य सरकार को मार्ग और विधान का विस्तार करता है। 'वेस अंड

मीन्स अडवान्स' (WMA) यह सुविधा राजस्व संग्रह और सरकारी आय व्यय के बीच अस्थायी समायोजन को पूरा करने के लिए प्रदान की जाती है। ऐसे अग्रिम की अधिकतम मात्रा और अवधि को RBI और संबंधित सरकार के बीच संधि द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

3) बैंकों का बैंक: यह बैंकों के बैंक के रूप में कार्य करता है। देश के सभी बैंकों को नियंत्रित करता है। देश के सभी बैंकों को अपनी जमा राशि का एक भाग RBI में जमा करना होगा। जब बैंकों को अधिक पैसा की आवश्यकता हो तो RBI उन्हें ऋण प्रदान करता है। यह बैंकों के वित्तीय प्रबंधन पर मार्गदर्शन प्रदान करता है।

4) राष्ट्रीय भुगतान कार्यालय के रूप में कार्य करना: बैंकों के व्यवहारों को मितव्ययता से हल करने के लिए भुगतान कचहरी सुविधा प्रदान करती है। यह कार्यक्षमता बैंकों को अपने पारस्परिक दायित्वों को आसानी से निपटाने में मदद करती है।

5) ऋण प्रबंधन कार्य निर्वाह: देश में वांछित वित्तीय स्थिति के अनुसार वाणिज्यिक बैंकों के ऋण निर्माण को नियंत्रित या विस्तारित करता है। यह ऋण नियंत्रण और विस्तार के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरीकों का उपयोग करता है।

जात रहें -

- बहुत पुराना केंद्र बैंक स्वीडन का 'रिक्स बैंक' है। यह 1668 में स्थापित हुई।
- ब्रिटेन का केंद्र बैंक 'बैंक ऑफ इंग्लैंड' 1694 में स्थापित किया गया।
- USA का केंद्र बैंक 'फेडरल रिजर्व सिस्टम' 1913 में स्थापित किया गया।

6) विदेशी विनिमय संग्रह पर्यवेक्षक: विदेशी विनिमय संग्रह पर्यवेक्षक के रूप में कार्य निर्वाह करता है। पर्याप्त विनिमय संग्रह विदेशी विनिमय दरों को बनाए रखने में मदद करेगा। विदेशी विनिमय दरों में अनुचित उतार-चढ़ाव को कम करने के लिए, परिस्थितियों के आधार पर, RBI विदेशी मुद्रा खरीद और बेच सकता है।

7) आर्थिक आंकड़े और अन्य जानकारी प्रकाशित करना: वित्तीय और वित्तीय मामलों से संबंधित आंकड़े एकत्र करना और समय समय पर प्रकाशित करता है। यह धन और वित्त, वित्तीय स्थिति, वार्षिक रिपोर्ट, वित्तीय नीति समिती रिपोर्ट राज्य के वित्त, सांख्यिक पुस्तिका आदि को भी प्रकाशित करता है।

8) बैंकिंग की आदत (शौक) का विकास: लोगों में बैंकिंग व्यवहार आदत (शौक) विकसित करने के माध्यम से बचत को संस्थागत किया गया है। गैर-बैंकिंग क्षेत्रों में बैंकिंग व्यवस्था का विस्तार किया है।

9) कृषि के लिए सुविधाएँ: परोक्ष रूप से कृषि को वित्तीय सुविधा को क्रमबद्ध रूप से प्रदान करना जारी रखा है। यह NABARD के माध्यम से कृषि और कृषि संबंधी

गतिविधियों के लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक वित्तीय सुविधा प्रदान करता है।

RBI भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय रिजर्व बैंक सांख्यिकी संग्रह, शक्तिशाली आर्थिक अनुसंधान करना और ज्ञान साझा करने की समृद्ध विरासत पाया है। देश ने कई वित्तीय संकटों से बाहर आने में रिजर्व बैंक की कार्रवाई से मदद मिली है।

अभ्यास :

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों से कीजिए :

- 1) भारतीय रुपया _____ शब्द से आया है।
- 2) चेक _____ धन के साधन हैं।
- 3) विदेशी मुद्रा का लेन-देन करने वाले बैंक को _____ कहा जाता है।
- 4) भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना वर्ष _____ में हुई थी।
- 5) जापान का धन _____ है।
- 6) भारत सरकार 14 वाणिज्यिक बैंक _____ में राष्ट्रीयकृत किया गया।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर समूह में चर्चा कीजिए और लिखिए :

- 7) वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है?
- 8) पैसे का अर्थ बताइए ?
- 9) भारत के केंद्र बैंक कौन-सा है?
- 10 धन के कार्यों को समझाइए।
- 11) विभिन्न बैंकों के नाम बताइए।
- 12) भारतीय रिजर्व बैंक के कार्यों का विवरण दीजिए।

III. गतिविधियाँ :

- 1) वाणिज्यिक बैंकों के कार्य की गतिविधि के बारे में सामयिक रिपोर्ट तैयार करना।
- 2) अपने नजदीकी बैंक शाखा में जाकर देखें कि बैंक कौन-कौन से कार्य कर रहा है, देखिए और समझिए।

IV. योजना :

1. मुद्रा विकास की संपूर्ण जानकारी को चित्रों के माध्यम से समझाइए।

अध्याय - 32

श्रम और रोजगार



इस अध्ययन में हम निम्नलिखित अंशों को समझते हैं :

- श्रम का महत्व और इसके प्रकार।
- श्रम विभाजन से लाभ और हानि।
- उत्पादक और अनुत्पादक श्रम।
- भारत में महिलाओं की भूमिका और महिला-पुरुषों की असमानता।
- बेरोजगारी और उसके प्रकार।
- बंधुआ मजदूर और बाल मजदूर पद्धतियों से छुटकारा (उन्मूलन)।

श्रम एक महत्वपूर्ण और आवश्यक उत्पादन अंग है। विभिन्न प्रकार की नौकरियों के लिए विभिन्न प्रकार के श्रम की आवश्यकता होती है। भूमि और पूँजी के अतिरिक्त श्रम एक प्रमुख उत्पादक इकाई है। श्रम की सहायता के बिना कोई उत्पादन संभव नहीं है। जब तक लोग कड़ी मेहनत नहीं करेंगे तब तक धन का सृजन नहीं हो सकता।

ज्ञात रहे : श्रम का अर्थ : श्रम, वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के उद्देश्य से शारीरिक या मानसिक रूप से काम करने की क्षमता है। इस मामले में केवल 'मानव श्रम' को ही गणना की जाती है। पशु श्रम को श्रम नहीं माना जाता।

श्रम में वे सभी शारीरिक और मानसिक प्रयास शामिल हैं जो जीविकोपार्जन के लिए किए जाते हैं। परिणाम स्वरूप वस्तुओं या सेवाओं या दोनों का उत्पादन होता है। इसमें कोई भी ऐसा कार्य शामिल नहीं है जो कोई अपनी खुशी या अनुकंपा के लिए करता है। डॉक्टर, शिक्षक, वकील, बैंक कर्मचारी आदि वेतन के लिए की जाने वाली सेवाओं को श्रम के रूप में जाना जाता है। लेकिन एक माँ अपने बीमार बच्चे की देखभाल के लिए जो सेवा करती है, उसे श्रम नहीं माना जाता है।

ज्ञात रहे : सुख के लिए काम करने के अलावा, शरीर और मन द्वारा किए गए किसी भी भाग या पूर्ण प्रयास को श्रम कहा जाता है।

- आल्फ्रेड मार्शल

श्रम के लक्षण: श्रम की मुख्य विशेषताएँ हैं:

1. श्रम को श्रमिक से अलग नहीं किया जा सकता है।
2. किसी भी श्रम को एकत्र नहीं कर सकते हैं।
3. श्रम की आपूर्ति समय-समय पर बदलती रहती है।
4. श्रम के सामर्थ्य में भिन्नता होती है।
5. श्रम एक गतिविधि की इकाई है।
6. श्रम कम गतिशील है ।

श्रम का महत्व: श्रम एक उत्पन्नकारक उत्पादनांग है। यह केवल उत्पन्नकारक है, इसलिए इसके महत्व को ध्यान में नहीं रखा जाता है, बल्कि यह अन्य उत्पादन को गति प्रदान करता है और यह उन्हें उत्पादन उद्देश्य के लिए उपयोगी बनाता है। एक देश में श्रमशक्ति के आकार वहाँ के 15 से 60 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों की संख्या पर निर्धारित होता है। आमतौर पर 15 वर्ष से कम आयु के बच्चे और 60 वर्ष से अधिक के वरिष्ठ नागरिक उत्पादक गतिविधियों में भाग नहीं लेते हैं। 2011 में, भारत में लगभग 40 प्रतिशत श्रमशक्ति थी।

श्रम के प्रकार: श्रम को कई प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है ।

1. **काम का स्वरूप:** शारीरिक और मानसिक श्रम ।
2. **कौशल:** कुशल, अर्ध कुशल और अकुशल श्रम ।
3. **प्रशिक्षण:** औद्योगिक और प्रशासनिक श्रम ।
4. **आमदनी:** उत्पादक और अनुत्पादक श्रम ।

श्रम विभाजन (Division of Labour) :

श्रम का विभाजन उतना ही पुरातन है जितना कि स्वयं मानव जाति। प्राचीन मानव जीवन में स्त्री और पुरुष के बीच प्राथमिक श्रम-विभाजन था। यदि पुरुष शिकार और मछली पकड़ रहा था, तो महिलाएँ भोजन पकाने, कपड़े तैयार करने और बच्चों की देखभाल करने में लगी थीं।

उत्पादन प्रक्रिया के विभिन्न भागों का विभिन्न श्रमिकों या श्रमिकों के समूहों में विभाजन करने की प्रक्रिया श्रम विभाजन कहलाता है। प्रत्येक आधुनिक अर्थ व्यवस्था श्रम

विभाजन के लक्षण से युक्त होती है। वास्तव में ज्यादातर मामलों में केवल एक व्यक्ति या एक समूह एक ही उत्पादन मार्ग में लगा रहता है।

ज्ञात रहे :

एडम स्मिथ का उदाहरण: अर्थशास्त्र के जनक एडमस्मिथ ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रों की संपत्ति' (1776) में श्रम विभाजन के लाभों का उदाहरण दिया है। एक घुंड़ीदार पिन बनाने के मुख्य कार्यों में से एक व्यक्ति तार खींच रहा है, दूसरा तार सीधा कर रहा है, तीसरा उसे काट रहा है और चौथा नोक को नुकीला करता है, पाँचवा सिर को ठूसने के बराबर उकेरता है। इस तरह एडम स्मिथ पिन तैयार करने में 18 तरीकों की कार्य सूची बनाते हैं। उनके अनुसार 10 लोगों के श्रम विभाजन के जरिए एक दिन में 48000 घुंड़ीदार पिन तैयार कर सकते हैं। वे कहते हैं कि श्रम विभाजन और कुशलता के बिना प्रत्येक व्यक्ति एक दिन में केवल 10 घुंड़ीदार पिन तैयार कर सकता है।

श्रम विभाजन से लाभ:

1. **श्रम की दक्षता:** वह श्रमिक की दक्षता को बढ़ाता है।
2. **उत्पादन की गुणवत्ता:** श्रम की दक्षता बढ़ाने से न केवल उत्पादन की मात्रा बढ़ती है, बल्कि उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता भी बढ़ती है।
3. **लाभ:** उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता में वृद्धि से अधिक लाभ होता है।
4. **औसत कीमत :** श्रम विभाजन द्वारा कुल उत्पादन बढ़ने तक विनिर्मित वस्तुओं की औसत लागत घटती रहती है। फिर खरीदारों को सस्ते दामों पर सामान मिल जाता है।
5. **अनुसंधान और विकास:** श्रम विभाजन लंबी अवधि के अनुसंधान और विकास में सहायक है। यह विभिन्न प्रकार के नवीन उत्पादों के उत्पादन के लिए राह दिखाता है।

श्रम विभाजन से हानि :

1. **काम की तल्लीनता :** श्रम विभाजन के तहत एक मजदूर सालों तक एक ही काम करता है। इससे कर्मचारी गण काम में नीरसता महसूस करते हैं और ऊब जाते हैं।
2. **जिम्मेदारी की कमी:** उत्पाद की गुणवत्ता की अधिक जिम्मेदारी कोई नहीं लेता है।

3. **अधिक निर्भरता :** उत्पादन की कई प्रक्रिया अलग-अलग श्रमिकों द्वारा निभाने के कारण यह श्रमिकों के बीच अधिक निर्भरता रखता है।
4. **बेरोज़गारी:** श्रम विभाजन व्यवसाय विशेषता का मार्ग प्रशस्त करता है। एक कार्यकर्ता एक छोटे हिस्से के निर्माण में माहिर होता है। अगर उसे निकाल दिया जाता है, तो उसे वैसी ही नौकरी ढूँढ़नी होगी और तब तक वह बेरोजगार ही रहेगा।
5. **वर्ग संघर्ष:** श्रम विभाजन न केवल बड़े पैमाने पर उत्पादन की सुविधा देता है बल्कि उत्पादकों को सबसे अधिक लाभ कमाने में भी मदद करता है। उत्पादक श्रमिकों को कम मजदूरी देकर खुद अमीर बनते हैं। यह समाज को वहाँ स्थित और बाहर के लोगों में वर्गीकृत (अमीर और गरीब) करता है।

श्रम का लिंग आयाम (Gender dimension of labour)

देश की श्रमशक्ति में ग्रामीण भागों में लगभग 31 प्रतिशत और नगर प्रदेश में 20 प्रतिशत महिलाएँ हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाओं की श्रमशक्ति का प्रतिशत कम है, लेकिन हाल ही में देश में महिला श्रमशक्ति का प्रमाण अधिक हो रहा है। किसी देश के विकास और अभिवृद्धि में महिलाएँ पुरुषों के समान ही महत्व पाती हैं। वे आर्थिक प्रगति के साथ शक्तिशाली भारत की शक्ति के रूप में उभर रही हैं। दुर्भाग्यवश, भारत में महिला श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति उत्तम नहीं रही है। समाज में महिलाओं का किसी न किसी रूप में शोषण किया जा रहा है।



विभिन्न क्षेत्र में महिलाएँ

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 587 मिलियन महिलाएँ हैं। जैसे-जैसे देश में लैंगिक भेदभाव और अधिक लैंगिक असमानता मौजूद है। लिंग संबंधी चिंताएँ महत्वपूर्ण होती जा रही हैं। सरकार ने आय व्यय में लिंग संबंधी आय-व्यय को प्रस्ताव करने के लिए निर्धारित किया।

लैंगिक भेदभाव: लैंगिक भेदभाव शब्द का प्रयोग महिलाओं के आर्थिक पिछड़ेपन और अवसर से वंचित होने की स्थिति को सूचित करने के लिए उपयोग किया जाता है। महिलाओं को पुरुष के समान स्थान और अवसर न मिलने पर उसे 'लैंगिक असमानता' कहते हैं।

भारत में पुरुषों और महिलाओं के बीच व्यापक असमानता है। जीवन के सभी स्तरों पर महिलाओं के साथ असमानता का व्यवहार किया जा रहा है। ये हैं: असमान लिंगानुपात, महिला साक्षरता दर में कमी, महिला कार्य भागीदारी दर में कमी, कम आर्थिक गतिविधि दर, पुरुष कर्मचारियों की तुलना में सरकार के उन्नत पदों (आईएएस, आईपीएस और आईएफएस) में महिलाओं की कम भागीदारी, विधानसभा और लोकसभा में महिला सदस्य की संख्याओं में बहुत कमी।

घर के अंदर और कार्यस्थल पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा अभी भी जारी है। बाल्य विवाह और कम उम्र में गर्भधारण कम हुआ है लेकिन पूरी तरह से बंद नहीं हुआ है।

पुरुषों की तुलना में महिलाएँ अधिक काम का बोझ उठाती हैं। वह घर के अधिकांश कामों में ज्यादा काम के लिए जिम्मेदारी है। साथ ही उनके श्रम बाजार में प्रवेश करने से अधिक बोझ हो रहा है। यह दो तरफ काम आंकड़ों में नहीं बल्कि सामाजिक नीति निरूपण में भी नहीं पहचाना जाता है।

उत्पादक श्रम : जो श्रम तुष्टिगुण की सृष्टि करता है या आय उत्पन्न करता है, वह 'उत्पादक श्रम' कहलाता है। समाज की घातक गतिविधि को उत्पादक श्रम नहीं माना जाता है। क्योंकि वे दूसरों की संपत्ति लूटने का प्रयास करते हैं। एडम स्मिथ के अनुसार - जो श्रम भौतिक वस्तुओं या संपत्ति के उत्पादन में आगे आता है वही उत्पादक श्रम है।

पुनरुत्पादन श्रम: पुनरुत्पादन श्रम घर पर ही संचालित करने की क्रिया है। इसे पारिवारिक श्रम भी कहते हैं। यह अवैतनिक कार्य है, जो महिलाएँ घर पर करती हैं। बच्चों को जन्म देना और उनका पालन-पोषण करना, स्वच्छता बनाए रखना और भोजन पकाना आदि पुनरुत्पादन श्रम के लिए उदाहरण हैं। पुनरुत्पादन श्रम महिलाओं द्वारा निभानेवाला श्रम कहा जाता है। इसे पुरुषों और महिलाओं के बीच की असमानता के साथ-साथ पुरुषों द्वारा महिलाओं के शोषण का आधार माना जाता है। यह पुरुष प्रधानता, अशिक्षा, अज्ञानता और अंधविश्वास द्वारा समर्थित है।

बंधुआ मजदूरों का उन्मूलन : जमींदार के घर में एक निश्चित दाम को, एक निश्चित अवधि तक या प्राप्त ऋण वापस करने तक काम करने के लिए प्रतिबद्ध होता है, वह

बंधुआ मजदूर कहलाता है। वह कर्ज के पैसे के लिए स्वयं जमींदार के यहाँ गिरवी रखता है। जमींदार कम मजदूरी देकर, अधिक काम लेने के द्वारा श्रमिकों का शोषण करते हैं। जो गुलामी का दूसरा रूप है। भारत सरकार ने 1976 में बंधुआ मजदूर पद्धति को समाप्त कर दिया है। जबकि यह सामाजिक बुराई कम हो गई है, देश के कुछ भागों में अभी भी जीवित है।

बाल श्रम का उन्मूलन: यदि 14 वर्ष से कम उम्रवाला बच्चा मजदूरी के लिए काम कर रहा है, तो इसे बाल श्रम कहा जाता है। भारत में यह एक गंभीर समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 90 प्रतिशत बच्चे कृषि और कृषि संबंधित गतिविधियों में काम कर रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में वे छोटे उद्योगों, दियासलाई उद्यम, गैरेज, होटल और व्यावहारिक संस्थाओं में काम कर रहे हैं। यह बच्चों को शिक्षा से वंचित करता है। बच्चों के स्वास्थ्य और बच्चों के भविष्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। भारत सरकार के 1986 के बाल श्रम निषेध अधिनियम द्वारा 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को जोखिम वाले उद्योगों में रोजगार की नियुक्ति पर प्रतिबंध लगाया है।

उद्योग: लोगों का अपने जीवन निर्वाह के लिए एक क्रमबद्ध आय अर्जित करने के कई तरीके के उत्पादक गतिविधियों में कार्य करने का वातावरण 'उद्योग' है।

बेरोजगारी : काम करने की आयु, सामर्थ्य, रुचि योग्यता होने पर भी रोजगारी न मिलने की स्थिति।

भारत में बेरोजगारों की संख्या बढ़ती जा रही है। इनमें शिक्षित, कुशल, ग्रामीण और शहरी लोग शामिल हैं।

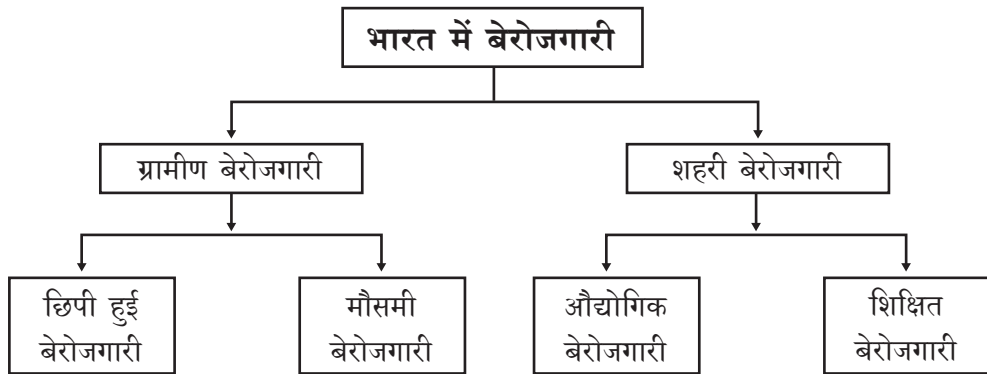
युवा बेरोजगारी: 15-30 वर्ष की आयु के लोगों की बेरोजगारी को युवा बेरोजगारी कहा जाता है। यह ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पाया जाता है। आमतौर पर उनमें देखा जाता है जो सफेदपोश उद्योग (बिना दैहिक श्रम उद्योग) (white colour job) की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ज्ञात रहें -

कुल श्रम शक्ति - कार्यानिरत श्रम (कार्य शक्ति)
= बेरोजगार

Labour force - workforce = Unemployment.

बेरोजगारी के प्रकार:



ग्रामीण बेरोजगारी के प्रकार-

1. छिपी हुई बेरोजगारी: अपेक्षित से अधिक जनशक्ति और कई श्रमिकों की सीमांत उत्पादकता शून्य युक्त बेरोजगार का वातावरण है। इसलिए यदि अतिरिक्त श्रमिकों को हटा भी दिया जाए, तो भी कुल उत्पादन में कमी नहीं होगी। इसे श्रम का आधा उद्योग जाना जाता है। उदाहरण के लिए - मान लीजिए कि चार लोग एक सुव्यवस्थित परिवार के खेत में काम कर रहे हैं, उसी भूमि के लिए और दो मजदूरों को काम पर रखा जाता है। कुल उत्पाद में कोई बदलाव नहीं होता है, तो दोनों मजदूर छिपे हुए बेरोजगार हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी भारत जैसे विकासशील देशों के ग्रामीण क्षेत्र की एक सामान्य विशेषता है। संक्षेप में कहें तो लोगों का अत्यधिक तनाव, छिपी हुई बेरोजगारी की ओर ले जाता है।

2. मौसमी बेरोजगारी: कृषि और कुछ उद्योगों में व्यवसाय ऋतु संबंधित होते हैं। वे वर्ष में केवल एक निश्चित ऋतु में उद्योग देते हैं। जो लोग इस प्रकार के कार्य या गतिविधि में लगे हुए हैं उन्हें शेष मौसम में बेरोजगार रहना होगा। यह मौसमी बेरोजगारी के रूप में जाना जाता है।

शहरी बेरोजगारी के प्रकार :

1. औद्योगिक बेरोजगारी: यदि कोई व्यक्ति औद्योगिक क्षेत्र में परिवर्तन के कारण एक निश्चित अवधि के लिए बेरोजगार है, तो उस स्थिति को औद्योगिक बेरोजगारी कहा जाता है ।

उदाहरण : आज जो गाँव के लोग काम के लिए शहरों की ओर अप्रवासन करते हैं, वे प्रशिक्षण और कौशलों की कमी के कारण नौकरी पाने में असफल हो जाते हैं ।

2. शिक्षित बेरोजगारी: शिक्षित लोग काम करने के इच्छुक होते हैं, लेकिन उन्हें नौकरी नहीं मिल पाती है, उसे शिक्षित बेरोजगारी कहती हैं ।

अभ्यास

I. रिक्त स्थान को उपयुक्त शब्दों से भरिए:

- 1) एडमस्मिथ का प्रमुख ग्रंथ _____ है ।
- 2) बंधुआ कार्मिक उन्मूलन अधिनियम _____ वर्ष लागू हुआ ।
- 3) जब श्रम का सीमांत उत्पादन शून्य होता है, तो इसे _____ कहा जाता है।
- 4) श्रम विभाजन को _____ बढ़ाता है।
- 5) बाल श्रम उन्मूलन अधिनियम के कार्यान्वयन का वर्ष _____ है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों की चर्चा समूह में कीजिए और उत्तर दीजिए :-

- 6) श्रम-विभाजन क्या है?
- 7) बाल-श्रम क्या है?
- 8) बेरोजगारी को परिभाषित करें।
- 9) श्रम विभाजन के लाभों की व्याख्या कीजिए।
- 10) श्रम विभाजन की हानि की सूची बनाइए ।
- 11) उत्पादक और अनुत्पादक श्रम के अर्थों की सूची बनाइए।
- 12) बेरोजगारी के प्रकारों की सूची बनाइए।
- 13) छिपी हुई बेरोजगारी और मौसमी बेरोजगारी में अंतर को पहचानें।
- 14) औद्योगिक बेरोजगारी शिक्षित बेरोजगारी से किस प्रकार भिन्न है ?

III. गतिविधि :

- 1) एक उद्यम स्थल में भेंट कीजिए। वहाँ के श्रम विभाजन का वास्तविक अनुभव उल्लेखित कर एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

IV. परियोजनाएँ :

- 1) विभिन्न बेरोजगारी पर एक परि योजना योजना तैयार करके प्रस्तुत भारत में उसका स्थान बताइए।
- 2) भारत के लिंग आयाम पर एक रिपोर्ट लिखिए।

व्यावहारिक अध्ययन

अध्याय - 33

बाजार प्रबंधन



इस अध्याय में निम्नलिखित अंशों को समते हैं :

- बाजार - अर्थ और प्रकार।
- बाजार व्यवस्था - अर्थ कार्य और महत्व।
- बाजार प्रणाली का मिश्रण - उत्पाद, मूल्य, स्थान, प्रवर्तन।
- निर्माता - बिचौलिये (मध्यवर्ती) - ग्राहक।
- उपभोक्ताओं के अधिकार और उपभोक्ताओं के मंच।

बाजार का अर्थ - बाजार शब्द लैटिन भाषा के मर्कटस शब्द से आया है। जिसका अर्थ है व्यापार या व्यवसाय। सामान्य अर्थ में बाजार-बेचनेवाले और खरीदनेवाले एक दूसरे से मिलकर, बिक्री और खरीद की प्रक्रिया को करवाने के लिए, अर्थात् वस्तु विनिमय और खरीदने का स्थान है।

बाजारों के प्रकार - बाजारों को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जाता है:

1. भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर:

स्थानीय बाजार : सामान्य रूप से एक स्थानीय क्षेत्र में ही, वस्तुओं को विक्रय और क्रय की प्रक्रिया का संचालन करते हैं।

प्रादेशिक बाजार : ये बाजार एक क्षेत्र तक सीमित हैं।

राष्ट्रीय बाजार : इस प्रकार के बाजारों में एक देश के अंतर्गत बेचने और खरीदने के लेनदेन होते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय बाजार : इन बाजारों में बेचने तथा खरीदने के लेन-देन, कई देशों के बीच में होते हैं।

2) माल के आधार पर :

माल का बाजार : ये बाजार विभिन्न प्रकार की वस्तुओं जैसे कच्चे माल, तैयार माल, पूजीगत माल की खरीदी और बिक्री का काम करते हैं।

वित्तीय बाजार : ये बाजार व्यवसायिक संस्थानों के लिए आवश्यक वित्त-पोषण के लिए खरीदने और बेचने के लेन-देन लिए विशेष रूप से स्थापित किये गये हैं।
उदाहरण- शेयर बाजार, उत्तोलक (लेन-देन) बाजार।

पूँजी बाजार : यह एक अनूठा बाजार है जो व्यावसायिक संस्थाओं को दीर्घकालिक ऋण प्रदान करता है। ये आमतौर पर वित्तीय संस्थान होते हैं। **जैसे:** शेयर बाजार

3) संपर्क स्थान के आधार पर (On the basis of Link) :

प्राथमिक बाजार : इस प्रकार के बाजारों में, निर्माता अपना माल थोक विक्रेताओं को बेचते (मुख्य रूप से कृषि उत्पादन) हैं।

द्वितीयक बाजार : इस प्रकार के बाजारों में थोक व्यापारी अपना माल (जिला) खुदरे व्यापारियों को बेचते हैं।

अंतिम बाजार : इस प्रकार के बाजारों में, जिला विक्रेता, अंत में ग्राहकों को बेचते हैं।

4) व्यवहार के प्रमाण के आधार पर :

थोक बाजार : इन बाजारों में निर्माता थोक विक्रेताओं को बड़ी मात्रा में माल बेचते हैं।

खुदरा बाजार : इस प्रकार के बाजारों में सामान कम संख्याओं में ग्राहकों को बेचा जाता है।

5) लेन-देन विशेषता के आधार पर:

हाजिर बाजार : इस बाजार में विक्रेता वस्तुओं को उसी स्थिति में, उसी जगह पर खरीदनेवालों को बेचते हैं।

भविष्य बाजार : यहाँ तुरंत वस्तुओं का वितरण नहीं होता। अगले समय के लिए बिक्री और खरीदने के अनुबंध होंगे।

6) चीजों के स्वरूप के आधार पर:

उपभोक्ता बाजार: यहाँ पर ग्राहक वस्तुओं को निजी उपयोग के लिए खरीदते हैं।

उत्पादक बाजार: यहाँ वस्तुओं को उत्पादन प्रक्रिया के लिए बेचा जाता है।

7) प्रतिबंधन के आधार पर :

प्रतिबंधन बाजार : बेचना और खरीदना वैधानिक प्रावधानों द्वारा नियंत्रित होता है।

अप्रतिबंधित या मुक्त बाजार : यहाँ लेनदेन के लिए कोई नियमों के अनुसार नियंत्रण नहीं है। लेन देन स्वतंत्र रूप से होता है।

8) संप्रदायिक और असंप्रदायिक बाजार:

संप्रदायिक बाजार : ये पुराने जमाने के बाजार हैं। कुछ पूर्व निर्धारित निर्णयों से वस्तुएँ अथवा सेवाएँ विनिमय होती हैं। यह एक विशिष्ट क्षेत्र तक सीमित हैं। एक स्थान, खरीदार, विक्रेता, चीजों की स्थिति, आकार आदि सभी को एक निश्चित तरीके से निपटाया जाता है।

असंप्रदायिक बाजार: इन बाजारों का कोई विशिष्ट स्थान नहीं होता है। कहीं से भी क्रय और विक्रय होता है। इसके मुख्य उदाहरण हैं:

- डाक के द्वारा बिक्री करने वाली संस्थाएँ (मेल ऑर्डर हाउस mail order houses)
- दूरभाष द्वारा खरीदना (Teleshopping)
- आभासी / यथार्थ दुकानें (virtual shops)
- सामग्री और मूल्य सूची के आधार पर बिक्री (कैटलॉग बाजार, catalogue market)
- अंतर्जाल बाजार (online market)

बाजार व्यवस्था – Marketing :

अर्थ और परिभाषा : बाजार की प्रणाली में वस्तुओं तथा सेवाएँ, निर्माताओं से ग्राहकों तक होनेवाली सभी प्रकार की गतिविधियाँ से युक्त हैं।

अमेरिकन मार्केटिंग एसोसिएशन बिक्री प्रणाली को इस प्रकार परिभाषित करता है: “बिक्री व्यवस्था निर्माताओं से उपभोक्ताओं तक या ग्राहकों तक सीधे माल और सेवाओं का परिवहन व्यावसायिक गतिविधियों का कार्य है।”

बाजार प्रणाली भौतिक स्थिति में वस्तुओं और सेवाओं को ग्राहकों के लिए बाँटने की गतिविधि के अलावा ग्राहकों को निर्देशित बाजार व्यवस्था है।

बाजार व्यवस्थाओं के कार्य:

1. क्रय और संयोजना/इकट्ठा करना (buying assembly)
 2. बेचना या विक्रय (selling)
 3. परिवहन (transportation)
 4. संग्रह और भंडार (storage and warehousing)
 5. विपणन/बाजार अनुसंधान (Market research)
 6. मानकीकरण (standardisation)
 7. श्रेणीकरण (grading)
 8. ब्रैंडिंग / मुद्रित करना (branding)
 9. बीमा (Insurance)
-
- 1) **क्रय और संयोजन:** क्रय का अर्थ है निर्माता द्वारा उत्पादन के लिए सामानों को खरीदना, या मध्यस्थ पुनर्विक्रय के लिए खरीदते हैं। लेकिन उपभोक्त उपभोग के लिए खरीदारी नहीं करता है। खरीदी गई वस्तुओं का संचय, वस्तुओं की खरीद के बाद शुरू होता है।
 - 2) **बाजार:** चीजों के विक्रेता, खरीदने वालों से लाभ के लिए स्थानांतरण करना ही है।
 - 3) **परिवहन :** परिवहन, स्थान और समय का उपयोग करता है और वस्तुओं का मूल्य बढ़ाता है।
 - 4) **संग्रह और भंडार:** संग्रहण माल का संग्रह करता है। यह कार्य भंडार द्वारा किया जाता है।
 - 5) **बाजार अनुसंधान :** यह प्रणाली बाजार की स्थितियों के बारे में जानकारी का संग्रह करती है। यह ग्राहकों की संख्या, उनके आवास, उनकी ज़रूरतों, क्रय सामर्थ्य, प्राथमिकताओं और क्रय की प्रेरणाओं के बारे में अन्वेषण और जानकारी संग्रह करने की प्रणाली है।

- 6) **मानकीकरण** : मानकीकरण विनिर्मित वस्तुओं की उनके भौतिक गुणों जैसे समरूपता, आर्द्रता और गुणवत्ता के अनुसार विभाजित किया गया है। यह चीजें बेचना और खरीदना आसान बनाता है।
- 7) **श्रेणीकरण** : श्रेणीकरण पूर्व-निर्धारित मात्रा के आधार पर वस्तुओं को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत करने की प्रक्रिया है।
- 8) **ब्रैंडिंग/ ठप्पा या मोहर लगाना** : मोहर लगाना माल के विपणन (व्यापार) का एक साधन है। माल की छाप से सामग्री की ख्याति बढ़ती (Good will) है और विक्रेता को मान्यता दिलाती है। उदाहरण: रीबॉक जूते, कोलगेट पेस्ट, रिन सोप, पार्करपेन आदि, व्यापार चिह्न को कानून के अनुसार पंजीकृत होना चाहिए। इसके दुरुपयोग के प्रति कानून सुरक्षा प्रदान करती है। व्यापार मुद्रा पंजीकृत होने पर प्रत्येक डिब्बे या उत्पादन पर ® वर्ण को दर्ज किया जाता है।
- 9) **बीमा**: जब माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है, गोदामों में संग्रहीत किया जाता है तो नष्ट होने का जोखिम होता है। इनसे बचने के लिए सामान्य बीमा कंपनियाँ सामग्रियों पर बीमा करती हैं। बीमावाली सामग्रियाँ नष्ट होने पर बीमा कंपनियाँ नुकसान की भरपाई करती हैं।

विपणन व्यवस्था का महत्व (Importance of Marketing) :

एक देश के आर्थिक विकास में विपणन व्यवस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **जीवन के स्तर का बढ़ाव** : कई प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता से लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि होती है।
- **ग्राहक की इच्छाओं की पूर्ति**: उपभोक्ताओं को नए प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का उपयोग करने का अवसर प्राप्त होता है। इससे ग्राहक सीधे उनकी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम बनता है।
- **नौकरी के अवसर**: बाजार प्रक्रियाओं में कई संस्थाएँ रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। उदाहरण: निर्माता, थोक-व्यापारी, खुदरा विक्रेता, संचार प्रणाली, बैंक, बीमा कंपनियाँ, आपूर्ति श्रृंखला, इन सभी संस्थाओं में रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

- **संसाधनों की उपयोगिता :** विपणन शास्त्र की विविध गतिविधियाँ देश के संसाधनों का वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए उपयोग करती हैं। इनसे ग्राहकों की संतुष्टि बढ़ती है।
- **अंतर्राष्ट्रीय बाजार:** अंतरराष्ट्रीय बाजार के कारण विदेशी मुद्राओं के अलावा देशों के बीच अच्छे संबंधों की वृद्धि होती है।
- **आर्थिक विकास:** संसाधनों को एक योजना में लगाने से कई रोजगारों के अवसर मिल सकते हैं। इससे लोगों को अपने जीवन स्तर और आय की मात्रा बढ़ाने के साथ-साथ देश का विकास भी संभव होता है।

विपणन मिश्रण (Marketing Mix) :

अर्थ: विपणन शास्त्र की गतिविधियों को व्यक्त करना, कार्यान्वयन करना, और एकीकरण बाजार मिश्रण कहते हैं।

सर्वप्रथम बाजार मिश्रण का परिचय कराने वाले व्यक्ति अमेरीका के हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के प्रो. एन एच बोर्डेन थे। इनके अनुसार, बाजार मिश्रण दो सूचियों से युक्त है।

- विपणन शास्त्र के तत्वों का विभाजन।
- विपणन शास्त्र के सभी कार्यक्रमों को प्रभावित करने वाली गतिविधियों की सूची तैयार करना।

बाजार मिश्रण के मूलतत्व :

1) उत्पादन का मिश्रण 2) मूल्य का मिश्रण 3) संवर्धन का मिश्रण 4) स्थान का मिश्रण

1) उत्पादन मिश्रण : उत्पादन का मिश्रण बेची गई वस्तुओं और सेवाओं के बारे में विशिष्ट विशेषताओं के साथ विभिन्न विकल्पों का संयोजन है। निर्माता उच्च गुणवत्ता वाले सामान का उत्पादन करते हैं। उनका वर्गीकरण, उत्पादनों पर निशान लगाना और आकर्षक रीति से पैकिंग सेवाओं का मिश्रण इसमें शामिल है।

2) मूल्य मिश्रण : मूल्य जो ग्राहक को उस सामान या सेवाओं को पाने या स्थानांतरित करने के लिए देने वाला मूल्य है। सब से पहले निर्माता को अंतिम निर्णय लेने से पूर्व वस्तु या सेवा का मूल्य, छूट दिखाना चाहिए। अन्य कोई व्यय को मूल्य में जोड़ना

चाहिए। बिक्री मूल्य दिखाने की समयावधि और कीमत का भुगतान कैसे करें? इन बातों पर ध्यान रखने की आवश्यकता है।

3) स्थान मिश्रण : इस में एक संस्था मालों को बाजार में मिलने तक की विभिन्न क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। इसमें भौतिक वितरण के सभी मार्ग हैं। स्थान को उनकी इच्छानुसार परिवहन करने की प्रक्रिया शामिल है।

4) संवर्धन मिश्रण : इसको संपर्क संदेश का मिश्रण कहा जाता है। इसमें विक्रेता द्वारा वस्तुओं का संभावित ग्राहक उनको खरीदने तक यह प्रक्रिया चलती रहती है। इस मिश्रण में सामग्री पर विज्ञापन, बिक्री संवर्धन, प्रचार आदि शामिल हैं। सामान्य शब्दों में, संवर्धन मिश्रण में उपभोक्ता के लिए चीजें खरीदने का आग्रह भी शामिल होता है।

बाजार मिश्रण का महत्व :

- 1) व्यावसायिक संगठन की बिक्री और मुनाफे में मदद करता है ।
- 2) व्यावसायिक संगठन और ग्राहक के बीच की संपर्क कड़ी है ।
- 3) ग्राहकों की ज़रूरतों को पूरा करता है ।

वस्तुओं के वितरण में उत्पादक या निर्माता, दलाल और उपभोक्ताओं की भूमिका (Role of Producers-Middle Men and Consumers in the Exchange of Goods)

बिक्री प्रणाली की प्रक्रिया में माल निर्माता से उपभोक्ता तक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामग्री वितरण के दो मार्ग हैं -

ए) प्रत्यक्ष बिक्री

बी) अप्रत्यक्ष (परोक्ष) बिक्री

ए) सीधा या प्रत्यक्ष बिक्री: इस प्रकार की बिक्री में, निर्माता से सीधे उपभोक्ताओं को माल बेचा जाता है।

उदाहरण: बाटा जूते, रेमंड कपड़ों की दुकानें आदि।

बी) अप्रत्यक्ष (परोक्ष) बिक्री में माल का वितरण निम्नलिखित ढंग में बाँटी जाती है।

- 1) निर्माता → खुदरा → उपभोक्ता
- 2) निर्माता → थोक विक्रेता → खुदरा विक्रेता → उपभोक्ता
- 3) निर्माता → एजेंट → थोक व्यापारी → खुदरा विक्रेता → उपभोक्ता
- 4) निर्माता → थोक व्यापारी → उपभोक्ता (उपभोक्ता उपयोगकर्ता कहलाते हैं)

1) **निर्माता → खुदरा विक्रेता → उपभोक्ता** : इस प्रकार की बिक्री प्रक्रिया में, निर्माता खुदरा विक्रेताओं को सामान बेचते हैं। खुदरा विक्रेता सीधे उपभोक्ताओं को सामान बेचते हैं। आमतौर पर इस प्रकार के वितरण क्रम में अधिक मूल्यवान और अधिक टिकाऊ सामान शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए, केवल खुदरा विक्रेता ही मध्यस्थ होता है। जैसे तैयार वस्त्र और मोटर वाहन के सहायक उपकरण।

2) **निर्माता → थोक व्यापारी → खुदरा विक्रेता → उपभोक्ता**: इस प्रकार की बिक्री प्रक्रिया में, निर्माता थोक विक्रेताओं को बड़ी मात्रा में माल बेचते हैं। थोक विक्रेता खुदरा विक्रेताओं को कम बेचते हैं। अंत में खुदरा विक्रेता उपभोक्ताओं को उनकी आवश्यकता के अनुरूप बेचते हैं।

उदाहरण - दैनिक वस्तुएँ, औषधियाँ, लोहे के सामान, लेखन की सामग्रियाँ, आदि यहां थोक विक्रेता या व्यापारी बिक्री प्रक्रिया में अधिक दृढ़ता से प्रेरणा देती हैं।

3) **निर्माता → एजेंट → खुदरा विक्रेता → ग्राहक**: इस बिक्री प्रक्रिया में, निर्माता एजेंटों को नियुक्त कर लेते हैं जो खुदरा विक्रेताओं के पास जाते हैं और उनको सीधे सामान बेचते हैं। बाद में खुदरा विक्रेता ग्राहकों को वस्तुओं को भेजते हैं इस तरह वाहन क्रम ने औद्योगिक उपकरण और कृषि संबंधी उपकरण की बिक्री के लिए उपयुक्त हैं।

4) **निर्माता → एजेंट → थोक विक्रेता → खुदरा विक्रेता → ग्राहक**: यह बिक्री प्रक्रिया माल का वितरण में सबसे लंबी और सबसे पूर्ण वहन मार्ग है। यहां निर्माता पहले एजेंटों को सामान बेचते हैं। ये एजेंट अपना कमीशन या लाभ जोड़कर थोक विक्रेताओं को अपना माल बेचते हैं। थोक व्यापारी अपना मुनाफा जोड़ने के लिए खुदरा विक्रेताओं को बेचते हैं। अंततः खुदरा विक्रेता अपने लाभ को जोड़कर ग्राहकों को अपना माल बेचते हैं।

माल सेवाओं के वितरण में बिचौलियों (मध्यस्थों) की भूमिका :

निर्माता किसी उत्पाद की वितरण की पहली कड़ी है और उपभोक्ता अंतिम कड़ी है। दोनों के बीच कई बिचौलिए हैं। वे निर्माताओं से चीजें खरीदते हैं और उन्हें ग्राहकों को बेचते हैं। यह अनुबंध द्वारा निर्धारित है। थोक विक्रेता और खुदरा विक्रेता माल का स्वामित्व लेते हैं। लेकिन एजेंट (मध्यस्थ) बिक्री और खरीद प्रक्रिया में अनुबंध करने से भी व्यापार वितरण में शामिल होते हैं। बिचौलियों को वितरण साधन का चयन करते समय उनकी उपलब्धि, उनके दृष्टिकोण, व्यय तथा उनकी क्षमताओं को ध्यान में रखना चाहिए। ऐसे होने पर भी ग्राहक के धोखा खाने की संभावनाएँ अधिक थीं। इसलिए ग्राहक संरक्षण अधिनियमों को लागू किया गया। इसके बारे में आगे कक्षा में अभ्यास करेंगे।

उपभोक्ता अधिकार, कार्य एवं उपभोक्ता न्यायालय :

उपभोक्ता शब्द का अर्थ : व्यक्तिगत उपयोग के लिए वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला व्यक्ति उपभोक्ता (ग्राहक) कहलाता है।

उपभोक्ता संरक्षण: उपभोक्ताओं को निर्माताओं और व्यापारियों के द्वारा होने वाले शोषण से बचाने की प्रक्रिया को उपभोक्ता संरक्षण कहते हैं। उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के अधिकार और विश्वास इसके अंतर्गत आते हैं। इन्हें उपभोक्ताओं का अधिकार कहा जाता है।

उपभोक्ता अधिकार: उपभोक्ताओं को उनकी कमियों के लिए, प्राप्त होनेवाली भरपाई के लिए हमारे देश में कई विनियमित कानून लागू किए गए हैं।

- 1) 1872 का भारतीय अनुबंध अधिनियम
- 2) 1930 का वस्तु बिक्री अधिनियम
- 3) 1952 का भारतीय मानकी संस्थान अधिनियम
- 4) 1955 का आवश्यक सामग्री अधिनियम
- 5) 1986 का उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम
- 6) 2019 का उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम

विश्व संगठन के द्वारा लागू किए गए मार्गदर्शन के अंशों के पालन के लिए, हमारी केंद्र सरकार ने 1986 का उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम पारित किया, 1987 में इसे अधिनियमित

किया। प्रस्तुत, ग्राहक संरक्षण अधिनियम 2019 लागू में है। इस अधिनियम में 1992, 1993 और 2002 में परिष्करण किया गया था।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होता है। (जम्मू और कश्मीर को छोड़कर) यह सभी वस्तुओं और सेवाओं पर लागू होता है।

अधिनियम की मुख्य विशेषताएं:

- संरक्षण का अधिकार: उपभोक्ताओं के जीवन और हितों को खतरे में डालने वाली वस्तुओं की बिक्री के प्रति संरक्षण का अधिकार।
- सूचना का अधिकार: वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता, मात्रा, ऊर्जा क्षमता, शुद्धता और मूल्यों के विरुद्ध सूचना प्राप्त करने का अधिकार।
- वस्तुओं के चयन का अधिकार : स्पर्धात्मक कीमतों में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को चुनने का अधिकार।
- वस्तुओं के बारे में सुनने का अधिकार: उपभोक्ता की इच्छाओं को सुनकर, समझकर उनको उचित रीति में परिगणना करने का अधिकार।
- शोषण के विरुद्ध भरपाई प्राप्त करने का अधिकार : उपभोक्ताओं द्वारा धोखाधड़ी के खिलाफ अधिकार प्राप्त करना।
- उपभोक्ता/ग्राहक शिक्षा का अधिकार: उपभोक्ताओं के अधिकारों की सही समझ प्राप्त करना।
- धोखाधड़ी या बेइमानी के विरोध का अधिकार
- उपभोक्ताओं का उत्तम स्वास्थ्य और भौतिक परिसर निर्माण द्वारा उनके जीवन के तरीके में सुधार का अधिकार।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम ने राष्ट्रीय स्तर में राष्ट्रीय संरक्षण मंच, राज्य स्तर भू राज्य उपभोक्ता संरक्षण मंच और जिला स्तर में उपभोक्ता संरक्षण मंडली की स्थापना हुई हैं। ये बोर्ड अपनी सीमाओं के भीतर काम करते हैं। जिलाधिकारी, जिला उपभोक्ता मंडली का अध्यक्ष हैं।

उपभोक्ता विवाद निवारण संस्थाएँ (Consumer Grievances Redressal Agencies) :

- 1) **जिला ग्राहक व्याज्य समाधान आयोग :** जिला न्यायाधीश की तरह योग्य व्यक्ति जिला मंच के अध्यक्ष होते हैं। यह मंच एक करोड़ रुपये से अधिक की ग्राहक शिकायतों पर कार्यवाही करता है। इसमें दो सदस्य हैं और उनमें से एक महिला सदस्य है।
- 2) **राज्य ग्राहक व्याज्य समाधान आयोग:** राज्य उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश या सेवारत न्यायाधीश इस आयोग के अध्यक्ष हैं। इसमें सार्वजनिक व्यवहार क्षेत्रों में क्षमता वाले दो सदस्य होते हैं। इनमें एक महिला सदस्या है। यह कमीशन एक करोड़ से दस करोड़ रुपए तक मौलिक उपभोक्ता शिकायतें लेता है। इस आयोग में एक करोड़ से दस करोड़ तक के
- 3) **राष्ट्रीय ग्राहक व्याज्य समाधान आयोग :** यह आयोग केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा अध्यक्षता करता है। यहाँ चार अन्य सदस्य हैं। इन्हें सार्वजनिक मामलों या प्रशासन में कुशल होना चाहिए। इनमें एक महिला सदस्य है। यह आयोग किसी भी ऐसी शिकायत जो दस करोड़ रुपए से अधिक मूल्य से युक्त हो, ऐसी किसी भी शिकायतों को लेकर फैसला करता है।

अभ्यास

I. इन वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों से कीजिए :

- 1) सामान बेचने वाले और खरीदने वालों के मिलने का स्थान सामान्य रूप से _____ कहलाता है।
- 2) एक भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित बाजार को _____ बाजार कहते हैं।
- 3) अधिनियम के नियंत्रण में खरीदने और बेचने के बाजार को _____ कहते हैं।
- 4) माल उत्पादन के समय से बिक्री की अवधि तक वस्तुओं को संग्रहीत रखनेवाले स्थान को _____ कहते हैं।

- 5) उपभोक्ताओं को चीजें खरीदने के लिए प्रेरित गतिविधि _____ मिश्रण के अंशों से जुड़ती है।
- 6) निर्माता द्वारा सीधे अपने उत्पाद ग्राहकों को बेचने की वस्तुओं के उदाहरण _____ हैं।
- 7) उत्पादों पर व्यापार मुद्रा के पंजीकृत होने पर _____ नामक वर्ण संकेत डिब्बों पर दर्ज होते हैं।
- 8) वस्तुओं के मानकीकरण ग्राहकों के लिए _____ वस्तुओं की श्रेष्ठता दर्शाता है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों पर समूहों में चर्चा कर, एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखिए।

- 9) एक प्रदेश के अनुसार विभाजित चार प्रकार के बाजारों के बारे में बताइए।
- 10) वित्तीय बाजार क्या हैं? ये पूंजी बाजारों से कैसे भिन्न हैं ?
- 11) उपभोक्ता बाजार और निर्माता बाजार किसे कहते हैं?
- 12) स्थानीय बाजार क्या है? यह भविष्य के बाजार से कैसे भिन्न हैं?
- 13) असंप्रदायिक बाजारों के किन्हीं चार प्रकार को बताइए।
- 14) बाजार मिश्रण क्या है?
- 15) उपभोक्ता संरक्षण क्यों आवश्यक है?
- 16) व्यापार में मुद्रा पंजीकरण का तात्पर्य क्या है?

III. निम्नलिखित प्रश्नों का समूहों में चर्चा द्वारा उत्तर आठ या दस ही वाक्यों में लिखिए।

- 17) बाजार (व्यापार) व्यवस्था का कार्य क्या हैं? किसी एक के बारे में लिखिए ।
- 18) बाजार मिश्रण की मूल बातें क्या हैं? किसी एक के बारे में लिखिए ।
- 19) बाजार व्यवस्था का क्या महत्व है? यह लोगों के जीवन स्तर को कैसे बढ़ाता है?

IV. क्रियाकलाप :

- 1) किसी दस माल पैकों का संग्रह करें। इन पैकों का विवरण निम्नलिखित सूची के आधार पर तैयार कीजिए।

क्रम संख्या	वस्तु या माल का नाम	विवरण	उत्पादन की तिथि, उपभोक्ता के उपयोग करने की अंतिम तिथि (समाप्ति की तिथि) सामग्री की अधिकतम कीमत (एम आर पी)

- 2) अखबारों में छपनेवाले उपभोक्ता के शोषण कारनामों की जानकारी को एकत्र कीजिए। और उपभोक्ता मंच इसे किस प्रकार हल करता है, इसके बारे में लिखिए।
